सिराज-ए-मुनीर

(चमकता सूर्य)

सामर्थ्यवान ख़ुदा के निशानों पर आधारित

(SIRAJ-E-MUNEER)

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

मसीह मौऊद-व-महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

SIRAJ-E-MUNEER
(in Hindi)

By
Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani[as]
The Promised Messiah and Mahdi

सिराज-ए-मुनीर
(चमकता सूर्य)
सामर्थ्यवान ख़ुदा के निशानों पर आधारित

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	: सिराज-ए-मुनीर (चमकता सूर्य)
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम
अनुवादक	: डाक्टर अन्सार अहमद, एम.ए., एम.फिल, पी एच,डी पी.जी.डी.टी., आनर्स इन अरबिक
संस्करण	: प्रथम संस्करण (हिन्दी) जुलाई 2019 ई०
संख्या	: 1000
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)

Name of book	: Siraj-E-Muneer
Author	: Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih Mou'ud W Mahdi Mahood Alaihissalam
Translator	: Docter Ansar Ahmad, M.A., M.Phil, Ph.D P.G.D.T., Hons in Arabic
Edition	: 1st Edition (Hindi) जुलाई 2019
Quantity	: 1000
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक 'सिराज-ए-मुनीर' का यह हिन्दी अनुवाद श्री डॉ० अन्सार अहमद ने किया है। अरबी पत्रों का उर्दू अनुवाद श्री मुहम्मद हमीद कौसर ने और फ़ारसी पत्रों का उर्दू अनुवाद श्री बिलाल अहंगर ने किया तत्पश्चात इन दोनों का हिन्दी अनुवाद श्री फरहत अहमद आचार्य ने किया है। इसके बाद मुकर्रम शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), मुकर्रम फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), मुकर्रम अली हसन एम. ए. मुकर्रम नसीरुल हक़ आचार्य, मुकर्रम इब्नुल मेहदी एम् ए और मुकर्रम मुहियुद्दीन फ़रीद एम् ए ने इसका रीव्यू आदि किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

पुस्तक परिचय

सिराज-ए-मुनीर

अल्लाह तआला के निशानों पर आधारित पुस्तक 'सिराजे मुनीर' मई 1897 ई० में प्रकाशित हुई। हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने इस पुस्तक में उन 37 शक्तिशाली भविष्यवाणियों का वर्णन किया है जो आप ने अल्लाह तआला से इल्हाम और वह्यी पाकर उनके घटित होने से कई वर्ष पूर्व प्रकाशित कर दी थीं। और इसमें आथम तथा लेखराम से सबंधित भविष्यवाणियों के पूरा होने का विशेष तौर पर विस्तारपूर्वक वर्णन किया है, और आप ने इस पुस्तक के अन्त में पत्रचार का भी उल्लेख किया है जो आपके और हज़रत ख़्वाजा ग़ुलाम फ़रीद साहिब आफ़ चाचड़ां शरीफ के मध्य हुआ था और हज़रत ख़्वाजा साहिब ने अपने इन पत्रों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से अत्यन्त निष्कपटता और श्रद्धा की अभिव्यक्ति की है।

ख़ाकसार

जलालुद्दीन शम्स

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिलकरीम

جَآءَ الْحَقُّ وَ زَهَقَ الْبَاطِلُ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا

بنگر اے قوم نشانہائے خداوند قدیر

چشم بکشا کہ بر چشم نشانے است کبیر

अनुवाद :- हे क़ौम शक्तिमान ख़ुदा के निशानों को देख, आंख खोल कि तेरी आंख के सामने एक महान निशान है।

رو بدو آر کہ گر او بپذیرد رُو تافت

ورنہ این روئے سیہ هست بتراز خنزیر

अनुवाद :- उसकी ओर अपना मुख कर कि यदि वह स्वीकार कर ले तो मुंह चमक उठेगा अन्यथा यह काला मुंह सुअर से भी अधिक बुरा है।

ون بتابی سر خودزاں ملک ارض و سما

گر بگیرد ز غضب پس چہ پنہ هست و ظهیر

अनुवाद :- तू पृथ्वी और आकाश के बादशाह से क्यों मुंह फेरता है। यदि उसका प्रकोप तुझे पकड़ ले तो तुझे कौन शरण और सहायता दे सकता है।

قمر و شمس و زمین و فلک و آتش و آب

همہ در قبضۂ آں یار عزیز اند اسیر

अनुवाद :- चन्द्रमा, सूर्य, पृथ्वी, आकाश, अग्नि और जल सब उस सम्मान वाले दोस्त के क़ब्ज़े में क़ैदी हैं।

قدسیان جملہ بلرزند ازان هیبت پاک

انبیا را دل و جان خون و الم دامنگیر

अनुवाद :- सब फरिश्ते उसके भय से कांपते हैं। नबियों के प्राण और दिल ख़ून हैं और भय लगा हुआ है।

جنت و دوزخ سوزندہ از دمے لرزند

تو چہ چیزی چہ ترا مرتبہ اے کِرم حقیر

अनुवाद :- स्वर्ग और जलाने वाला नर्क उसके भय से कांपते हैं हे तुच्छ कीड़े! तेरा अस्तित्व ही क्या है और तेरी प्रतिष्ठा ही क्या है।

چند این جنگ و جدل ھا بخدا خواھی کرد

توبہ کن توبہ مگر درگذرد از تقصیر

अनुवाद :- तू ख़ुदा से कब तक यह युद्ध और लड़ाई करता रहेगा। तौब: कर तौब: ताकि वह तेरी ग़लतियां क्षमा कर दे।

من اگر در نظر یار مقامے دارم

پس چہ نقصان ز نکوھیدن تو و از تکفیر

अनुवाद :- मैं यदि यार की नज़र में कोई दर्जा रखता हूँ तो तेरी गालियों और काफ़िर कहने से मुझे क्या हानि पहुँच सकती है?

آنست کہ از سوئے خدا می بارد

بد گہران است یکے ھرزہ نفیر

अनुवाद :- लानत वह होती है जो ख़ुदा की ओर से हो। अकुलिन लोगों की लानत केवल व्यर्थ शोर है।

اے برادر رہ دین است رہ بس دشوار

خاک شو خاک مگر باز کنندش اکسیر

अनुवाद :- हे भाई धर्म का मार्ग बहुत दुर्गम मार्ग है। ख़ाक हो जा ख़ाक ताकि फिर तुझे इक्सीर बना दें।

تو ھلاکی اگر از کبر بتابی سر خویش

من از و آمدم و با تو بگویم چو نذیر

अनुवाद :- यदि तू अहंकार से मुख फेरेगा तो मर जाएगा। मैं उसके पास से आया हूँ और डराने वाले के तौर पर तुझे समझाता हूँ।

آن خدائے کہ از و خلق و جھان بیخبر اند

برمن او جلوہ نمود ست گر اھلی بپذیر

अनुवाद :- वह ख़ुदा जिससे सृष्टि और लोग अनभिज्ञ हैं उसने मुझ पर चमकार की है यदि तू बुद्धिमान है तो मुझे स्वीकार कर।

तत्पश्चात् स्पष्ट हो कि इस समय मैं ख़ुदा तआला के एक भारी निशान का वर्णन करूंगा। मुबारक वे लोग जो इसे ध्यानपूर्वक पढ़ें और फिर इस से लाभ उठाएं। निस्सन्देह स्मरण रखें कि ख़ुदा झूठे को वह सम्मान नहीं देता जो उसके पवित्र नबियों और चुने हुए लोगों को दिया जाता है। मुर्दे खाने वाले झूठे का क्या अधिकार है कि आकाश उसके लिए निशान प्रकट करे और पृथ्वी उसके लिए विलक्षण चमत्कार दिखलाए। अतः हे क़ौम के बुज़ुर्गो ! और बुद्धिमानो ! तनिक ठण्डे होकर घटनाओं पर विचार करो ! क्या ये घटनाएं झूठों से मिलती हैं या सच्चों से। कभी किसी ने सुना कि झूठे के लिए आकाश पर निशान प्रकट हुए, कभी किसी ने देखा कि झूठा अपने चमत्कारों पर सच्चों पर विजयी हो सका? क्या किसी को याद है कि झूठे और झूठ गढ़ने वाले को झूठ गढ़ने के दिन से पच्चीस वर्ष तक छूट (मुहलत) दी गई जैसा कि इस बन्दे को। झूठा यों मला जाता है जैसा कि खटमल और ऐसे नष्ट किया जाता है जैसे कि एक बुलबुला। यदि झूठों और झूठ गढ़ने वालों को इतने दीर्घ समय तक छूट दी जाती और सच्चों के निशान उनके समर्थन के लिए प्रकट किए जाते तो संसार में अंधेर पड़ जाता और ख़ुदाई का कारखाना बिगड़ जाता। तो जब तुम देखो कि एक दावेदार पर बहुत शोर पड़ा और संसार उसके विरोध की ओर झुक गया और बहुत आंधियां चलीं और तूफ़ान आए परन्तु उस पर कोई पतन नहीं आया। तो तुरन्त संभल जाओ और संयम से काम लो। ऐसा न हो कि तुम ख़ुदा से लड़ने वाले ठहरो।

सच्चा तुम्हारे हाथ से कभी नहीं मरेगा और ईमानदार तुम्हारे षडयंत्रों से तबाह नहीं किया जाएगा। तुम दुर्भाग्य से बात को दूर तक मत पहुँचाओ कि तुम जितनी सख्ती करोगे वह तुम्हारी ओर ही लौटेगी और उसकी जितनी बदनामी चाहोगे वह उलट कर तुम पर ही पड़ेगी। हे अभागो ! क्या तुम्हें ख़ुदा पर भी ईमान है या नहीं। ख़ुदा तुम्हारी मनोकामनाओं को अपनी मनोकामनाओं पर क्योंकर प्राथमिक रख ले। और इस सिलसिले को जिसका अनादि काल से उस ने इरादा किया है तुम्हारे लिए कैसे तबाह कर डाले। तुम में से कौन है जो एक पागल के कहने से अपने घर को ध्वस्त कर दे, और अपने बाग़ को काट डाले और अपने

बच्चों का गला घोंट दे। अतः हे मूर्खो! और ख़ुदा की दूरदर्शिताओं से वंचित! यह क्यों कर हो कि तुम्हारी मूर्खतापूर्ण दुआएं स्वीकार होकर ख़ुदा अपने बाग़, अपने घर और अपने पोषित को बर्बाद कर डाले। होश करो और कान रख कर सुनो! कि आकाश क्या कह रहा है। पृथ्वी के समयों और मौसमों को पहचानो ताकि तुम्हारा भला हो और ताकि तुम सूखे वृक्ष के समान काटे न जाओ और तुम्हारे जीवन के दिन बहुत हों। व्यर्थ आरोपों को छोड़ दो, अकारण की मीन - मेख से बचो और पापपूर्ण विचारों से स्वयं को बचाओ, मुझ पर झूठे आरोप मत लगाओ कि हक़ीक़ी (वास्तविक) नुबुव्वत का दावा किया। क्या तुमने नहीं पढ़ा कि मुहद्दिस भी एक मुर्सल (भेजा हुआ) होता है। क्या ولا محدث का पाठ याद नहीं रहा। फिर यह कैसी व्यर्थ मीन-मेख है कि मुर्सल होने का दावा किया है। हे नादानो! भला बताओ कि जो भेजा गया है उसे अरबी में मुर्सल या रसूल ही कहेंगे या और कुछ कहेंगे। परन्तु स्मरण रखो कि ख़ुदा के इल्हाम में यहां वास्तविक मायने अभिप्राय नहीं जो शरीअत वाले से सबंध रखते हैं अपितु जो मामूर किया जाता है वह मुर्सल ही होता है। यह सच है कि वह इल्हाम जो ख़ुदा ने अपने इस बन्दे पर उतारा और उसमें इस बन्दे के बारे में नबी, रसूल और मुर्सल के शब्द बहुतात के साथ मौजूद हैं। अतः यह वास्तविक मायनों पर चरितार्थ नहीं हैं وَلِكُلٍّ اَنْ يُّصْطَلَحَ तो ख़ुदा की यह पारिभाषिक शब्दावली है जो उसने ऐसे शब्द प्रयोग किए।

हम इस बात के क़ायल और इक़रारी हैं कि नुबुव्वत के हक़ीक़ी (वास्तविक) मायनों के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद न कोई नया नबी आ सकता है और न पुराना । क़ुर्आन ऐसे नबियों के प्रादुर्भाव से बाधक है परन्तु मजाज़ी (अवास्तविक) मायनों के अनुसार ख़ुदा का अधिकार है कि किसी मुल्हम को नबी या मुर्सल के शब्द से याद करे। क्या तुमने वे हदीसें नहीं पढ़ीं जिनमें रसूलुल्लाह आया है। अरब के लोग अब तक इन्सान के भेजे हुए को भी रसूल कहते हैं। फिर ख़ुदा को क्यों ये अवैध हो गया कि मुर्सल का शब्द मजाज़ी (अवास्तविक) मायनों पर भी प्रयोग करे।

क्या क़ुर्आन में से فَقَالُوْٓا اِنَّآ اِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ (यासीन-15) भी याद नहीं रहा। न्यायपूर्वक देखो क्या काफ़िर ठहराने का यही कारण है। यदि ख़ुदा के सामने पूछे जाओ तो बताओ मेरे काफ़िर ठहराने के लिए तुम्हारे हाथ में कौन सा प्रमाण है? बार-बार कहता हूँ कि ये रसूल, मुर्सल और नबी के शब्द मेरे इल्हाम में मेरे बारे में निस्सन्देह ख़ुदा तआला की ओर से हैं परन्तु अपने वास्तविक अर्थों पर चरितार्थ नहीं हैं। और जैसे यह चरितार्थ नहीं ऐसे ही वह नबी करके पुकारना जो हदीसों में मसीह मौऊद के लिए आया है वह भी अपने वास्तविक अर्थों पर चरितार्थ नहीं पाता। यह वह ज्ञान है जो ख़ुदा तआला ने मुझे दिया है, जिसने समझना हो समझ ले। मुझ पर यही खोला गया है कि वास्तविक नुबुव्वत के दरवाज़े ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद पूर्णतया बन्द हैं। अब न कोई नया नबी वास्तविक अर्थों की दृष्टि से आ सकता है और न कोई पुराना नबी। परन्तु हमारे अन्यायी विरोधी ख़त्मे नुबुव्वत के दरवाज़ों को पूर्ण रूप से बन्द नहीं समझते। अपितु उनके नज़दीक इस्राईली मसीह नबी के वापस आने के लिए एक खिड़की खुली है। तो जब क़ुर्आन के बाद भी एक वास्तविक नबी आ गया और नुबुव्वत की वह्यी का सिलसिला आरंभ हुआ तो कहो कि ख़त्मे नुबुव्वत क्योंकर और कैसा हुआ? क्या नबी की वह्यी नुबुव्वत की वह्यी कहलाएगी या कुछ और? क्या यह आस्था है कि तुम्हारा काल्पनिक मसीह वह्यी से पूर्ण रूप से वंचित होकर आएगा? तौबः करो और ख़ुदा से डरो और हद से मत बढ़ो यदि हृदय कठोर नहीं हो गए तो इतनी निर्भयता क्यों है कि अकारण ऐसे मनुष्य को काफ़िर बनाया जाता है जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वास्तविक अर्थों की दृष्टि से ख़ातमुल अंबिया समझता है और क़ुर्आन को ख़ातमुल कुतुब स्वीकार करता है, समस्त नबियों पर ईमान लाता है और अहले क़िब्लः है और शरीअत के हलाल को हलाल और हराम को हराम समझता है।

हे झूठ गढ़ने वाले लोगो! मैंने किसी नबी का अनादर नहीं किया, मैंने किसी सही आस्था के विरुद्ध नहीं कहा। किन्तु यदि तुम स्वयं न समझो तो मैं क्या करूं। तुम तो मानते हो कि आंशिक श्रेष्ठता तुच्छ शहीद को एक बड़े नबी

पर हो सकती है। और यह सच है कि मैं स्वयं पर ख़ुदा की कृपा मसीह से कम नहीं देखता परन्तु यह कुफ्र नहीं। यह ख़ुदा की नेमत का धन्यवाद है। तुम ख़ुदा के रहस्यों को नहीं जानते, इसलिए कुफ्र समझते हो। उसे क्या कहोगे जो कह गया هو افضل من بعض الانبياء यदि मैं तुम्हारी दृष्टि में काफ़िर हूँ तो ऐसा ही काफ़िर जैसा कि इब्ने मरयम यहूदी फ़क़ीहों (धर्मशास्त्र विदों) की दृष्टि में काफ़िर था। मेरे पास ख़ुदा की कृपा की इससे भी बढ़कर बातें हैं परन्तु तुम उनको सहन नहीं कर सकते। खूब स्मरण रखो कि मुझे काफ़िर कहना **आसान** नहीं। तुमने एक भारी बोझ सर पर उठाया है और तुम से इन सब बातों का उत्तर पूछा जाएगा!!

हे अभागे लोगो! तुम कहां गिरे, कौन से गुप्त दुष्कर्म थे जो तुम्हारे सामने आ गए। यदि तुम्हारे अन्दर एक कण भी नेकी होती तो ख़ुदा तुम्हें नष्ट न करता। अभी कुछ थोड़ा समय है, और बहुत सा पुण्य खो चुके हो, रुक जाओ। क्या ख़ुदा से उस मूर्ख के समान लड़ाई करोगे जो शक्तिशाली के सामने से नहीं हट जाता यहां तक कि मार से पीसा जाता और कुचला जाता है और अन्त में हड्डियां चूर होकर और मुर्दा सा बनकर पृथ्वी पर गिर पड़ता है। यहूदियों ने लड़ाई से क्या लिया और तुम क्या लोगे?هذا و بعد الموت نحن نخاصم सूफ़ियों ने भी मानवीय ख़ूबियों का बहुत कुछ इक़रार किया था कि मनुष्य कहां तक पहुँचता है। आज वे भी सो गए। हो बुद्धिमानो ! मेरे कार्यों से मुझे पहचानो। यदि मुझ से वे कार्य और वे निशान प्रकट नहीं होते जो ख़ुदा के समर्थन प्राप्त व्यक्ति से प्रकट होने चाहिएं तो तुम मुझे स्वीकार मत करो। परन्तु यदि प्रकट होते हैं तो स्वयं को जानबूझ कर मौत के गढ़े में मत डालो, कुधारणाएं छोड़ो, बुरे विचारों से रुक जाओ कि एक पवित्र व्यक्ति के अपमान के कारण आकाश लाल हो रहा है★और तुम

★ **हाशिया-** एक इमाम के प्रादुर्भाव के लिए जो आकाश और पृथ्वी गवाही दे रहे हैं इस का यह अर्थ नहीं है कि कोई ख़ूनी महदी या गाज़ी मसीह प्रकट होगा। यह समस्त बातें अज्ञानता के विचार हैं अपितु हम मामूर (आदेशित) हैं कि आकाशीय निशानों और बौद्धिक तर्कों के साथ इन्कार करने वालों को शर्मिन्दा करें और विलक्षण निशानों के साथ ईमानों को दिलों में उतारें। इसी से।

नहीं देखते। फ़रिश्तों की आँखों से ख़ून टपक रहा है और तुम्हें दिखाई नहीं देता। ख़ुदा अपने **प्रताप** में है और दर-व-दीवार **कांप** रहे हैं। कहां है वह बुद्धि जो समझ सकती है, कहां हैं वे आँखें जो समयों को पहचानती हैं? आकाश पर एक आदेश लिखा गया। क्या तुम उस से नाराज़ हो? क्या तुम ख़ुदा तआला से पूछोगे कि तूने ऐसा क्यों किया? हे नादान इन्सान! रुक जा कि तड़ित (गिरने वाली बिजली) के सामने खड़ा होना तेरे लिए अच्छा नहीं!!!

अपने अत्याचारों को देखो और अपनी धृष्टताओं पर विचार करो कि ख़ुदा ने पहले एक निशान स्थापित किया और आथम को दो प्रकार की मौत दी। **प्रथम** - यह कि वह सच्चाई को छुपा कर झूठ बोलने का दोषी ठहर कर अपनी सफाई किसी प्रकार से सिद्ध न कर सका। न नालिश से, न क़सम से, न किसी अन्य सबूत से। **द्वितीय-** यह कि ख़ुदा के वादे के अनुसार (सच्चाई को) छुपाने पर आग्रह करने के बाद शीघ्र मृत्यु पा गया। अब बताओ कि इस भविष्यवाणी की पुष्टि में तुम्हें क्या कठिनाइयां सामने आईं ? क्या आथम डरता नहीं रहा? क्या वह अन्ततः मर नहीं गया ? क्या भविष्यवाणी में साफ और स्पष्ट तौर पर यह शर्त न थी कि सच्चाई की ओर रूजू करने से मृत्यु में विलम्ब होगा? फिर क्या तुम में से कोई क़सम खा सकता है कि आथम पर बौद्धिक दृष्टि से यह आरोप स्थापित नहीं हुआ कि उसने अपने कार्यों और कथनों और व्यर्थ बहानों से यह सिद्ध कर दिया कि वह भविष्यवाणी के बाद अवश्य भयभीत रहा? और वह इस बात का सबूत नहीं दे सका कि क्यों उस डर को जिसका उसे स्वयं इक़रार था सिधाए सांप इत्यादि तर्कहीन बहानों की ओर सम्बद्ध किया जाए। हालांकि इस सबूत को दिलों में जमाने के लिए क़सम और नालिश दोनों मार्ग उसके लिए खुले थे। अब बताओ क्या उसने क़सम खाई? क्या उसने नालिश की? क्या उसने अपने आरोपों का कोई और सबूत दिया? कुछ तो मुंह से कहो! कुछ तो फूटो! कि उसने डर का इक़रार करके और केवल आरोप और इफ़्तिरा से सांप इत्यादि को अपने डर का कारण बता कर इन स्वयं निर्मित बहानों के सिद्ध करने के लिए क्या-क्या तर्क प्रस्तुत किए। हे हतभाग्य पक्षपातियो! क्या तुम कभी नहीं

मरोगे? क्या वह दिन नहीं आएगा कि जब तुम ख़ुदा तआला के सामने खड़े किए जाओगे। यदि इसी प्रकार का कोई दुनिया का मुक़द्दमा होता और तुम उसके क़ैदी या जज नियुक्त किए जाते तो निस्सन्देह तुम ऐसे व्यक्ति को जो आथम की तरह अपने बहानों का कुछ सबूत न दे सकता, झूठा ठहराते और माननीय अदालत से डर कर सच्चे बयान लिखवा देते परन्तु अब तुम समझते हो कि ख़ुदा तुम से दूर है और कुछ सुनता नहीं और पकड़ का दिन बहुत दूरी पर है!!!

सच कहो कि क्या आथम पाकदामन मर गया? और अपने सर पर हमारी ओर से कोई आरोप नहीं ले गया? तुम्हें क़सम है थोड़ा मुझे सुनाओ क्या तुमने मेरे विज्ञापनों में नहीं पढ़ा कि आथम सच को छुपाने के बाद आग्रह करने के पश्चात् शीघ्र मर जाएगा। तो ऐसा ही हुआ और वह और हमारे अंतिम विज्ञापन से जो समझाने के अंतिम प्रयास की तरह था, सात माह के अंदर मृत्यु पा गया। अत: यह कैसी बेईमानी है। इस क़ौम के पापी मन वालों ने ईसाइयों के साथ हाथ जा मिलाए और आकाशीय आवाज़ का विरोध किया और शैतानी आवाज़ के सत्यापनकर्ता हो गए परंतु यह तो अच्छा हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस को पूरा किया। बदकिस्मत सादुल्लाह नव मुस्लिम और मुहम्मद अली वाइज़ अब तक रोते जाते हैं कि भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई। हे शैतानों के गिरोह! तुम सच को कब तक छुपाओगे? क्या तुम्हारी कोशिशों से सच नष्ट हो जाएगा। ख़ुदा से लड़ो जितना लड़ सकते हो। फिर देखो कि विजय किसके साथ है क्योंकि आदेश ख़वातिम (परिणामों) पर है। हे निर्लज क़ौम! आथम मुक़ाबला पर आने से डरा परंतु तुम न डरे वह लानतों के साथ कुचला गया परन्तु मुक़ाबला पर न आया और चार हज़ार रुपए इनाम का वादा दिया गया उसे साहस न हुआ कि एक कदम भी हमारी और आए। यहां तक कि वह कब्र में पहुंच गया। वह नालिश करने से भी डरा और जब ईसाईयों ने उस पर ज़ोर दिया तो उसने कानों पर हाथ रख लिया तो क्या अभी तक सिद्ध न हुआ कि वह अपने मुकाबले को सच्चाई के विरुद्ध जानता था और हृदय में डर भरा हुआ था परंतु फिर भी सच को छुपाने के कारण ख़ुदा ने उसे न छोड़ा और ख़ुदा के वादे के अनुसार ठीक-ठाक उसके इल्हाम की

इच्छा के अनुसार वह मर गया और मौलवियों तथा ईसाइयों का मुंह काला कर गया। वह मुझ से आयु में कुछ वर्ष के अतिरिक्त कुछ अधिक न था। सादुल्लाह नव मुस्लिम की नीचता है कि उसे वयोवृद्ध ठहराता है। यह यहूदी चाहता है कि किसी प्रकार भविष्यवाणी छुप जाए। अत: हे विरोधियो! निर्लज्जता से जितने चाहे इन्कार करो सच्चाई खुल गई और बुद्धिमानों से समझ लिया कि भविष्यवाणी एक पहलू से अपितु चार पहलु से पूरी हो गई।★

आथम को इस रुजू और भय का लाभ दिया गया जो उससे प्रकट हुआ जैसा कि इल्हामी शर्त थी और भविष्यवाणी का एक भाग था और यह रुजू भविष्यवाणी को सुनते ही उसमें पैदा हो गया था क्योंकि वह इस्लामी मुर्तद था और यसू की ख़ुदाई के बारे में स्वयं हमेशा एक खटके में रहता था और तावीलें किया करता था और मुझ पर प्रारम्भ से उसे सुधारणा थी। क्योंकि वह इस ज़िले में रहकर मेरे परम मित्रों से भली भांति परिचित था यह संभव ना था कि वह मुझे झूठा समझता इसी कारण भविष्यवाणी सुनाने के समय उसका रंग पीला पड़ गया था और उसकी हालत परिवर्तित हो गई थी और जब मैंने कहा कि तुम ने अपनी पुस्तक में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दज्जाल कहा है यह उसका दंड है जो तुम्हें मिलेगा। तो उसके मुंह पर हवाइयां उड़ने लगीं और उसने दोनों हाथ कानों पर रखे मानो उस समय वह तौब: कर रहा था। मेरे विचार में है कि उस समय उस ईसाइयों के जल्से में 70 आदमी के लगभग होंगे। अत: उसका रुजू न देर के बाद अपितु उसी क्षण से शुरू हो गया था और मीआद के अन्त तक उसने दीवानों की तरह दिनों को व्यतीत किया।

★ **हाशिया-** (1) एक पहलू यह कि जो इल्हाम में शर्त थी उस शर्त की पाबन्दी से आथम की मृत्यु में विलम्ब हुआ।

(2) यह कि आथम गवाही छुपाने से इल्हाम के अनुसार शीघ्र मृत्यु पा गया।

(3) यह कि ईसाइयों के मक्र और मौलवियों के परस्पर षड्यंत्र से बराहीन अहमदिया की भविष्यवाणी पृष्ठ 241 पूरी हो गई। (4) आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी जो ईसाईयों और मुसलमानों के झगड़े के बारे में थी वह भी इससे पूरी हो गई। इसी से।

अब इससे अधिक नीचता क्या होगी कि ऐसी-ऐसी स्पष्ट घटनाओं के बावजूद फिर कहा जाता है कि भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई। झूठों पर ख़ुदा की लानत। रुजू़ का शब्द जो शर्त में सम्मिलित है हृदय का एक कार्य था उसी समय से प्रारंभ हो गया था खुले खुले इस्लाम का शर्त में कहां शब्द है। क्या एक मुश्रिक ऐसी कठोर भविष्यवाणी के समय सीधा रह सकता था। प्रत्येक को स्मरण रखना चाहिए यह भविष्यवाणी उसी दिन से आरंभ नहीं हुई है अपितु बराहीन अहमदिया में 12 वर्ष पूर्व उसकी सूचना दी गई है और साथ ही लेखराम की भविष्यवाणी की सूचना थी यदि तुम ध्यानपूर्वक बराहीन अहमदिया का पृष्ठ 239 और 240 और 241 पढ़ो तो यह समस्त नक़्शा तुम्हारी आंखों के सामने आ जाएगा। पहले 'आसार' और नवबी हदीसों में अंतिम युग के महदी के संबंध में यह लिखा गया था कि प्रारम्भिक अवस्था में उसे नास्तिक और काफ़िर ठहराया जाएगा। और लोग उस से नितान्त वैर रखेंगे और अपमान के साथ उसको याद करेंगे और दज्जाल और बेईमान एवं कज़्ज़ाब के नाम से पुकारेंगे और ये सब मौलवी होंगे और उस दिन मौलवियों से अधिक बुरा पृथ्वी पर इस उम्मत में से कोई नहीं होगा तो कुछ समय तक ऐसा होता रहेगा। फिर ख़ुदा आकाश के निशानों से उसका समर्थन करेगा और उसके लिए आकाश से आवाज़ आएगी कि यह अल्लाह का ख़लीफ़ा महदी है परंतु क्या आकाश बोलेगा जैसा कि इन्सान बोलता है? नहीं अपितु अभिप्राय यह है कि भयंकर निशान प्रकट होंगे जिनसे दिल और कलेजे हिल जाएंगे। तब ख़ुदा दिलों को उसके प्रेम की ओर फेर देगा और उसकी मान्यता पृथ्वी में फैला दी जाएगी यहां तक किसी स्थान पर चार आदमी मिलकर नहीं बैठेंगे जो उसकी चर्चा प्रेम और प्रशंसा के साथ न करते हों। अत: बराहीन अहमदिया के उपरोक्त कथित पृष्ठ इन घटनाओं का नक़्शा खींच रहे हैं। पहले मुझे संबोधित करके फ़रमाया है कि लोग तुझ को गुमराह जाहिल और शैतानी विचार का आदमी समझेंगे। दु:ख देंगे और भिन्न-भिन्न प्रकार की बातें बोलेंगे, उपहास करेंगे। फिर फ़रमाया कि मैं सब ठट्ठा करने वालों के लिए पर्याप्त हूंगा और फिर फ़रमाया-

قل عندی شهادة من الله فهل انتم مؤمنون۔

यह इस बात की ओर संकेत दिया कि उन दिनों में आकाशीय निशानियां प्रकट होंगी। इसके बाद पृष्ठ 241 में आथम के निशानों का ज़िक्र फ़रमाया और साथ ही सूचना दे दी कि इस निशान पर ईसाइयों और यहूदी विशेषता वाले मुसलमानों का दंगा होगा और वह मक्र करेंगे और ख़ुदा भी मक्र करेगा और ख़ुदा के मक्र विजयी होते हैं। तत्पश्चात् फ़रमाया कि इन मक्रों के बाद ख़ुदा सच को प्रकट करेगा और महान विजय होगी तो लेखराम की घटना को ख़ुदा ने महान विजय करके दिखाया और ख़ुदा के अतिरिक्त यह किसी में शक्ति न थी कि ऐसी लड़ाई के अंजाम की सूचना देता तथा विजय की ख़ुशख़बरी सुनाता।

दूसरी भविष्यवाणी लेखराम के बारे में है जिस के संबंध में बराहीन के इन्हीं इल्हामों में संकेत है और बराहीन अहमदिया में ईसाइयों के मक्र (छल) के बारे यह इल्हाम लिखा है-

الفتنة هٰهُنَا فاصبر كما صبر اولوالعزم

अर्थात् जब वे मक्र (छल) करेंगे तो एक बड़ा फ़ित्ना उठेगा और देश में झूठ की सहायता में शोर पड़ जाएगा और सच्चे को झूठा ठहरा दिया जाएगा और झूठों को सच्चा समझेंगे। अब हे आंखों वालो ! इतनी सच्चाई का ख़ून करके नर्क की अग्नि में मत पड़ो। देखो इस भविष्यवाणी में कितनी प्रतिष्ठा है कि 12 वर्ष पूर्व इसका नक़्शा खींच कर दिखाया गया है और इसके बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से भी एक 'असर' नक़ल किया गया है कि ईसाइयों से झगड़ा होगा। तब पृथ्वी से आवाज़ आएगी कि आले ईसा सच पर हैं और आकाश से आवाज़ आएगी कि आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सच पर हैं। अब सच कहो कि अभी तक आवाज़ आई या नहीं? यदि तुम बुराई में बढ़ोगे तो वह अपनी क़ुदरत प्रदर्शित करने में बढ़ेगा। क्या कोई है जो उसे थका सके?

अब हम लेखराम की भविष्यवाणी को विस्तार पूर्वक उन पुस्तकों की मूल इबारतों सहित यहां दर्ज करते हैं जिन में यह भविष्यवाणी मौजूद है और पाठकों

को ध्यान दिलाते हैं कि ख़ुदा तआला का भय करके उन स्थानों को ध्यानपूर्वक पढ़ें और फिर सोचें कि क्या यह मनुष्य का काम है या उस ख़ुदा का जो पृथ्वी और आकाश का मालिक और समस्त शक्तियों का ख़ुदावंद है। स्मरण रहे जिन पुस्तकों की इबारतें नीचे लिखी जाती हैं वे समस्त इबारतें यहां हूबहु दर्ज की गई हैं। एक अक्षर की वृद्धि या कमी उस में नहीं। यहां तक कि भविष्यवाणी के सर पर कि वह ग़ज़ल जिस के प्रारंभ में यह चरण है "अजब नूरेस्त दर जाने मुहम्मद" इसके नीचे भविष्यवाणी को दिखाने के लिए हाथ बनाया गया था वह हाथ भी हूबहू उसी स्थान पर लगा दिया है। ताकि इस पुस्तक के पाठक पूर्णतः उस नक़्शे पर अवगत हो जाएं जो लेखराम की मृत्यु से 4 वर्ष पूर्व उसकी मृत्यु के लिए खींचा गया था। इन सबके साथ प्रत्येक शहर में ये पुस्तकें मिल सकती हैं और कई वर्षों से पंजाब और हिंदुस्तान में प्रकाशित हो रही हैं जिसका मन चाहे असल पुस्तकों में देख ले।

यहां एक आवश्यक बात स्मरण रखने योग्य है और जो हमारी इस पुस्तक की रूह और मुख्य कारण है वह यह कि यह भविष्यवाणी एक बड़े उद्देश्य को व्यक्त करने के लिए की गई थी। अर्थात् इस बात का सबूत देने के लिए आर्य धर्म सर्वथा मिथ्या और वेद ख़ुदा तआला की ओर से नहीं। और हमारे सय्यिद व मौला **मुहम्मद** मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुदा तआला के **पवित्र रसूल** और चुने हुए नबी तथा इस्लाम ख़ुदा तआला की ओर से सच्चा धर्म है। और यही बार-बार लिखा गया था और इसी उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए दुआएं की गई थीं। इसीलिए इस भविष्यवाणी को केवल एक भविष्यवाणी नहीं समझना चाहिए अपितु यह ख़ुदा तआला की ओर से हिंदुओं और मुसलमानों में एक आकाशीय फैसला है। कुछ समय से हिन्दुओं में तेज़ी बढ़ गई थी विशेष तौर पर यह लेखराम तो जैसे इस बात पर विश्वास नहीं रखता था कि ख़ुदा भी है। तो ख़ुदा ने उन लोगों को चमकता हुआ नमूना दिखलाया। चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति इस से नसीहत पकड़े। जो व्यक्ति ख़ुदा के पवित्र नबियों के अपमान में ज़बान खोलता है उसका अंजाम कभी अच्छा नहीं हो सकता।

लेखराम अपनी मौत से आर्यों को हमेशा की नसीहत का पाठ दे गया है। चाहिए कि उन शरारतों से पृथक हों जो दयानंद ने देश में फैलाईं और नरमी, अनुकंपा, सच्चे प्रेम और आदर के साथ इस्लाम से व्यवहार करें। भविष्य में उन्हें अधिकार है। कुछ मूर्ख जो मुसलमान कहला कर आर्यों की ओर झुकते थे अब उनकी तौबा का समय है उन्हें देखना चाहिए कि इस्लाम का ख़ुदा कैसा विजयी है? आर्यों को इस भविष्यवाणी के समय छपे हुए विज्ञापनों द्वारा सूचना दी गई थी कि यदि तुम्हारा धर्म सच्चा है और इस्लाम झूठा तो इसकी यही निशानी है कि इस भविष्यवाणी के प्रभाव से अपने वकील लेखराम को बचा लो और जहां तक संभव है उसके लिए दुआएं करो। दुआओं के लिए अवकाश बहुत था परंतु ख़ुदा के प्रकोपी इरादे को वे लोग बदल न सके। निस्संदेह समझना चाहिए कि जो छुरी लेखराम पर चलाई गई यह वही छुरी थी जो कई वर्ष तक हमारे सय्यिद व मौला सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनादर में चलाता रहा। तो वही जीभ की तेज़ी छुरी के रूप में साक्षात होकर के उस के पेट में घुस गई। जब तक आकाश पर छुरी न चले पृथ्वी पर कदापि चल नहीं सकती। लोग समझते होंगे कि लेखराम अब मारा गया परन्तु मैं तो उस समय से मक़्तूल (क़त्ल किया हुआ) समझता था। जब मेरे पास एक फरिश्ता ख़ूनी रूप में आया और उस ने पूछा कि "लेखराम कहां है" तो यह सब निबंध उन भविष्यवाणियों में पढ़ोगे जो नीचे लिखी जाती हैं।

प्रथम- (20 फरवरी 1886 ईसवी के विज्ञापन में पंडित लेखराम के बारे में पृष्ठ 4 में केवल इतनी भविष्यवाणी है) कि यहां लेखराम साहिब पेशावरी का प्रारब्ध इत्यादि के बारे में संभवतः इस पुस्तक में समय और तिथि के साथ कुछ लिखा जाएगा। यदि किसी साहिब को कोई ऐसी भविष्यवाणी बुरी लगे तो वह अधिकार रखते हैं कि 1 मार्च 1886 ई. से या उस तिथि से जो किसी अख़बार में पहली बार यह निबन्ध प्रकाशित हो ठीक-ठीक 2 सप्ताह के अंदर अपने हस्ताक्षरित लेख से मुझे सूचना दें ताकि वह भविष्यवाणी जिस के प्रकट होने से वे डरते हैं पुस्तक में लिखने से अलग रखी जाए और हृदय को कष्ट पुहंचाने

का समझ कर उस पर किसी को अवगत न किया जाए और किसी को उस के प्रकट होने के समय की सूचना न दी जाए। फिर इसके बाद पंडित लेखराम का पत्र पहुंचा कि मैं इजाज़त देता हूं कि मेरी मौत के बारे में भविष्यवाणी की जाए परंतु मीआद निर्धारित होनी चाहिए। फिर इस के पश्चात् निम्नलिखित इल्हाम हुए।

द्वित्तीय- "करामातुस्सादिक़ीन" पुस्तक में दर्ज इल्हाम माह सफ़र 1311 हिजरी

وَعدنی رَبّی واستجاب دُعائی فی رجل مُفسدٍ عدو اللہ وَ رسُولہ المسمّی لیکھرام الفشاوری و اخبرنی انہ من الھالکین۔ انہ کان یسبّ نبی اللہ و یتکلم فی شانہ بکلمات خبیثۃ۔ فدعوت علیہ۔ فبشرنی ربّی بموتہ فی ستّۃ سنۃٍ ان فی ذٰلك لاٰیۃ لِلطّالبین۔

अर्थात् ख़ुदा तआला ने अल्लाह और रसूल के एक शत्रु के बारे में जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गालियां निकालता है और ज़बान पर अपवित्र वाक्य लाता है जिसका नाम लेखराम है मुझे वादा दिया और मेरी दुआ सुनी जब मैंने उस पर बद्दुआ की तो ख़ुदा ने मुझे ख़ुशख़बरी दी कि वह 6 वर्ष के अंदर मर जाएगा। यह उनके लिए निशान है जो सच्चे धर्म को ढूंढते हैं।

तृतीय- 20 फरवरी 1893 ई के विज्ञापन में दर्ज इल्हाम पुस्तक आईना कमालाते इस्लाम के साथ-

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

عجب نوریست در جان محمدؐ
عجب لعلیست در کان محمدؐ

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में एक अद्भुत प्रकाश है मुहम्मद की खान में बहुत ही विचित्र लाल (पद्म) है।

ز ظلمت ھا دلے آنگہ شود صاف
کہ گردد از محبانِ محمدؐ

दिल उस समय आंधकारों से पवित्र होता है जब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मित्रों में दाखिल हो जाता है।

عجب دارم دل آں ناکساں را
کہ روتابند از خوانِ محمدؐ

मैं उन मूर्खों के हृदय पर आश्चर्य करता हूं जो मुहम्मद सल्लल्लाहु वसल्लम के दस्तरख़्वान से मुंह फेरते हैं।

ندانم ہیچ نفسے در دو عالم
کہ دارد شوکت و شانِ محمدؐ

दोनों लोकों में मैं किसी को नहीं जानता जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सी शान रखता हो।

خدا زاں سینہ بیزار ست صد بار
کہ ہست از کینہ دارانِ محمدؐ

ख़ुदा उस व्यक्ति से बहुत अप्रसन्न है जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से वैर रखता हो।

خدا خود سوزد آں کرمِ دنی را
کہ باشد از عدوّانِ محمدؐ

ख़ुदा स्वयं उस अधर्म कीड़े को जला देता है जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दुश्मनों में से हो।

اگر خواہی نجات از مستیٔ نفس
بیا در ذیلِ مستانِ محمدؐ

यदि तू नफ़्स के नशे में चूर होने से मुक्ति चाहता है तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मस्तानों में से हो जा।

اگر خواہی کہ حق گوید ثنایت
بشو از دل ثنا خوانِ محمدؐ

यदि तू चाहता है कि ख़ुदा तेरी प्रशंसा करे तो दिल की गहराई से मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यशोगान करने वाला बन जा।

اگر خواهی دلیلے عاشقش باش
محمدؐ هست برهانِ محمدؐ

यदि तू उसकी सच्चाई का प्रमाण चाहता है तो उसका आशिक बन जा क्योंकि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही स्वयं मुहम्मद का प्रमाण है।

سرے دارم فدائے خاک احمدؐ
دلم هر وقت قربانِ محمدؐ

मेरा सर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पैरों की धूल पर न्योछावर है और मेरा दिल हर समय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर क़ुर्बान रहता है।

بگیسوئے رسول اللہ کہ هستم
نثار روئے تابانِ محمدؐ

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के केशों की क़सम मैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रकाशमान चेहरे पर न्योछावर हूं।

دریں رہ گر کشندم ور بسوزند
نتابم رُو زِ ایوانِ محمدؐ

इस मार्ग में यदि मुझे क़त्ल कर दिया जाए या जला दिया जाए तो फिर भी मैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरबार से नहीं फिरूंगा।

بکار دیں نترسم از جهانے
کہ دارم رنگ ایمانِ محمدؐ

धर्म के मामले में मैं समस्त संसार से भी नहीं डरता कि मुझ में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ईमान का रंग है।

بسے سهل ست از دنیا بریدن
بیاد حسن و احسانِ محمدؐ

दुनिया से संबंध विच्छेद करना अत्यंत आसान है मुहम्मद सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम के सौंदर्य और उपकार को याद करके।

فدا شد در رهش هر ذرّۂ من
کہ دیدم حسن پنہانِ محمدؐ

उसके मार्ग में मेरा प्रत्येक कण कुर्बान है क्योंकि मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुप्त सौंदर्य देख लिया।

دگر استاد را نامے ندانم
کہ خواندم در دبستانِ محمدؐ

मैं किसी अन्य उस्ताद का नाम नहीं जानता मैं तो केवल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मदरसे का पड़ा हुआ हूं।

بدیگر دلبرے کارے ندارم
کہ ہستم کشتۂ آنِ محمدؐ

अन्य किसी प्रियतम से मुझे वास्ता नहीं कि मैं तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाज़-व-अदा का क़त्ल किया हुआ हूं।

مرا آں گوشۂ چشمے بباید
نخواہم جز گلستانِ محمدؐ

मुझे तो उसी आंख की दया दृष्टि की आवश्यकता है मैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाग़ के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहता।

دلِ زارم بہ پہلویم مجوئید
کہ بستیمش بدامانِ محمدؐ

मेरे ज़ख्मी दिल को मेरे पहलू में तलाश न करो उसे तो हमने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दामन से बांध दिया है।

من آں خوش مرغ از مرغانِ قدسم
کہ دارد جا بہ بستانِ محمدؐ

मैं स्वर्ग के परिंदों में सर्वश्रेष्ठ परिंदा हूं जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाग़ में बसेरा रखता है।

توجان ما منور کردی از عشق
فدایت جانم اے جانِ محمدؐ

तूने प्रेम के कारण हमारी जान को प्रकाशमान कर दिया है मुहम्मद तुझ पर मेरी जान कुर्बान है।

دریغا گر دھم صد جان دریں راہ
نباشد نیز شایان محمدؐ

यदि इस मार्ग में सौ जान से कुर्बान हो जाऊं तो भी अफसोस रहेगा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान के यथायोग्य नहीं।

چہ ھیبت ھا بدادند ایں جواں را
کہ ناید کس بمیدانِ محمدؐ

इस जवान को कितना रोब दिया गया है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मैदान में कोई भी मुकाबले पर नहीं आता।

الا اے دشمن نادان و بے راہ
بترس از تیغِ بُرّانِ محمدؐ

हे मूर्ख और गुमराह दुश्मन होशियार हो जा और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की काटने वाली तलवार से डर।

رہ مولیٰ کہ گم کردند مردم
بجو در آل و اعوانِ محمدؐ

स्वयं को ख़ुदा के मार्ग में जिन लोगों ने भुला दिया है तू उनको मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आल और सहायकों में ढूंढ।

الا اے منکر از شانِ محمدؐ
ھم از نور نمایانِ محمدؐ

ख़बरदार हो जा हे मनुष्य जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान का इन्कारी है और हम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चमत्कार हैं।

کرامت گرچہ بے نام و نشان است
بیا بنگر زِ غلمانِ محمد

यद्यपि करामत (चमत्कार) अब अप्राप्य है परन्तु तू आ और उसे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दासों में देख।

लेखराम पेशावरी के बारे में एक भविष्यवाणी

स्पष्ट हो कि इस ख़ाकसार ने 20 फरवरी 1886 ई० के विज्ञापन में जो इस पुस्तक के साथ सम्मिलित किया गया था इन्दरमन मुरादाबादी और लेखराम पेशावरी को इस बात के लिए बुलाया था कि यदि वे इच्छुक हों तो उनके प्रारब्ध के बारे में कुछ भविष्यवाणियाँ प्रकाशित की जाएं। तो इस विज्ञापन के बाद इन्दरमन ने तो ऐतराज़ किया और कुछ समय के पश्चात् मर गया। परन्तु लेखराम ने बड़ी दिलेरी से एक कार्ड इस ख़ाकसार की ओर भेजा कि मेरे बारे में जो भविष्यवाणी चाहो प्रकाशित कर दो मेरी ओर से अनुमति है। अत: जब उसके बारे में ध्यान किया गया तो अल्लाह तआला की ओर से यह इल्हाम हुआ -

عِجْلٌ جَسَدٌ لَّہٗ خُوَارٌ لَہٗ نَصَبٌ وَ عَذَابٌ

अर्थात् यह केवल एक निर्जीव बछड़ा है जिसके अन्दर से एक अप्रिय आवाज़ निकल रही है और इसके लिए इन धृष्टताओं तथा गालियों के बदले में दण्ड, संताप और अज़ाब प्रारब्ध है जो उसे अवश्य मिलेगा। और उसके बाद आज जो 20 फरवरी 1893 ई दिन सोमवार है इस अज़ाब का समय मालूम करने के लिए ध्यान किया गया तो ख़ुदावन्द करीम ने मुझ पर प्रकट किया कि आज की तिथि से जो 20 फरवरी 1893 ई है छ: वर्ष की अवधि तक अपनी गालियों के दण्ड में अर्थात् उन अपमानों के दण्ड में जो इस व्यक्ति ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में किए हैं कठोर अज़ाब में ग्रस्त हो जाएगा। तो अब मैं इस भविष्यवाणी को प्रकाशित करके समस्त मुसलमानों, आर्यों, ईसाइयों और अन्य फिर्कों पर प्रकट करता हूँ कि यदि इस व्यक्ति पर छ-वर्ष की अवधि में आज की तिथि से कोई ऐसा★ अज़ाब न उतरा

★ **हाशिया-** अब आर्यों को चाहिए की सब मिल कर दुआ करें कि यह अज़ाब उनके वकील से टल जाए।

जो साधारण कष्टों से निराला विलक्षण और अपने अन्दर ख़ुदाई धाक रखता हो तो समझो कि मैं ख़ुदा तआला की ओर से नहीं और न उसकी रूह से मेरा यह कलाम है। यदि मैं इस भविष्यवाणी में झूठा निकला तो मैं प्रत्येक दण्ड भुगतने के लिए तैयार हूँ और इस बात पर राज़ी हूँ कि मेरे गले में रस्सा डाल कर किसी सूली पर खींचा जाए और मेरे इस इक़रार के बावजूद यह बात भी स्पष्ट है कि किसी इन्सान का अपनी भविष्यवाणी में झूठा निकलना स्वयं समस्त बदनामियों से बड़ी बदनामी है। इस से अधिक क्या लिखूं।

स्पष्ट रहे कि इस व्यक्ति ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बहुत अधिक अपमान किए हैं जिनकी कल्पना से भी शरीर कांपता है। उसकी पुस्तकें विचित्र तौर पर अपमान, तिरस्कार और गालियों से भरी हुई हैं। कौन मुसलमान है जो उन पुस्तकों को सुने और उसका दिल और जिगर टुकड़े टुकड़े न हो। इसके साथ धृष्टता और निर्लज्जता यह व्यक्ति बड़ा मूर्ख है अरबी का तनिक ज्ञान नहीं अपितु गूढ़ उर्दू लिखने का भी तत्व नहीं। और यह भविष्यवाणी संयोगवश नहीं अपितु इस ख़ाकसार ने विशेष तौर पर इसी उद्देश्य के लिए दुआ की जिसका यह उत्तर मिला। और यह भविष्यवाणी मुसलमानों के लिए भी निशान है। काश वे वास्तविकता को समझते और उनके दिल नर्म होते। अब मैं उसी महा प्रतापी ख़ुदा के नाम पर समाप्त करता हूँ जिसके नाम से आरंभ किया था।

والحمد للہ والصلوۃ والسلام علٰی رسولہ محمدؐ المصطفٰی
افضل الرُّسُل و خیر الوری سیّدنا و سید کل ما فی الارض و السما

ख़ाकसार मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद, क़ादियान,

ज़िला - गुरदासपुर 20 फरवरी 1893 ई०

चतुर्थ "पुस्तक बरकातुद्दुआ" के टाइटल पेज पर ऐतराज़ का उत्तर, सूचना सहित उसी के पृष्ठ - 4 के हाशिए में दर्ज है।

स्वीकृत दुआ का नमूना

अनीस हिन्द मेरठ और हमारी भविष्यवाणी पर ऐतराज़

25 मार्च 1893 ई के इस अख़बार की कापी जिस में मेरी उस भविष्यवाणी के सबंध में जो लेखराम पेशावरी के बारे में मैंने प्रकाशित की थी कुछ आलोचना है मुझे मिली। मुझे मालूम हुआ है कि कुछ अन्य अख़बारों पर भी यह सच्ची बात असहनीय गुज़री है और वास्तव में मेरे लिए प्रसन्नता का स्थान है कि यों स्वयं विरोधियों के हाथों इसकी प्रसिद्धि और प्रसारण हो रहा है। अत: मैं इस समय इस आलोचना के उत्तर में केवल इतना लिखना पर्याप्त समझता हूँ कि जिस ढंग और प्रकार से ख़ुदा तआला ने चाहा उसी प्रकार से किया मेरा इस में हस्तक्षेप नहीं। हां यह प्रश्न कि ऐसी भविष्यवाणी लाभप्रद नहीं होगी और उसमें सन्देह शेष रह जाएंगे। इस ऐतराज़ के बारे में मैं अच्छी तरह समझता हूँ कि यह समय से पूर्व है। मैं इस बात का स्वयं इक़रारी हूँ और अब फिर इक़रार करता हूँ कि यदि जैसा कि ऐतराज़ करने वालों ने समझा है भविष्यवाणी का सारांश अंतत: यही निकला कि कोई मामूली तप आया या मामूली तौर पर कोई दर्द हुआ या हैज़ा हुआ और फिर स्वास्थ्य की असली हालत क़ायम हो गई तो वह भविष्यवाणी नहीं समझी जाएगी और निस्सन्देह एक छल और कपट होगा। क्योंकि ऐसे रोगों से तो कोई भी रिक्त नहीं। हम सब कभी न कभी बीमार हो जाते हैं तो इस स्थिति में मैं निस्सन्देह उस दण्ड के योग्य ठहरूँगा जिसका वर्णन मैंने किया है। परन्तु यदि भविष्यवाणी का प्रकटन इस प्रकार से हुआ कि जिसमें ख़ुदा के प्रकोप के निशान साफ़ साफ़ और खुले-खुले तौर पर दिखाई दें तो फिर समझो कि ख़ुदा तआला की ओर से है।

असल वास्तविकता यह है कि भविष्यवाणी की व्यक्तिगत प्रतिष्ठा और धाक दिनों और समयों के निर्धारित करने की मुहताज नहीं। इस बारे में तो अज़ाब में उतरने के समय की एक सीमा निर्धारित कर देना पर्याप्त है। फिर यदि भविष्यवाणी वास्तव में एक महान धाक के साथ प्रकट हो तो वह स्वयं हृदयों को अपनी ओर

आकर्षित कर लेती है और यह समस्त विचार और समस्त आलोचनाएं जो समय से पूर्व हृदयों में पैदा होती हैं ऐसी मिट जाती हैं कि न्यायप्रिय और बुद्धिमान एक लज्जा के साथ अपनी रायों से लौटते हैं। इसके अतिरिक्त यह ख़ाकसार भी तो प्रकृति के नियम के अधीन है। यदि मेरी ओर से इस भविष्यवाणी की बुनियाद केवल इतनी है कि मैंने केवल डींगों के तौर पर कुछ संभावित बीमारियों को मस्तिष्क में रख कर और अटकल से काम लेकर यह भविष्यवाणी प्रकाशित की है तो जिस व्यक्ति के बारे में यह भविष्यवाणी है वह भी तो ऐसा कर सकता है कि इन्हीं अटकलों की बुनियाद पर मेरे बारे में कोई भविष्यवाणी कर दे। अपितु मैं सहमत हूँ कि छः वर्ष की बजाए जो मैंने उसके लिए मीआद निर्धारित की है वह मेरे लिए दस वर्ष लिख दे। लेखराम की आयु शायद इस समय अधिक से अधिक तीस वर्ष की होगी और वह एक जवान, भारी भरकम, अच्छे स्वास्थ्य का आदमी है और इस ख़ाकसार की आयु इस समय पचास वर्ष से कुछ अधिक है तथा कमज़ोर और हमेशा बीमार और भिन्न भिन्न प्रकार के रोगों में ग्रस्त है। फिर इसके बावजूद मुक़ाबले में स्वयं ज्ञात हो जाएगा कि कौन सी बात मनुष्य की ओर से है और कौन सी बात ख़ुदा तआला की ओर से।

फिर ऐतराज़ करने वाले का यह कहना कि ऐसी भविष्यवाणियों का अब युग नहीं है एक साधारण वाक्य है जो प्रायः लोग मुंह से बोल दिया करते हैं। मेरी समझ में तो मज़बूत और पूर्ण सच्चाइयों को स्वीकार करने के लिए यह एक ऐसा युग है कि शायद इसका उदाहरण पहले युगों में कोई भी न मिल सके। हां इस युग से कोई छल और कपट गुप्त नहीं रह सकता। परन्तु यह ईमानदारों के लिए और भी प्रसन्नता का स्थान है। क्योंकि जो व्यक्ति छल और सच में अन्तर करना जानता हो वही सच्चाई का हृदय से सम्मान करता है। और प्रसन्नतापूर्वक तथा दौड़कर सच्चाई को स्वीकार कर लेता है। और सच्चाई में कुछ ऐसा आकर्षण होता है कि वह स्वयं स्वीकार करा लेती है। स्पष्ट है कि समय ऐसी सैकड़ों नई बातों को स्वीकार करता जाता है जो लोगों के बाप दादों ने स्वीकार नहीं की थीं। यदि युग सच्चाइयों का प्यासा नहीं तो फिर क्यों एक महान इन्क़िलाब इस में आरंभ है। युग निस्सन्देह वास्तविक सच्चाइयों का दोस्त है न कि दुश्मन

और यह कहना कि युग बुद्धिमान है और सीधे-सादे लोगों का समय गुज़र गया है। यह दूसरें शब्दों में युग की निन्दा है। जैसे यह युग एक ऐसा बुरा युग है कि सच्चाई की वास्तविक तौर पर सच्चाई पाकर फिर उसे स्वीकार नहीं करता। परन्तु मैं कदापि स्वीकार नहीं करूंगा कि वास्तव में ऐसा ही है। क्योंकि मैं देखता हूँ कि अधिकतर मेरी ओर रूजू करने वाले और मुझ से लाभ प्राप्त करने वाले वही लोग हैं जो नव-शिक्षित हैं। कुछ उन में से बी.ए और एम.ए तक पहुँचे हुए हैं। और मैं यह भी देखता हूँ कि यह नव-शिक्षित लोगों का गिरोह सच्चाइयों का बड़े शौक़ से स्वीकार करता जाता है और केवल इतना ही नहीं अपितु एक नव मुस्लिम और शिक्षित यूरेशियन अंग्रेज़ों का गिरोह जिनका निवास मद्रास के क्षेत्र में है हमारी जमाअत में सम्मिलित और समस्त सच्चाइयों पर विश्वास रखते हैं ।

अब मैं सोचता हूँ कि मैंने वे समस्त बातें लिख दी हैं जो एक ख़ुदा से डरने वाले मनुष्य के लिए पर्याप्त हैं। आर्यों का अधिकार है कि मेरे इस निबंध पर भी अपनी ओर से जिस प्रकार चाहें हाशिए चढ़ाएं। मुझे इस बात पर कुछ भी नज़र नहीं। क्योंकि मैं जानता हूँ कि इस समय इस भविष्यवाणी की प्रशंसा करना या निन्दा करना दोनों बराबर हैं। यदि यह ख़ुदा तआला की ओर से है और मैं ख़ूब जानता हूँ कि उसी की ओर से है तो अवश्य भयावह निशान के साथ इसका प्रकटन होगा और दिलों को हिला देगा और यदि उसकी ओर से नहीं तो फिर सबके सामने मेरी रुसवाई होगी और यदि मैं उस समय अधम तावीलें करूंगा तो यह और भी अपमान का कारण होगा। वह अनादि अस्तित्व और पवित्र तथा पुनीत जो समस्त अधिकार अपने हाथ में रखता है वह झूठे को कभी सम्मान नहीं देता। यह बिलकुल ग़लत बात है कि लेखराम से मुझे कोई व्यक्तिगत शत्रुता है। मुझे व्यक्तिगत तौर पर किसी से शत्रुता भी नहीं अपितु इस व्यक्ति ने सच्चाई से शत्रुता की और एक ऐसे कामिल और पवित्र को जो समस्त सच्चाइयों का चशमा था अपमानपूर्वक याद किया। इसलिए ख़ुदा तआला ने चाहा कि अपने एक **प्यारे का** दुनिया में सम्मान प्रकट करे।

والسلام علی من اتبع الھدی

लेखराम पेशावरी के बारे में एक और ख़बर

(बरकातुद्दुआ पुस्तक के टाइटल पेज पर हाशिए में दर्ज)

आज जो 2 अप्रैल 1893 तदनुसार 14 माह रमज़ान 1310 हिज्री है। प्रातः काल थोड़ी सी ऊंघ की अवस्था में मैंने देखा कि मैं एक विशाल मकान में बैठा हुआ हूँ और कुछ दोस्त भी मेरे पास मौजूद हैं। इतने में एक शक्तिशाली मोटा- ताज़ा भयावह रूप का व्यक्ति जैसे उसके चेहरे से ख़ून टपकता है मेरे सामने आकर खड़ा हो गया। मैंने नज़र उठाकर देखा तो मुझे मालूम हुआ कि वह एक नई पैदायश और आदतों का व्यक्ति है, जैसे इन्सान नहीं बहुत क्रूर कठोर फरिश्तों में से है और उसका भय हृदयों पर छाया हुआ था और मैं उसे देखता ही था कि उसने मुझसे पूछा कि "लेखराम कहां है" तथा एक अन्य व्यक्ति का नाम लिया कि वह कहां है? तब मैंने उस समय समझा कि यह व्यक्ति लेखराम और इस दूसरे व्यक्ति को दण्ड देने के लिए मामूर किया गया है। परन्तु मुझे मालूम नहीं रहा कि वह दूसरा व्यक्ति कौन है। हां यह निश्चित तौर पर याद रहा कि वह दूसरा व्यक्ति उन्हीं कुछ लोगों में से था जिनके बारे में विज्ञापन दे चुका था। और यह रविवार का दिन और प्रातः 4 बजे का समय था।

فَالْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی ذٰلِکَ

लेखराम के बारे में आर्यों के विचार, उसके क़त्ल किए जाने के बाद

अख़बार आम प्रकाशित बुधवार 10 मार्च 1897 ई० में मेरे बारे में संकेत करके यह लिखा है कि "एक ईसाई डिप्टी साहिब के सबंध में भविष्यवाणी मृत्यु होने की समय एक वर्ष प्रसिद्ध की गई थी और अख़बारों में इसकी चर्चा थी। और ख़ुदा न करे उन दिनों में यदि डिप्टी साहिब के साथ ऐसी घटना हो जाती (अर्थात् क़त्ल की घटना) जिसका परिणाम लेखराज साहिब को भुगतना पड़ा है

तब और बात थी।" अब हर एक समझ सकता है कि ऐडीटर साहिब के इस वर्णन का क्या मतलब है। केवल यही मतलब है कि यदि डिप्टी साहिब क़त्ल हो जाते तो ऐडीटर साहिब के विचार में सरकार को भविष्यवाणी करने वाले के बारे में तत्काल ध्यान पैदा हो जाता और वह जांच पड़ताल होती जो अब नहीं है। संभवत: इस वर्णन से ऐडीटर साहिब की कोई नेक नीयत होगी। परन्तु चूंकि वह एक सतही विचार और घटना के विरुद्ध समझ का एक दाग़ साथ रखती है। इसलिए अफ़सोस का स्थान है। एडीटर साहिब के वर्णन से यह भी ज्ञात होता है कि आथम के बारे में भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई। परन्तु हम संक्षिप्त तौर पर स्मरण कराते हैं कि वह भविष्यवाणी बड़ी सफाई से पूरी हुई। आथम साहिब मेरे एक पुराने मुलाक़ाती थे, उन्होंने एक बार मौखिक और एक विशेष पत्र के द्वारा भी निवेदन किया था कि यदि मेरे बारे में कोई भविष्यवाणी हो और वह सच्ची निकली तो मैं किसी हद तक अपना सुधार कर लूंगा। तो ख़ुदा ने उनके बारे में यह भविष्यवाणी प्रकट की वह पन्द्रह महीने के अन्दर हाविय: में गिरेंगे परन्तु इस शर्त से कि इस बीच उन्होंने सच की ओर रूजू न किया हो। तो चूंकि ख़ुदा की भविष्यवाणी में एक शर्त थी और आथम साहिब भयभीत होकर इस शर्त के पाबन्द हो गए थे। अत: अवश्य था कि वह इस शर्त से लाभ प्राप्त करते। क्योंकि सभंव नहीं की ख़ुदा की शर्त पर कोई अमल करके फिर उससे लाभ न उठाए। इसलिए शर्त के प्रभाव से उनकी मौत में कुछ हद तक विलम्ब हो गया यदि कहो कि इसका क्या सबूत है कि उन्होंने दिल में इस्लाम की ओर रुजू कर लिया था, या उन पर इस्लामी भविष्यवाणी का भय विजयी हो गया था। तो उत्तर इसका यह है कि जब ख़ुदा ने मुझे सूचना दी कि आथम ने शर्त से फायदा उठाया है और उसकी मौत में हम ने कुछ विलम्ब डाल दिया है तो मैंने आथम साहिब को चार हज़ार रुपए पर क़सम खाने के लिए बुलाया कि यदि गुप्त तौर पर इस्लाम की ओर रुजू नहीं किया था इस्लामी भय उनके दिल पर नहीं छाया तो चाहिए कि मैदान में आकर क़सम खाएं या यदि क़सम नहीं

तो नालिश करके अपने इस भय के कारणों को जिसका उनको इक़रार है पुख्ता सबूत तक पहुंचाए। परन्तु उन्होंने न क़सम खाई, न नालिश की, इसके बावजूद कि उनको साफ़ इक़रार था कि मैं भविष्यवाणी की मीआद के अन्दर डरता रहा परन्तु इस्लामी धाक से नहीं अपितु सिधाए सांप और आक्रमणों इत्यादि से। और चूंकि वह भय को छुपा न सके इसलिए ये बहाने बनाए और सबूत कुछ न दिया। और इसी कारण से उनको क़सम की ओर बुलाया गया था, ताकि यदि वह सच्चे हैं तो क़सम खा लें। परन्तु चार हज़ार रुपए नकद देने के बावजूद क़सम न खाई और न नालिश से अपने इन आरोपों को सिद्ध किया, यहां तक कि क़ब्र में दाख़िल हो गए। मेरे इल्हाम में यह भी था कि यदि आथम सच्ची गवाही नहीं देगा और न क़सम खाएगा तब भी **आग्रह के बाद शीघ्र मरेगा।** तो ऐसा ही हुआ और आथम साहिब मेरे अन्तिम विज्ञापन से **सात माह** के अन्दर मर गए। और विचित्रतर यह है कि उनके इस समस्त क़िस्से की ख़बरें घटना से बारह वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में मौजूद हैं। देखो पृष्ठ 241 बराहीन अहमदिया। फिर ऐसी साफ़ और स्पष्ट भविष्यवाणी के बारे में यह गुमान करना कि वह पूरी नहीं हुई इन्साफ का कितना ख़ून करना है। क्या आथम साहिब की इस भविष्यवाणी में कोई शर्त नहीं थी? और यदि थी तो क्या आथम साहिब ने अपने कथनों और कार्यों से इस शर्त का पूरा होना सिद्ध नहीं किया? क्या आथम साहिब मेरे इस इल्ज़ाम को कब्र में साथ नहीं ले गए कि उन्होंने भय का इक़रार करके फिर यह सिद्ध करके न दिखाया कि वह भय किसी सिधाए हुए सांप इत्यादि के आक्रमणों के कारण था न कि इस्लामी भविष्यवाणी के रोब के कारण। वह हमेशा मुबाहसे किया करते थे परन्तु भविष्यवाणी के बाद ऐसे चुप हुए कि चुप होने की अवस्था में ही गुज़र गए।

अतः भविष्यवाणी तीन प्रकार से पूरी हुई।

प्रथम - अपनी शर्त की दृष्टि से कि शर्त पर अमल करने से उसका लाभ आथम को दिया गया।

द्वित्तीय - गवाही छुपाने के बाद जो मौत का वादा था उस वादे की दृष्टि से।

तृतीय - बराहीन अहमदिया के उस इल्हाम की दृष्टि से जो इस घटना से बारह वर्ष पूर्व हो चुका था। अब सोचो कि इस से बढ़कर यदि किसी भविष्यवाणी में सफाई होगी तो और क्या होगी। यदि कोई सच्चाई को छोड़ कर बातें बनाए तो हम उसका मुंह बंद नहीं कर सकते। परन्तु आथम के बारे में जो इल्हाम के शब्द हैं वे ऐसे स्पष्ट हैं कि एक सत्याभिलाषी को इन के मानने के अतिरिक्त कुछ बन नहीं पड़ता। और बराहीन अहमदिया का इल्हाम जो आथम साहिब के बारे में है जो इस भविष्यवाणी से लगभग बारह वर्ष पूर्व समस्त इस्लामी जगत में प्रकाशित हो चुका है उस पर विचार करने वाले तो सज्दे में गिरेंगे कि कैसा अन्तर्यामी ख़ुदा है जिसने पहले से भविष्य की उन समस्त घटनाओं और झगड़ों की सूचना दे दी।

चूंकि अधिकतर दुनिया वालों को आजकल उस श्रेष्ठतर अस्तित्व पर ईमान नहीं है इसलिए उनके विचार सुधारणा की ओर जाने की अपेक्षा कुधारणा की ओर अधिक जाते हैं। यह बिल्कुल ग़लती है कि सरकार ने लेखराम के मुकद्दमः में सुस्ती की है आथम ने मुकदमः में यदि वह क़त्ल हो जाता तो सुस्ती न करती। हम कहते हैं कि निस्संदेह यह सरकार का कर्तव्य है कि हिन्दुओं और मुसलमानों को दोनों आंखों की तरह बराबर देखे। किसी की रियायत न करे जैसा कि वास्तव में यह न्याय करने वाली सरकार ऐसा ही कर रही है। परन्तु मैं पूछता हूँ कि क्या कोई सरकार ख़ुदा से भी लड़ सकती है। निस्संदेह सरकार का कर्तव्य है कि किसी नीच ख़ूनी को पकड़े, उसको फांसी दे और बुरे से बुरे दण्ड के साथ उसे चेतावनी दे ताकि दूसरे नसीहत पकड़ें और देश में अमन स्थापित रहे। यदि आथम क़त्ल हो जाता तो निस्संदेह उस व्यक्ति को फांसी दी जाती जो आथम का क़ातिल होता। इसी प्रकार जब सिद्ध होगा कि लेखराम का क़ातिल अमुक व्यक्ति है और वह गिरफ़्तार होगा तो इसी प्रकार उसे भी फांसी मिलेगी। गवर्नमेंट का इसमें क्या कुसूर है? और कौन सी

सुस्ती? किस क़ातिल को आर्य साहिब किस सबूत के साथ गिरफ़्तार कराना चाहते हैं जिसके पकड़ने में सरकार असमंजस में है? परन्तु सरकार ख़ुदा की भविष्यवाणियों में हस्तक्षेप नहीं कर सकती। सरकार उस ओर जितना ध्यान देगी उतना ही इन भविष्यवाणियों को आकाशीय, निःस्वार्थ और पवित्र पाएगी। क्योंकि यह सरकार ईसाई है और उस ख़ुदा की इन्कारी नहीं है जो गुप्त रहस्यों को जानता है और आने वाले युग की इस प्रकार से ख़बर दे सकता है कि जैसे वह मौजूद है। क्या छः वर्ष की मीआद वर्णन करना और ईद के दूसरे दिन का पता देना और मृत्यु का रूप वर्णन कर देना यह ख़ुदा से होना असंभव है? यदि ख़ुदा से असंभव है तो इन शर्तों के साथ मनुष्य की अपनी भविष्यवाणी क्योंकर संभव है। क्या इतने अधिक लम्बे समय की ऐसी सही खबरें देना मनुष्य का कार्य है।? यदि है तो दुनिया में कोई इसका उदाहरण प्रस्तुत करे। सरकार को यह गर्व होना चाहिए कि इस देश में और उसके बादशाहत के काल में ख़ुदा अपने कुछ बन्दों से वह संबंध पैदा कर रहा है कि जो किस्सों और कहानियों के तौर पर पुस्तकों में लिखा हुआ है इस देश पर यह रहमत है कि आकाश पृथ्वी से करीब हो गया है अन्यथा दूसरे देशों में इसका उदाहरण नहीं।

यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि पंजाब के विभिन्न स्थानों से मेरे पास कई पत्र पहुंचे हैं जिनमें कुछ आर्य सज्जनों के जोशों और अनुचित योजनाओं की चर्चा है। मेरे पास वे पत्र सुरिक्षत मौजूद हैं, और यहां के कुछ आर्यों को मैंने वे पत्र दिखा दिए हैं। अतः एक पत्र जो गुजरांवाला से एक सम्माननीय और रईस का मुझे पहुंचा है उस का विषय यह है कि इस स्थान पर दो दिन तक लेखराम का मातम (शोक) का जल्सा होता रहा और क़ातिल को गिरफ़्तार करने वाले के लिए हज़ार रुपया इनाम तय पाया है और दो सौ उसके लिए, जो पता बताए और बाहर से सुना गया है कि एक गुप्त अंजुमन आपके क़त्ल के लिए आयोजित हुई है।★ और इस अंजुमन के सदस्य करीब करीब शहरों के लोग (जैसे लाहौर,

★ **हाशिया-** यही ख़बर संक्षिप्त तौर पर पैसा अख़बार में भी लिखी है। इसी से

अमृतसर, बटाला और विशेष गुजरांवाला के हैं।) चुने गए हैं। और प्रस्ताव यह है कि बीस हज़ार रूपया चन्दा होकर किसी दुष्ट लालची को इस कार्य के लिए मामूर (आदिष्ट) करें। ताकि वह अवसर पाकर क़त्ल कर दे।★अत: दो हज़ार रुपए तक चन्दे का प्रबन्ध हो भी गया है। शेष दूसरे शहरों और देहात से वसूल किया जाएगा। फिर इसके पश्चात् वह लिखते हैं कि "यद्यपि आप सच्चे संरक्षक की सहायता में हैं तथापि सामानों की रियायत आवश्यक है। और मेरे नज़दीक ऐसे समय में दुष्ट मुसलमानों से बचना अनिवार्य है क्योंकि वे लालची और बुरी प्रकृति वाले हैं। कुछ आश्चर्य नहीं कि वह प्रत्यक्ष तौर पर बैअत में सम्मिलित होकर आर्यों के लालच देने से इस कार्य के लिए साहस करें।" फिर वे लिखते हैं कि "मुझे यह भी मालूम हुआ है कि इस क़त्ल के मशवरे के मुखिया उस शहर के कुछ वकील और कुछ सरकारी पदाधिकारी तथा कुछ आर्य रईस और लाहौर के प्रमुख हैं। जितनी सूचना मुझे पहुंची है मैंने बता दी अल्लाह अधिक जानता है।" इसी की पुष्टि करने वाला एक पत्र पिण्डदादन ख़ान से तथा कई अन्य स्थानों से पहुंचे हैं और विषय क़रीब क़रीब है। ये सब पत्र सुरक्षित हैं। और जिस जोश को कुछ आर्यों के अख़बार ने व्यक्त किया है वह बता रहा है कि ऐसे जोश के समय में यह विचार दूर नहीं हैं। अत: अख़बार पंजाब समाचार लाहौर के परिशिष्ट में मेरे बारे में ये कुछ पंक्तियां लिखी हैं। "एक साहिब ने अपनी लिखित पुस्तक 'मौऊद मसीही' में यह भविष्यवाणी भी की कि पंडित लेखराम छ: वर्ष के समय में ईद के दिन अत्यन्त कष्टदायक हालत में मरेगा। यह भविष्यवाणी अब करीब थी क्योंकि संभवत: 1897 ई० छठा वर्ष था और 5 मार्च 1897 अन्तिम ईद छठे वर्ष की थी। स्पष्ट तौर पर लेख और भाषण के

★ **हाशिया-** बराहीन अहमदिया का वह इल्हाम अर्थात يا عيسٰى انّى متوفيك जो सत्रह वर्ष से प्रकाशित हो चुका है उसके इस समय ख़ूब अर्थ खुले। अर्थात यह इल्हाम हज़रत ईसा के उस समय बतौर सांत्वना हुआ था जब यहूदी उन्हें सलीब पर मारने के लिए प्रयास कर रहे थे और यहां यहूदियों की बजाए हिन्दू प्रयास कर रहें हैं। और इल्हाम के यह मायने हैं कि मैं तुझे ऐसी अपमानजनक और लानती मौतों से बचाऊंगा। देखो इस घटना ने हज़रत ईसा का नाम इस ख़ाकसार पर कैसा चरितार्थ कर दिया है। इसी से

माध्यम से कहा करते थे कि पंडित को मार डालेंगे और इसके अतिरिक्त यह कि पंडित इस अवधि में तथा अमुक दिन में एक कष्टदायक हालत में मरेगा। क्या आर्य धर्म के इस विरोधी और कुछ एक पुस्तकों के लेखक को (अर्थात् इस ख़ाकसार को) इस षडयंत्र से कुछ संबंध नहीं है?" इस अख़बार वाले ने और इसी प्रकार दूसरों ने इस भविष्यवाणी से यह परिणाम निकाला है कि यह एक षडयंत्र था जो भविष्यवाणी के तौर पर प्रसिद्ध किया गया। जैसा कि वह उसी अख़बार के दूसरे पृष्ठ में लिखता है कि- "कि यह क़त्ल कई लोगों का लंबे समय का सोचा समझा और पुख्ता षड्यंत्र का परिणाम है।" हम इस बात को स्वयं मानते और स्वीकार करते हैं कि भविष्यवाणी की व्याख्या में बार-बार ख़ुदा के समझाने से यही लिखा गया था कि वह रौद्र रूप में प्रकट होगी और यह कि लेखराम की मृत्यु किसी बीमारी से नहीं होगी अपितु ख़ुदा किसी ऐसे को उस पर हावी करेगा जिसकी आंखों से खून टपकता होगा परंतु जो पंजाब समाचार 10 मार्च 1897 ई० में इल्हाम के हवाले से ईद का दिन लिखा है यह उसकी ग़लती है इल्हाम की इबारत यह है-

ستعرف یوم العید والعید اقرب

अर्थात् तू उस निशान के दिन को जो ईद के समान है पहचान लेगा और ईद उस निशान के दिन से बहुत करीब होगी। यह ख़ुदा ने खबर दी है कि ईद का दिन क़त्ल के दिन के साथ मिला हुआ होगा और ऐसा ही हुआ। ईद जुम्अः को हुई और शनिवार को जो शवाल 1341 हिजरी की दूसरी तिथि थी लेखराम क़त्ल हो गया।

अत: इस सम्पूर्ण भविष्यवाणी का सारांश यह है कि यह एक रौद्ररूप घटना होगी जो 6 वर्ष के अंतर घटित होगी और वह दिन ईद के दिन से मिला हुआ होगा अर्थात् शवाल की दूसरी तिथि होगी। अब सोचो क्या यह मनुष्य का कार्य है कि तिथि बताई गई दिन बताया गया मृत्यु का कारण बताया गया और इस घटना का रौद्ररूप में घटित होना बताया गया इस का सम्पूर्ण चित्र बरकातुद्दुआ के लेख में किया गया। क्या यह किसी योजना बनाने वाले का कार्य हो सकता

है कि छः वर्ष पहले ऐसे स्पष्ट निशानों के साथ सूचना दे दे और वह सूचना पूरी हो जाए तौरात गवाही देती है कि झूठे नबी की भविष्यवाणी कभी पूरी नहीं हो सकती। ख़ुदा उसके मुकाबले पर खड़ा हो जाता है ताकि दुनिया तबाह न हो। जैसा कि लेखराम ने भी एक सांसारिक चालाकी से उन्हीं दिनों में मेरे बारे में यह विज्ञापन दिया था कि तुम तीन वर्ष की अवधि तक मर जाओगे तो क्यों वह किसी क़ातिल से षड्यंत्र न कर सका था कि उसकी बात पूरी होती।

एक और बात विचारणीय है कि यह कुधारणा है कि उनके किसी मुरीद ने मार दिया होगा। यह शैतानी विचार है प्रत्येक बुद्धिमान समझ सकता है कि मुरीदों का मुर्शिद के साथ एक नाज़ुक संबंध होता है पर विश्वास का आधार तक़्वा (संयम) पवित्रता और सदाचार पर होता है लोग जो किसी के मुरीद होते हैं वह इसी नीयत से मुरीद होते हैं कि वे समझ लेते हैं कि यह व्यक्ति ख़ुदा वाला है इसके दिल में कोई छल और ख़राबी की बात नहीं। तो यदि वह एक ऐसा दुराचारी और लानती व्यक्ति है जो किसी की मौत की झूठी भविष्यवाणी अपनी ओर से बनाता है और फिर जब उस की मीआद समाप्त होने पर होती है तो किसी मुरीद के आगे हाथ जोड़ता है मेरा सम्मान रख ले और अपने गले में रस्सा डाल और मुझे सच्चा कर के दिखा। अब मैं इन्साफ करने वालों से पूछता हूं कि क्या ऐसे अपवित्र लानती मनुष्य का या चाल चलन देख कर और यह शैतानी योजना सुन कर कोई मुरीद उस का श्रद्धालु रह सकता है? क्या वह मुर्शिद को दुराचारी, लानती और पापी नहीं समझेगा? और क्या उसको यह नहीं कहेगा कि हे दुराचारी! हमारे ईमान को ख़राब करने वाले क्या तेरी भविष्यवाणियों की वास्तविकता यही थी, क्या तेरा यही इरादा है कि झूठ तो तू बोले और रस्सा किसी दूसरे के गले में पड़े और इस प्रकार तेरी भविष्यवाणी पूरी हो।

संसार में जितने नबी या रसूल गुज़रे हैं या आगे मामूर और मुहद्दिस हों कोई व्यक्ति उनके मुरीदों में इस हालत में सम्मिलित नहीं हो सकता था न होगा जब कि उनको धोखेबाज़ और षड्यंत्र करने वाला समझता हो। यह पीरी-मुरीदी का रिश्ता बहुत ही नाज़ुक रिश्ता है। थोड़ी सी कुधारणा से इसमें अन्तर आ जाता

है। मैंने एक बार अपने मुरीदों की जमाअत में देखा कि उनमें से कुछ केवल इस कारण से मेरे बारे में सन्देह में पड़ गए कि मैंने एक बीमारी के कारण जिसके बारे में उन्हें जानकारी नहीं थी नमाज़ में अत्तहिय्यात के बैठते में दाहिने पैर को खड़ा नहीं रखा था इतनी बात में दो आदमी बातें बनाने लगे और सन्देहों में पड़ गए कि यह सुन्नत के विरुद्ध है। एक बार मैंने चाय की प्याली बाएं हाथ से पकड़ी क्योंकि मेरे दाहिने हाथ की हड्डी टूटी हुई और कमज़ोर है। इसी पर कुछ ने मीन-मेख की कि सुन्नत के विरुद्ध है। और हमेशा ऐसा होता रहता है कि कुछ नए मुरीद छोटी-छोटी बातों पर अपनी अनभिज्ञता से आज़माइश में पड़ जाते हैं और छोटे-छोटे घरेलू मामलों तक मीन- मेख शुरू कर देते हैं। जैसा कि हज़रत मूसा को भी इसी प्रकार कष्ट देते थे। क्योंकि इस्लाम एक ऐसा धर्म है कि इसके अनुयायी प्रत्येक मनुष्य के कथन एवं कर्म को ईमानदारी और संयम के मापदण्ड से नापते हैं। और यदि इसके विपरीत पाते हैं तो फिर तुरन्त उस से पृथक हो जाते हैं।

अत: सोचना चाहिए कि यह क्योंकर संभव है कि ऐसे लोग उस बदमाश व्यक्ति के साथ वफ़ा कर सकें जिसका सम्पूर्ण कारोबार धोखों और षड्यंत्रों से भरा हुआ है और लोगों को निर्दोषों के ख़ून करने के लिए मामूर करना चाहता है ताकि उसकी नाक न कटे और भविष्यवाणी पूरी हो। कोई मनुष्य जानबूझकर अपने ईमान को बर्बाद करना नहीं चाहता। फिर यदि ऐसे षड्यंत्र में कष्ट कल्पना के तौर पर कोई मुरीद सम्मिलित हो तो समस्त मुरीदों में यह बात कैसे गुप्त रह सकती है। और स्पष्ट है कि हमारी जमाअत में बड़े-बड़े प्रतिष्ठित लोग सम्मिलित हैं, बी.ए, एम.ए, तहसीलदार, डिप्टी कलक्टर,एक्स्ट्रा असिस्टेन्ट बड़े-बड़े व्यापारी और एक जमाअत उलेमा और विद्वानों की। तो क्या यह सम्पूर्ण गिरोह लुच्चों और बदमाशों का है? हम बुल्नद आवाज़ से कहते हैं कि हमारी जमाअत अत्यन्त नेक चलन, सभ्य और संयमी लोग हैं। कहां है कोई ऐसा अपवित्र और लानती हमारा मुरीद जिस का यह दावा हो कि हम ने उस को लेखराम के क़त्ल के लिए मामूर (आदिष्ट) किया था? हम ऐसे मुर्शिद को और साथ ही ऐसे मुरीद

को कुत्तों से अधिक बुरा और अत्यन्त अपवित्र जीवन वाला समझते हैं। कि जो अपने घर से भविष्यवाणियां बनाकर फिर अपने हाथ से अपने छल से अपने कपट से उनके पूरे होने के लिए कोशिश करे और कराए।

अतः अफसोस कि अख़बार पंजाब समाचार 10 मार्च 1897 ईसवी में षड्यंत्र का आरोप जो हम पर लगाया है यह कितना सच्चाई का ख़ून है। मैं अख़बार वाले से पूछता हूं कि आप लोगों में भी बड़े-बड़े अवतार गुज़रे हैं। जैसे राजा रामचंद्र साहिब और राजा कृष्ण साहिब क्या आप लोग उनके बारे में यह गुमान करते हैं कि उन्होंने भविष्यवाणी करके फिर अपना सम्मान रखने के लिए ऐसा जतन किया हो कि अपने चेले से चापलूसी और खुशामद की हो कि उसको अपनी कोशिश से पूरा करके मेरा सम्मान रख लें और फिर उनके चेले उनको अच्छा आदमी समझते हों। हां यह तो हो सकता है कि एक बदमाश डाकू के साथ और कुछ बदमाश जमा हों और ऐसे कार्य गुप्त तौर पर करें। परंतु मेरे इस मुरीदों के सिलसिले में जिसके साथ महदी मौऊद और मसीह मौऊद होने का दावा भी बड़े ज़ोर से है ये नीचता के कार्य मेल नहीं खा सकते। प्रत्येक मुरीद इस बुलंद दावे को देखकर अत्यंत उच्च से उच्च संयम का नमूना देखना चाहता है। तो क्यों कर संभव है कि दावा तो यह हो कि मैं समय का ईसा हूं और झूठी भविष्यवाणियों को इस प्रकार से पूरा करना चाहे कि मुरीदों के आगे हाथ जोड़े कि मुझ से गलती हो गई मेरी ग़लती को छुपाओ। जाओ आप मरो और किसी प्रकार मेरी भविष्यवाणी सच्ची करो या क्या ऐसा मुर्दार एक पवित्र जमाअत का मालिक हो सकता है? कहां है तुम्हारी पवित्र अन्तरात्मा, हे सभ्य आर्यो! और कहां है स्वाभाविक प्रवीणता, हे आर्य क़ौम के बुद्धिमानो! हमारा यह सिद्धान्त है कि समस्त मानवजाति की हमदर्दी करो। यदि एक व्यक्ति एक हिन्दू पड़ोसी को देखता है कि उसके घर में आग लग गई और यह नहीं उठता कि आग बुझाने में सहायता करे तो मैं सच-सच कहता हूं कि वह व्यक्ति मुझ में से नहीं है। यदि एक व्यक्ति हमारे मुरीदों में से देखता है कि एक ईसाई को कोई क़त्ल करता है और वह उस को छुड़ाने के लिए सहायता नहीं करता है

तो मैं तुम्हें बिल्कुल सच-सच सहता हूं कि वह हम में से नहीं है। इस्लाम इस क़ौम के बदमाशों का ज़िम्मेदार नहीं है। कुछ लोग एक एक रुपए के लालच पर बच्चों का खून कर देते हैं ऐसी घटनाएं प्राय: स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों से हुआ करती हैं और विशेषत: हमारी जमाअत जो नेकी और संयम सीखने के लिए मेरे पास एकत्र है वह इसलिए मेरे पास नहीं आते कि मुझसे डाकुओं का कार्य सीखें और अपने ईमान को बर्बाद करें। मैं क़सम खा कर कहता हूं और सच कहता हूं कि मुझे किसी क़ौम से शत्रुता नहीं। हां जहां तक संभव है उनकी आस्थाओं का सुधार चाहता हूं यदि कोई गालियां दे तो हमारी शिकायत ख़ुदा के दरबार में है न कि किसी अन्य अदालत में। इसके बावजूद मानवजाति की हमदर्दी हमारा अधिकार है। हम इस समय क्योंकर और किन शब्दों से आर्य सज्जनों के दिलों को सांत्वना दें कि बदमाशी की चालें हमारा तरीका नहीं है। एक मनुष्य की जान जाने से तो हम दुखी हैं और ख़ुदा की यह भविष्यवाणी पूरी होने से हम प्रसन्न भी हैं क्यों प्रसन्न हैं? केवल क़ौम की भलाई के लिए। काश कि वे सोचें और समझें कि इस उच्च कोटि की सफाई के साथ कई वर्ष पूर्व खबर देने वाला यह मनुष्य का कार्य नहीं है। हमारे दिल की इस समय विचित्र हालत है। दर्द भी है और ख़ुशी भी। दर्द इसलिए कि यदि लेखराम रुजू करता अधिक नहीं तो इतना ही करता गालियों से रुक जाता तो मुझे अल्लाह तआला की क़सम है कि मैं उसके लिए दुआ करता और मैं आशा रखता था कि यदि वह टुकड़े टुकड़े भी किया जाता तब भी जीवित हो जाता। वह ख़ुदा जिसको मैं जानता हूं उससे कोई बात अनहोनी नहीं और ख़ुशी इस बात की है कि भविष्यवाणी अत्यंत सफाई से पूरी हुई। आथम की भविष्यवाणी पर भी उसने दोबारा प्रकाश डाला। काश अब लोग सोचें और समझें और क़ौम के मध्य से वैर और शत्रुताएं दूर हो जाएं। क्योंकि वैर और शुत्रता का जीवन मृत्यु के क़रीब क़रीब है।

और यदि अब भी किसी संदेह करने वाले का संदेह दूर नहीं हो सकता और मुझे इस क़त्ल के षड्यंत्र में भागीदार समझता है जैसा कि हिंदू अख़बारों ने व्यक्त किया है तो मैं एक नेक सलाह देता हूं जिससे समस्त किस्से का **फैसला**

हो जाए और वह यह है कि **ऐसा व्यक्ति** मेरे सामने **क़सम** खाए जिसके शब्द ये हों कि- "मैं निस्संदेह जानता हूं कि यह व्यक्ति क़त्ल के षड्यंत्र में भागीदार या इसके आदेश से क़त्ल की घटना हुई है। अत: यदि यह सही नहीं है तो हे शक्तिमान ख़ुदा **एक वर्ष** के अंदर मुझ पर वह अज़ाब उतार जो भयानक अज़ाब हो परन्तु किसी मनुष्य के हाथों से न हो और न मनुष्य की योजनाओं का उसमें कुछ हस्तक्षेप समझा जा सके।"

फिर यदि यह व्यक्ति एक वर्ष तक मेरी बद्दुआ से बच गया तो मैं अपराधी हूं और उस दंड के योग्य हूं जो एक क़ातिल के लिए होना चाहिए अब कोई बहादुर **कलेजे वाला** आर्य है जो इस प्रकार से समस्त संसार को संदेहों से छुड़ाए तो इस उपाय को ग्रहण करे। यह उपाय अत्यंत सादा और ईमानदारी का फैसला है शायद इस उपाय से हमारे विरोधी मौलवियों को भी लाभ पहुँचे। मैंने सच्चे दिल से यह लिखा है परंतु स्मरण रहे कि ऐसी आज़माइश करने वाला स्वयं क़ादियान में आए उसका किराया मेरे ज़िम्मा होगा। दोनों पक्षों के लेख प्रकाशित हो जाएँगे। यदि ख़ुदा ने उसको ऐसे अज़ाब से **न मारा** जिस में मनुष्य के हाथों का हस्तक्षेप न हो तो मैं झूठा ठहरूंगा। **और समस्त संसार गवाह रहे** कि इस अवस्था में मैं उसी दण्ड के योग्य ठहरूंगा जो क़त्ल के अपराधी को देना चाहिए मैं इस स्थान से दूसरे स्थान नहीं जा सकता मुक़ाबला करने वाले को स्वयं आना चाहिए। परंतु मुक़ाबला करने वाला एक ऐसा व्यक्ति हो जो हृदय का बहुत बहादुर, जवान और सुदृढ़ हो। अब इसके बाद बड़ी निर्लज्जता होगी कि कोई गुप्त तौर पर मुझ पर ऐसे अपवित्र संदेह करे। मैंने फैसले का उपाय सामने रख दिया है यदि मैं इसके बाद विमुख हो जाऊं तो मुझ पर ख़ुदा की लानत। और यदि कोई ऐतराज़ करने वाला झूठे आरोपों से न रुके और फैसले के इस उपाय से छान-बीन करने का अभिलाषी न हो तो उस पर लानत। हे जल्दबाज़ लोगो! जैसा कि तुम्हारा गुमान है मुझे किसी क़ौम से शत्रुता नहीं प्रत्येक मनुष्य से हमदर्दी है। और जहां तक मेरे शरीर में शक्ति है इस हमदर्दी में लगा हूं और मैं जैसा कि क़ौमों का हमदर्द हूं ऐसा ही अंग्रेज़ी सरकार का कृतज्ञ और सच्चे

हृदय से उस का शुभ चिन्तक हूं और उत्पात फैलाने वालों से हार्दिक तौर से विमुख हूं।

एक और नुक्त: स्मरण रखने योग्य है कि पण्डित लेखराम के बारे में जो भविष्यवाणी की गई थी उस के घटित होने से सत्रह वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में इस भविष्यवाणी की सूचना दी गई है। जैसा की बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 241 में यह इल्हाम है

لن ترضی عنك الیھود ولا النصاریٰ۔ و خرقوا لهٗ بنینَ و بنات بغیر علم۔ قل ھواللّٰہ احد اللّٰہ الصَمَد لَم یَلد و لم یولَد ولم یکن له کفوا احد۔ ویمکرون و یمکر اللّٰہ واللّٰہ خیر الماکرین۔ الفتنة ★ھھنا فاصبر کما صَبَرَ اولوا العزم۔ قل رب ادخلنی مدخل صدق ولا تیئس من روح اللّٰہ الا ان روح اللّٰہ قریب۔ الا ان نصر اللّٰہ قریب۔ یاتیك من کل فج عمیق۔ یاتون من کل فج عمیق۔ ینصرك اللّٰہ من عنده۔ ینصرك رجال نوحی الیھم من السماء۔ لا مبدل لکلمات اللّٰہ۔ انا فتحنالك فتحا مبینا

अर्थात् पादरी लोग और यहूदी सिफत मुसलमान तुझ से राज़ी नहीं होंगे और उन्होंने ख़ुदा के बेटे और बेटियां बना रखी हैं उनको कह दे कि ख़ुदा

★ **हाशिया-** बराहीन अहमदिया में तीन फित्नों का वर्णन है-

प्रथमः बड़ा फ़ित्नः ईसाई पादरियों का जिन्होंने धोखे से समस्त संसार में शोर मचा दिया के आथम की भविष्यवाणी झूठी निकली और यहूदियों के समान मौलवियों और उनके सहपंथी मुसलमानों को साथ मिला लिया। देखो पृष्ठ 241। **दूसरा** फ़ित्नः जो दूसरी श्रेणी पर है मुहम्मद हुसैन बटालवी का फ़ित्नः है इसके बारे में बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 510 में लिखा है:

و اذ یمکر بك الذی کفر اوقد لی یاھامان لعلی اطلع الی الٰہ موسیٰ۔ و انی لاظنه من الکاذبین۔ تبت یدا ابی لھب و تب ما کان له ان یدخل فیھا الا خائفا۔۔ وما اصابك فمن اللّٰہ۔ الفتنة ھھنا فاصبر کما صبر اولوا العزم۔ الا انھا فتنة من اللّٰہ لیحبّ حبّا جمّا۔ حبّا من اللّٰہ العزیز الاکرم عطاءً غیر مجذوذ

अर्थात् वह समय स्मरण रख, जब एक इन्कारी तुझ से छल करेगा और अपने दोस्त हामान को कहेगा कि फ़ित्नों की आग भड़का कि मैं मूसा के ख़ुदा पर सूचना पाना चाहता हूं और मैं गुमान करता हूं कि वह झूठा है। अबू लहब के दोनों हाथ तबाह हो गए और

ही है जो एक है और निस्पृह है, न उस का कोई बेटा है और न वह किसी का बाप और न कोई उसके बराबर है और ये लोग मक्र करेंगे (यह आथम की भविष्यवाणी के प्रकटन की ओर संकेत है) और ख़ुदा भी मक्र करेगा कि उनको थोड़ी मोहलत देगा ताकि अपने झूठे विचारों से प्रसन्न हो जाएं। और फिर फ़रमाया कि इस समय पादरियों और यहूदियों के समान मुसलमानों की ओर से एक उपद्रव फैलेगा अतः तू सब्र कर जैसा कि दृढ़ प्रतिज्ञ नबियों ने सब्र किया और ख़ुदा से अपनी सच्चाई का प्रकटन मांग अर्थात् दुआ कर कि भविष्यवाणी को छुपाने में जो जो पादरियों और यहूदियों जैसे मुसलमानों ने लोगों को धोखे दिए हैं वह धोखे दूर हो जाएं और फिर फ़रमाया कि ख़ुदा की रहमत से निराश मत हो, क्योंकि ख़ुदा की रहमत (दया) इस आज़माइश के बाद शीघ्र आएगी। ख़ुदा की सहायता प्रत्येक मार्ग से आएगी। लोग दूर-दूर से तेरे पास आएंगे। ख़ुदा निशान दिखाने के लिए अपने पास से तेरी सहायता करेगा अर्थात् बिना माध्यम

शेष हाशिया- वह स्वयं ही तबाह हो गया। उसको नहीं चाहिए था कि क़ाफिर ठहराने और झूठलाने के मामले में हस्तक्षेप करता परंतु यह कि डरता हुआ उन बातों को पूछ लेता कि जो उसकी समझ में नहीं आती थीं और तुझे जो कुछ पुहंचेगा वह ख़ुदा की ओर से है। इस जगह एक फ़ित्नः होगा अतः तुझे सब्र करना चाहिए जैसा कि दृढ़ प्रतिज्ञ नबी सब्र करते रहे। स्मरण रख कि वह फ़ित्ना ख़ुदा की ओर से होगा ताकि वह तुझ से बहुत ही प्रेम करे, ख़ुदा का प्रेम जो अल्लाह अज़ीज़ अक़रम है यह वह अनुदान है जो वापस नहीं लिया जाएगा। इस समय मुझे यह समझ आया कि इल्हाम में हामान से अभिप्राय नज़ीर हुसैन मुहद्दिस देहलवी है। चूंकि मुहम्मद हुसैन सर्वप्रथम उसके पास याचना ले गया और यह कहा कि **او قد لی یاھامان** (औक़द ली या हामान) इस का यह मतलब है कि काफिर ठहराने की **बुनियाद डाल दे** ताकि दूसरे उसका अनुकरण करें। इससे सिद्ध होता है कि नज़ीर हुसैन की आख़िरत तबाह है और संभव है कि अबू लहब से अभिप्राय नज़ीर हुसैन ही हो और मुहम्मद हुसैन का अंजाम इस आयत पर हो-

اٰمَنۡتُ اَنَّہٗ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا الَّذِیۡۤ اٰمَنَتۡ بِہٖ بَنُوۡۤا اِسۡرَآءِیۡلَ وَاَنَا مِنَ الۡمُسۡلِمِیۡنَ (यूनुस - 91)

क्योंकि ख़ाकसार के कुछ स्वप्न इस तावील के समर्थक हैं तो ख़ुदा की कृपा से कुछ आश्चर्य नहीं कि निरन्तर समर्थनों को देखकर अन्ततः तौबः करे और हामान मारा जाए।

के निशान दिखाएगा और वे लोग भी सहायता करेंगे जिनके हृदयों पर हम स्वयं आकाश से वही उतारेंगे अर्थात् कुछ निशान माध्यम के साथ भी हम प्रकट करेंगे मतलब यह कि कुछ भविष्यवाणियां सीधे तौर पर प्रकटन में आएंगी और कुछ के प्रकटन के लिए ऐसे मनुष्य माध्यम ठहर जाएंगे जिनके हृदयों में हम डाल देंगे। ख़ुदा की बातें कभी नहीं टलेंगी और कोई नहीं जो उन्हें रोक सके हम पादरियों के छल के बाद तुझे एक खुली खुली विजय देंगे।

इन इल्हामों में ख़ुदा तआला ने स्पष्ट शब्दों में फरमा दिया कि पहले पादरी लोग और यहूदियों जैसे मुसलमान छल की दृष्टि से भविष्यवाणी की सच्चाई को छुपाएंगे ताकि तेरी सच्चाई छुपी रहे और प्रकट न हो/ तत्पश्चात् यों होगा कि हम इरादा करेंगे कि तेरी सच्चाई प्रकट हो और तेरी भविष्यवाणियों की सच्चाई खुल जाए। तब हम दो प्रकार के निशान प्रकट करेंगे। एक वे जिन में मनुष्य के कार्यों का हस्तक्षेप नहीं जैसे धार्मिक महोत्सव में **पहले से प्रकट किया गया कि यह लेख समस्त लेखों पर विजयी रहेगा और इस भविष्यवाणी के पूरा करने में मनुष्यों का तनिक भी हस्तक्षेप नहीं होगा।** अतः ऐसा ही हुआ अपितु विरोधपूर्ण प्रयास हुए और प्रत्येक चाहता था कि मेरा लेख विजयी रहे।

शेष हाशिया- तीसरा फ़ित्नः जो तीसरी श्रेणी पर है लेखराम की मृत्यु का फ़ित्नः है अर्थात् आर्यों की कुधारणाओं और उनकी ओर से हानि पहुंचाने के लिए गुप्त प्रयास जैसा कि पैसा अख़बार में भी उनके कत्ल की चर्चा है और बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 557 में इस फ़ित्नः और इसके साथ के निशान के बारे में यह इल्हाम है- **मैं अपनी चमकार दिखलाऊंगा अपनी क़ुदरत के प्रदर्शन से तुझ को उठाऊंगा दुनिया में एक नज़ीर आया पर दुनिया ने उसे स्वीकार ना किया परंतु ख़ुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े ज़ोरदार आक्रमणों से उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा।**

الفتنة ھھنا فاصْبِر کما صبر اولوا العزم فلما تجلّٰی ربّه للجبل جعله دکّا

अर्थात् यह एक फ़ित्नः होगा। अतः सब्र कर। और जब ख़ुदा कठिनाइयों के पहाड़ पर झलक दिखलाएगा तो उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर देगा। ये बराहीन अहमदिया के इल्हाम हैं परन्तु इस लेख के समय में भी एक इल्हाम हुआ और वह यह है- **सलामत बर तू ऐ मर्दे सलामत।**

अन्ततः भविष्यवाणी के विषय के अनुसार हमारा लेख विजयी हुआ और दूसरे बराहीन अहमदिया के उन इल्हामों में वादा था कि हम दो निशान प्रकट करेंगे जिन में मनुष्य के कार्यों का हस्तक्षेप होगा। अतः इसके अनुसार लेखराम के बारे में भविष्यवाणी प्रकट हुई। क्योंकि यह निशान माध्यम के साथ प्रकट हुआ और किसी ने लेखराम को क़त्ल कर दिया। तो स्पष्ट है कि इस भविष्यवाणी में ख़ुदा ने किसी मनुष्य के हृदय को उभारा ताकि उसे क़त्ल करे और प्रत्येक पहलू से उसे अवसर दिया ताकि वह अपना काम अंजाम तक पहुंचा दे।★ तो ख़ुदा तआला ने महान विजय का वर्णन करने से पूर्व भविष्यवाणी को प्रकट करने के लिए दो विभिन्न वाक्यों को वर्णन किया। प्रथम - यह कि -

يَنْصُرُكَ اللّٰهُ مِنْ عِنْدِهٖ

द्वितीय - यह कि -

يَنْصُرُكَ رِجَالٌ نُوْحِيْ اِلَيْهِمْ مِنَ السَّمَآءِ

इस विभाजन का यही कारण है कि ख़ुदा तआला ने पादरियों को लज्जित करने के लिए फ़रमाया कि यदि तुमने हमारे एक निशान को छुपाना चाहा तो क्या हानि है हम उसके बदले में दो निशान प्रकट करेंगे। एक वह निशान जो बिना माध्यम हमारे हाथ से होगा और दूसरा वह निशान जो ऐसे लोगों के हाथ से प्रकट होगा जिनके हृदयों में हम डाल देंगे कि तुम ऐसा करो तब महान विजय होगी। अब इन्साफ से देखो और ईमान से दृष्टि डालो कि यह दोनों निशान अर्थात् निशान धार्मिक महोत्सव और लेखराम की मृत्यु का निशान जो बराहीन अहमदिया के प्रकाशित होने के सत्रह वर्ष पश्चात् प्रकटन में आए हैं। क्या यह मनुष्य की शक्ति हो सकती है ?

★ **हाशिया-** पैसा अख़बार और सफीर गवर्नमेंट में लिखा है कि लेखराम का एक औरत से अवैध संबंध था अर्थात वह उस औरत के किसी वारिस के हाथ से क़त्ल किया गया। कैसी अपमानजनक मृत्यु है यदि इसी का नाम शहादत है तो जैसे यों कहना चाहिए मैं किसी औरत की निगाह की छुरी से शहीद हो चुका था अन्त में वही छुरी कोप के रूप में उस को लग गई। यदि क़त्ल का कारण यही है तो लेखराम के पवित्र जीवन का अच्छा सबूत है। इसी से।

यह भी स्पष्ट है कि जलसा मज़ाहिब (महोत्सव) से पहले जो इल्हामी विज्ञापन प्रकाशित किए गए थे उनमें स्पष्ट तौर पर लिखा गया था कि ख़ुदा ने मुझे ख़बर दी है कि यह निबंध समस्त निबंधों पर विजयी रहेगा। अत: ऐसा ही हुआ। देखो अख़बार "सिविल मिलिट्री गज़ट", अख़बार "आवज़र्वर", "मुख्बर-ए-दकन", पैसा अख़बार, सिराजुल अख़बार, मुशीरे हिन्द, वज़ीरे हिन्द सियालकोट, सादिक़ुल अख़बार बहावलपुर। तो ख़ुदा का यह कार्य बिना माध्यम था कि प्रत्येक हृदय की इच्छा के विरुद्ध उन से इक़रार कराया कि वही निबन्ध विजयी रहा। परन्तु दूसरे निशान में क़ातिल के हृदय में क़त्ल की इच्छा डाल दी और इस प्रकार से दोनों निशान बिना माध्यम और माध्यम के साथ ख़ुदा की सृष्टि को दिखा कर, पादरियों और इस्लामी मौलवियों तथा हिन्दुओं के छल को **एक पल में टुकड़े-टुकड़े कर दिया** और संभव न था कि वे अपनी शरारतों से रुक जाते जब तक ख़ुदा ऐसे खुले - खुले निशान प्रकट न करता। इसी की ओर वह बराहीन अहमदिया के पृष्ठ- 506 में संकेत करता है और कहता है -

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَ الْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ وَ كَانَ كَيْدُهُمْ عَظِيْمًا

अर्थात् संभव न था कि ईसाई और विरोधी मुसलमान और हिन्दू अपने इन्कारों से रुक जाते जब तक उन को खुला - खुला निशान न मिलता। और उनका छल बहुत बड़ा था। तत्पश्चात् इसी पृष्ठ पर फ़रमाया कि यदि ख़ुदा ऐसा न करता तो दुनिया में अंधेर पड़ जाता। यह इस बात की ओर संकेत है कि पादरियों ने आथम की भविष्यवाणी को अपने छुपाने के कारण लोगों पर संदिग्ध कर दिया था। अत: लेखराम के बारे में जो भविष्यवाणी थी जिसकी धृष्टताओं ने सिद्ध कर दिया था कि वह रुजू करने वाला नहीं ऐसी ही गुप्त रह जाती तो समस्त सच मिट्टी में मिल जाता और मुर्ख लोगों के विचार बहुत अपवित्र हो जाते और अनपढ़ लोग करीब- करीब नास्तिकों के समान बन जाते। इसलिए आकाशों और पृथ्वियों के मालिक ने चाहा कि लेखराम

सच्च की अभिव्यक्ति का फ़िदया हो और सच्चे धर्म की सच्चाई प्रकट करने के लिए बतौर बलिदान हो जाए। तो वही हुआ जो ख़ुदा ने चाहा। एक मनुष्य के मारे जाने की हमदर्दी अपनी जगह है परन्तु यह बात बहुत से दिलों को अंधकार से निकालने वाली है कि ख़ुदा ने जलसा मज़ाहिब के निशान के बाद यह एक महान निशान दिखाया। चाहिए कि प्रत्येक रुह उस अस्तित्व को **सज्दा** करे जिसने एक बन्दे की जान लेकर हज़ारों लोगों को जीवित करने की बुनियाद डाली। फिर इसी भविष्यवाणी की ओर बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 522 में यह इल्हाम संकेत करता है कि-

"بخرام کہ وقت تو نزدیک رسید و پائے محمدیاں بر منار بلند تر محکم افتاد پاک محمد مصطفی نبیوں کا سردار رب الافواج اس طرف توجہ کرے گا۔"

इस निशान का उद्देश्य यह है कि पवित्र क़ुर्आन ख़ुदा की किताब और मेरे मुंह की बातें हैं।

तो जिस महान निशान का इस इल्हाम में वादा है वह यही है जिस से इस इल्हाम के अनुसार इस्लाम का कलिमा ऊंचा हुआ और बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 557 में इसी निशान का ज़िक्र है जिसका पहला वाक्य यह है कि मैं अपनी चमकार दिखलाऊंगा। अर्थात् एक प्रतापी (जलाली) निशान प्रकट करूंगा। और "सुर्मा चश्म आर्य" में एक कश्फ़ है जिसको ग्यारह वर्ष हो गए जिस का सारांश यह है कि ख़ुदा ने एक ख़ून का निशान दिखाया वह ख़ून कपड़ों पर पड़ा जो अब तक मौजूद है यह खून क्या था वही लेखराम का ख़ून था। ख़ुदा के आगे झुक जाओ! वह श्रेष्ठतर और निस्पृह है!!!

कुछ आर्य अख़बार वालों ने यह आश्चर्य किया कि लेखराम के बारे में जो भविष्यवाणी की गई है और उसकी अवधि बताई गई थी, दिन बताया गया था, मौत का माध्यम बताया गया। ये बातें कब हो सकती हैं जब तक एक भारी षड्यंत्र उसकी बुनियाद न हो। अत: समाचार लाहौर 10 मार्च 1897 ईसवी के परिशिष्ट और अनीस हिन्द मेरठ 10 मार्च 1897 ई के परिशिष्ट ने इस बारे में

बहुत ज़हर उगला है एडीटर अनीस हिन्द अपने पर्चे के पृष्ठ 13 में यह भी लिखा है कि हमारा माथा तो उसी समय ठनका था जब मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी ने आप की मृत्यु के बारे में भविष्यवाणी की थी अन्यथा इन हज़रत को क्या ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान था? अब स्पष्ट हो कि ये सब लोग स्वयं इस बात को समीक्षा योग्य ठहराते हैं कि क्या ख़ुदा ने इस व्यक्ति को ग़ैब का ज्ञान दिया था? और क्या ख़ुदा से ऐसा होना संभव है? तो इस समय हम बतौर नमूना कुछ अन्य भविष्यवाणियों को दर्ज करते हैं ताकि इन उदाहरणों को देखकर आर्य लोगों की आंखें खुलें और वे ये हैं-

प्रथम अहमद बेग होशियारपुरी की मृत्यु की भविष्यवाणी। जिसके बारे में लिखा गया था कि वह तीन वर्ष की मीआद में मर जाएगा और अवश्य है कि अपनी मृत्यु से पूर्व और संकट भी देखे। अत: उसने इस विज्ञापन के बाद अपने पुत्र के मरने का संकट देखा फिर उसकी बहन की अचानक मृत्यु की घटना उसकी नज़र के सामने हुई। तत्पश्चात् वह तीन वर्ष की मीआद के अन्दर स्वयं होशियारपुर में मृत्यु पा गया।★अब बताओ कि उसकी मृत्यु में मेरी ओर से किस के साथ षड्यंत्र हुआ था क्या तीव्र ज्वर के साथ?

दूसरी भविष्यवाणी: शेख मेहर अली रईस होशियारपुर के संकट के

★ **हाशिया-** इस भविष्यवाणी के दो भाग थे एक अहमद बेग के बारे में और एक उसके दामाद के बारे में और भविष्यवाणी के कुछ इल्हामों में जो पहले से प्रकाशित हो चुके थे यह शर्त थी कि तौबा और भय के समय मृत्यु में विलम्ब डाल दिया जाएगा। तो अफसोस कि अहमद बेग को इस शर्त से लाभ उठाना नसीब न हुआ। क्योंकि उस समय उसके दुर्भाग्य से उसने और उसके समस्त परिजनों ने भविष्यवाणी को इन्सानी छल-प्रपंच पर चरितार्थ किया और हंसी-ठट्ठा आरंभ कर दिया और वह हमेशा हंसी ठट्ठा करते थे कि भविष्यवाणी के समय ने अपना मुंह दिखा दिया और अहमद बेग एक तीव्र ज्वर के एक-दो दिन के आक्रमण से ही इस संसार से कूच कर गया। तब तो उनकी आंखें खुल गईं और दामाद की भी चिंता हुई और भय, तौब: नमाज़ रोज़ा में औरतें लग गईं और भय के कारण उनके कलेजे कांप उठे। तो अवश्य था कि इस स्तर के भय के समय खुदा अपनी शर्त के अनुसार कार्य करता। अत: वे लोग बहुत मूर्ख झूठे और अत्याचारी हैं जो कहते हैं कि दामाद के बारे में भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई अपितु वह नितांत स्पष्ट तौर पर वर्तमान अवस्था के अनुसार पूरी हो गई और और **दूसरे पहलू की प्रतीक्षा है।** इसी से

बारे में थी कि उस पर अकारण ख़ून का आरोप लगाया गया था कथित शेख होशियारपुर में जीवित मौजूद है उससे पूछो कि क्या उस मुक़द्दमे के लक्षण प्रकट होने से पूर्व मैंने **अपने ख़ुदा** से ख़बर पाकर उसे सूचना दी थी या नहीं?

तीसरी भविष्यवाणी: सरदार मुहम्मद हयात खान जज के बारे में उस समय की गई थी जबकि कथित सरदार एक अकारण के आरोप में गिरफ़्तार हो गए थे। अब पूछना चाहिए कि क्या वास्तव में कोई ऐसी भविष्यवाणी कथित खान के बरी होने के बारे में समय से पूर्व की गई थी या अब बनाई गई है और मुझे याद करता है कि इस भविष्यवाणी का बराहीन अहमदिया में भी ज़िक्र है।

चौथी भविष्यवाणी: सय्यिद अहमद खान के.सी.एस.आई के बारे में ख़ुदा तआला से इल्हाम पाकर 1 फरवरी 1886 ई० के विज्ञापन में की गई थी कि उनको कोई बहुत बड़ा आघात पहुंचने वाला है। अब सय्यिद अहमद खान साहिब से पूछना चाहिए कि इस भविष्यवाणी के बाद आपको कोई ऐसा बड़ा आघात पहुंचा है या नहीं जो साधारण रंज और ग़म न हो अपितु वह बात हो जो प्राणों को उथल - पुथल करने वाली हो।

पांचवीं भविष्यवाणी - मैंने अपने लड़के **महमूद** के जन्म के बारे में की थी कि वह अब पैदा होगा और उसका नाम महमूद रखा जाएगा और इस भविष्यवाणी के प्रसारित करने के लिए हरे रंग के काग़ज़ के विज्ञापन प्रकाशित किए गए थे जो अब तक मौजूद हैं और हज़ारों लोगों में बांटे गए थे। अत: वह लड़का भविष्यवाणी की मीआद में पैदा हुआ और अब नौवें वर्ष में है।★

★ **हाशिया-** कुछ मूर्ख केवल मूर्खता के कारण यह सन्देह प्रस्तुत करते हैं कि जब पहले लड़के का विज्ञापन दिया था उस समय लड़की क्यों पैदा हुई। परन्तु वे भली भांति जानते हैं कि इस आरोप में वे सर्वथा बेईमानी कर रहे हैं। यदि वे सच्चे हैं तो हमें दिखाएं कि पहले विज्ञापन में यह लिखा था कि पहले ही गर्भ में बिना माध्यम लड़का पैदा हो जाएगा और यदि पैदा होने के लिए कोई समय उस विज्ञापन में बताया नहीं गया था तो क्या ख़ुदा को अधिकार नहीं था कि जिस समय चाहता अपने वादे को पूरा करता। हां हरे विज्ञापन में स्पष्ट शब्दों में अविलम्ब लड़का पैदा होने का वादा था तो महमूद पैदा हो गया। यह भविष्यवाणी कितनी महान प्रतिष्ठा वाली है। यदि ख़ुदा का भय है तो पवित्र हृदय के साथ विचार करो। इसी से।

छठी भविष्यवाणी - शरीफ के बारे में जो मेरा तीसरा लड़का है की गई थी और पुस्तक " नूरुलहक़" में समय से पूर्व खूब प्रकाशित हो गई थी। अत: उसके अनुसार लड़का पैदा हुआ जो अब ख़ुदा की कृपा से कुछ दिनों तक दो वर्षों का होने वाला है।

सातवीं भविष्यवाणी - 1886 ई० के विज्ञापन में दिलीप सिंह के बारे में थी कि वह पंजाब आने के इरादे में असफल रहेगा और सैकड़ों हिन्दुओं तथा मुसलमानों को सार्वजनिक जल्सों में यह भविष्यवाणी सुनाई गई थी।

आठवीं भविष्यवाणी - जलसा मज़ाहिब (महोत्सव) के परिणाम के बारे में की थी कि इसमें मेरा निबन्ध विजयी रहेगा। और ये विज्ञापन लाहौर तथा अन्य स्थानों में समय से पूर्व हज़ारों हिन्दू और मुसलमानों में बाँट दिए गए थे। अब सिविल मिलिट्री गज़ट से पूछो और "आवज़र्वर" से प्रश्न करो और मुशीरे हिन्द, वज़ीर - ए- हिन्द, पैसा अख़बार, सादिक़ुल अख़बार, सिराजुल अख़बार और मुख़्बिर - ए- दकन को तनिक ध्यान पूर्वक पढ़ो ताकि मालूम हो कि किस ज़ोर से ख़ुदा के इल्हाम ने अपनी सच्चाई प्रकट की।

नौवीं भविष्यवाणी - क़ादियान के एक विशम्बरदास नामक हिन्दू के एक फौजदारी मुकद्दमे के बारे में थी। अर्थात् विशम्बर दास को एक वर्ष की क़ैद का मुकद्दमः हो गया था और शरमपत नामक उसके भाई ने जो तत्पर रहने वाला आर्य है मुझ से दुआ की याचना की थी और यह पूछा था कि इसका अंजाम क्या होगा। मैंने दुआ की और मैंने कश्फी तौर पर देखा कि मैं उस दफ़्तर में गया हूँ जहां उसकी क़ैद की मिस्ल थी। मैंने उस मिस्ल को खोला और वर्ष का शब्द काट कर उसके स्थान पर छः माह लिख दिया। फिर मुझे ख़ुदा के इल्हाम से बताया गया कि मिस्ल चीफ़ कोर्ट से वापस आएगी और वर्ष के स्थान पर छः माह रह जाएगी परन्तु बरी नहीं होगा। अत: मैंने यह समस्त कश्फ़ी घटनाएं शरमपत आर्य को जो अब तक जीवित मौजूद है नितान्त सफाई से बता दीं। और जब मैंने बताया और वे

बातें हूबहू प्रकटन में आ गईं तो उसने मेरी ओर लिखा कि आप ख़ुदा के नेक बन्दे हो इसलिए उसने ग़ैब की बातें प्रकट कर दीं। फिर मैंने बराहीन अहमदिया में यह पूर्ण इल्हाम और कश्फ़ प्रकाशित कर दिया। यह व्यक्ति शरमपत बहुत पक्षपाती आर्य है जिसने मेरे विचार में आर्य धर्म की सहायता में ख़ुदा की भी कुछ परवाह नहीं की। परन्तु बहर हाल ख़ुदा ने उसे मेरा गवाह बना दिया। यदि मैंने इस क़िस्से में एक कण भर झूठ बोला है तो वह क़सम खाकर इस निबन्ध का एक विज्ञापन प्रकाशित कर दे कि मैं परमेश्वर की क़सम खाकर कहता हूँ कि यह वर्णन सर्वथा झूठ है और यदि झूठ नहीं तो मुझ पर एक वर्ष तक भयंकर अज़ाब उतरे।★ **तो यदि उस पर वह विलक्षण अज़ाब न उतरे कि जनता बोल उठे कि यह ख़ुदा का अज़ाब है** तो मुझे जिस मृत्यु से चाहो मारो। इसमें मेरी ओर से यह शर्त है कि मनुष्य के द्वारा वह अज़ाब न हो। केवल सीधा आकाशीय अज़ाब हो।

यह तो संभव हैं कि यह व्यक्ति क़ौम के ध्यान से यों ही इन्कार कर दे या इस प्रस्तुत क़सम के बिना विज्ञापन भी दे दे। क्योंकि मैंने इस क़ौम में ख़ुदा का डर नहीं पाया। परन्तु संभव नहीं कि वह क़सम खाए यद्यपि दूसरे आर्य उसको मार दें। परन्तु यदि क़सम खा ले तो ख़ुदा का स्वाभिमान एक भारी निशान दिखाएगा कि दुनिया मैं फैसला हो जाएगा और पृथ्वी आकाशीय प्रकाश से भर जाएगी।

दसवीं भविष्यवाणी - यह है कि ख़ुदा ने पंडित दयानन्द के मरने से तीन या चार माह पहले मुझे उसकी मृत्यु की सूचना दी और मैंने उसी आर्य को जिस की इस से पूर्व चर्चा हो चुकी है ख़बर दे दी तथा कई लोगों को सूचना दी। तो इस इल्हाम के बाद उपरोक्त कथित समय तक कथित पंडित के मरने

★ **हाशिया** - जो कुछ शरमपत आर्य का क़िस्सा वर्णन किया गया है उसमें एक कण के बराबर अतिश्योक्ति की मिलावट नहीं। मैं ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहता हूँ कि यह बिल्कुल सच और सही है। अत: जो व्यक्ति मुझ पर अतिश्योक्ति और बात को अधिक कर देने का आरोप लगाए वह अन्याय करता है और अन्याय का इलाज वही है जो मैंने लिख दिया है। इसी से ।

की सूचना आ गई। यह भविष्यवाणी भी बराहीन अहमदिया में दर्ज है। यदि वह आर्य इन्कारी हो तो मेरा **वही उत्तर** है जो मैं पहले दे चुका हूँ।

ग्यारहवीं भविष्यवाणी - यह है कि ख़ुदा तआला ने इल्हाम द्वारा मुझे सूचना दी थी कि तुझे अरबी भाषा में एक चमत्कार पूर्ण बलागत-व-फ़साहत (सरस और सुबोध शैली) दी गई है और उसका मुक़ाबला कोई नहीं करेगा। इस भविष्यवाणी की ओर बराहीन अहमदिया के पृष्ठ- 239 में संकेत है जहां फ़रमाया है -

ان ھذا الا قول البشر و اعانہ علیہ قوم اٰخرون ۔ قل ھاتوا برھانکم ان کنتم صادقین۔ ھذا من رحمۃ ربک یتم نعمتہ علیک لیکون آیۃ للمومنین

अर्थात् विरोधी कहेंगे कि यह तो मनुष्य का कथन है और लोगों ने इसकी सहायता की है। कह इस पर तर्क लाओ यदि तुम सच्चे हो। अर्थात् मुक़ाबला करके दिखाओ। अपितु यह ख़ुदा की दया से है ताकि वह अपनी नेमत तुझ पर पूरी करे और ताकि मोमिनों के लिए निशान हो। अर्थात् तेरी सच्चाई पर एक

नोट :- पंडित लेखराम का इस प्रकार से मारा जाना आर्य लोगों को एक सबक देता है और वह यह कि भविष्य में किसी नव मुस्लिम को शुद्ध करने के लिए प्रयास न करें। यदि कोई इस्लाम में दाख़िल होता है तो उसे होने दें। अंततः शुद्ध होने वाले को देख लिया कि उसका परिणाम क्या हुआ। फिर इस घटना से यह भी पाठ मिलता है कि भविष्य में यह इच्छाएं न करें कि कोई दूसरा लेखराम अर्थात गालियों में उस जैसा खोजना चाहिए। परन्तु यदि वास्तव में वह बात सही है जो पैसा अख़बार और सफ़ीर में लिखी गई है अर्थात यह कि उसके क़त्ल का कारण केवल व्यभिचार है और यह कार्य किसी स्वाभिमानी लड़की के पिता या पति का है जैसा कि पैसा अख़बार के कथनानुसार राय की अधिकता इसी ओर है तो भविष्य में सदाचारी उपदेशक तलाश करना चाहिए! आश्चर्य की बात है कि जिस हालत में पैसा अख़बार के बयान के अनुसार अधिक प्रसिद्ध रिवायत यही है कि क़त्ल की घटना का कारण कोई अवैध संबंध है तो इस ओर जांच- पड़ताल के लिए ध्यान क्यों नहीं दिया जाता, और क्यों ऐसे हिन्दुओं के बयान नहीं लिए जाते जिनके मुंह से यह बातें निकलीं और क्या डर है कि वही बात हो कि बगल में छोरा शहर में ढिंढोरा। इसी से।

निशान होगा। ऐसा ही हुआ।★

इस अवधि में अरबी भाषा में बहुत उत्तम-उत्तम पुस्तकें साहित्यिक ख़ूबियों तथा सरस एवं सुबोध शैली की अनिवार्यता के साथ इस ख़ाकसार ने लिखीं और विरोधियों को उनके मुकाबले के लिए प्रेरणा दिलाई, यहां तक कि पाँच हज़ार रुपए इनाम देना निर्णय किया यदि वे उदाहरण बना सकें। परन्तु वे इन पुस्तकों के मुकाबले पर कुछ भी न लिख सके। तो यदि यह ख़ुदा तआला का कार्य न होता तो मुकाबले पर सैकड़ों पुस्तकें लिखी जातीं विशेष तौर पर उस हालत में जबकि अपने सच और झूठ का आधार इन्हीं पर रखा गया था और स्पष्ट शब्दों में कह दिया गया था कि यदि वे इस निशान को मुकाबले पर पुस्तक लिखकर तोड़ सकें तो हमारा दावा झूठा ठहरेगा। परन्तु वे लोग मुक़ाबला करने से सर्वथा असमर्थ रहे और इसी प्रकार वे पादरी लोग जो छोटे-छोटे मूर्ख मुर्तद का नाम मौलवी रख देते हैं इस मुकाबले और सामने आने से ऐसे असमर्थ हुए कि

★ **हाशिया -** इसी भविष्यवाणी का समर्थक बराहीन अहमदिया का वह इल्हाम है जहां लिखा है - يا احمد فاضت الرحمة عَلٰى شَفَتَيْك अर्थात हे अहमद! तेरे होठों पर रहमत जारी की गई। अर्थात फ़साहत - व- बलाग़त। इसी से।

नोट :- ईसाइयों में से कुछ लोग ऐतराज़ करते हैं कि यद्यपि लेखराम के बारे में भविष्यवाणी पूरी हो गई परन्तु हिन्दुओं ने उसको मृत्योपरान्त अपमान की दृष्टि से नहीं देखा। ऐसा बहाना एक ईसाई के मुंह से निकलना बहुत अफसोस की बात है। भला न्यायवान बताएं कि जब हमने भविष्यवाणी के पूरा होने को इस्लाम की सच्चाई का एक मापदन्ड ठहराया था और ख़ुदा ने लेखराम को मारकर मुसलमानों की हिन्दुओं पर डिग्री कर दी तो इस हालत में न केवल लेखराम बल्कि धार्मिक दृष्टि से इस समस्त सम्प्रदाय के सम्मान में अन्तर आ गया। रहा शव का सम्मान तो शव का डाक्टर के हाथ से चीरा जाना क्या यह सम्मान की बात है। और चाल -चलन के सम्मान का यह हाल है कि 13 मार्च 1897 ई० के पैसा अख़बार में लिखा है कि - " इस व्यक्ति के मारे जाने की प्रसिद्ध रिवायत यह है कि यह व्यक्ति किसी स्त्री से अवैध संबंध रखता था और सामन्य तौर पर यही कहा जाता और विश्वास किया जाता है।" इति। तो इस से अधिक अपमान का और क्या नमूना होगा कि प्राण भी गए और शहर के अधिकतर लोग इसका कारण व्यभिचार ठहराते हैं। इसी से

उन्होंने इस ओर मुंह भी न किया। और इस भविष्यवाणी में ख़ूबी यह है कि ये उन अरबी पुस्तकों के अस्तित्व से सोलह सत्रह वर्ष पूर्व लिखी गई। क्या मनुष्य ऐसा कर सकता है?!!

बारहवीं भविष्यवाणी - बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 238, 239 में लिखी है **क़ुर्आन का ज्ञान** है इस भविष्यवाणी का सारांश यह है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुझे क़ुर्आन का ज्ञान दिया गया है ऐसा ज्ञान जो झूठ को समाप्त करेगा। इसी भविष्यवाणी में फ़रमाया कि दो इन्सान हैं जिन्हें बहुत ही बरकत दी गई। एक वह मुअल्लिम (शिक्षक) जिसका नाम **मुहम्मद मुस्तफा** सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है और एक यह **मुतअल्लिम** (शिक्षार्थी) अर्थात् इस पुस्तक का लेखक। और यह इस आयत की ओर भी संकेत है जो पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़रमाता है- وَّ اٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ (अल्जुम्अ: 4) अर्थात् इस नबी के और शिष्य भी हैं जो अभी प्रकट नहीं हुए और उन का प्रकटन अन्तिम युग में होगा। यह आयत इसी **ख़ाकसार** के बारे में थी। क्योंकि जैसा कि अभी इल्हाम में वर्णन हो चुका है। कि यह ख़ाकसार रूहानी तौर पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शिष्यों में से है। और यह भविष्यवाणी क़ुर्आनी शिक्षा की ओर संकेत करती है इसी की पुष्टि के लिए

नोट :- बुद्धिमानों के लिए एक निशान यह है कि शेख़ नज़फी ने चालीस सैकण्ड में निशान दिखाने का वादा किया था और हमने 1 फरवरी 1897 ई० से चालीस दिन में, देखो विज्ञापन 1 फरवरी 1897 ई० पृष्ठ- 3 का हाशिया - जिसकी इबारत यह है -

اگر نشانے ازمادریں مدت یعنی چھل روز بظہور آمد
و از ایشاں یعنی از شیخ نجفی چیزے بظہور نیا مدھمیں
دلیل برصدق ماو کذب شان خواھد بود

अत: 1, फरवरी 1897 से 35 दिन तक अर्थात् 40 दिन के अन्दर पंडित लेखराम की मृत्यु का निशान घटित हो गया। नज़फी साहिब यह तो बताएं कि 1, फरवरी 1897 से आज तक कितने सैकण्ड गुज़र गए हैं। अफ़सोस कि नज़फ़ी ने किसी मीनार से गिर कर भी न दिखाया گر همیں لاف و گذاف وشیخی است
شیخ نجدی بہتر از صد نجفی است

पुस्तक "करामातुस्सादिकीन" लिखी गई थी जिसकी ओर किसी विरोधी ने मुंह नहीं किया और मुझे उस ख़ुदा की क़सम है जिसके हाथ में मेरी जान है कि मुझे क़ुर्आन की वास्तविकताएं और अध्यात्म ज्ञानों को समझने में **प्रत्येक रूह पर विजय दी गई है।** यदि कोई विरोधी मौलवी मेरे मुक़ाबले पर आता जैसा कि मैंने क़ुर्आन की तफ्सीर के लिए बार-बार उनको बुलाया तो ख़ुदा उन्हें अपमानित और लज्जित करता। अतः **क़ुर्आन की समझ** जो मुझे प्रदान की गई है। यह अल्लाह तआला का **एक निशान** है। मैं ख़ुदा की कृपा से आशा रखता हूं कि शीघ्र ही **दुनिया देखेगी** कि मैं इस वर्णन में सच्चा हूं। और मौलवियों का यह कहना कि क़ुर्आन के मायने इतने ही सही है जो सही हदीसों से निकल सकते हैं और इससे बढ़कर वर्णन करना गुनाह है कहां यह कि ख़ूबी का कारण समझ जाए। ये सर्वथा ग़लत विचार हैं। हमारा यह दावा है कि कुर्आन पूर्ण सुधार और सर्वज्ञ शुद्धता के लिए आया है और वह स्वयं दावा करता है कि समस्त पूर्ण सच्चाइयां उसके अंदर हैं जैसा कि फ़रमाता है -

فِيۡهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ (अलबय्यिना- 4)

तो इस स्थिति में अवश्य है कि जहां तक अध्यात्म ज्ञानों और ख़ुदाई ज्ञान का सिलसिला लम्बा हो सके वहां तक क़ुर्आनी शिक्षा का भी दामन पहुंचा हुआ है और यह बात केवल मैं नहीं कहता अपितु क़ुर्आन स्वयं इस विशेषता को अपनी ओर सम्बद्ध करता है और अपना नाम किताबों में सर्वांग पूर्ण किताब रखता है। तो स्पष्ट है कि ख़ुदा के अध्यात्म ज्ञानों के बारे में कोई प्रत्याशित अवस्था शेष होती जिस का पवित्र क़ुर्आन ने वर्णन नहीं किया तो पवित्र क़ुर्आन का अधिकार नहीं था कि वह अपना नाम "अकमलुलकुतुब" (सर्वांग पूर्ण किताब) रखता। हदीसों को हम इससे अधिक दर्जा नहीं दे सकते कि वे कुछ स्थानों में क़ुर्आनी संक्षेपों के विस्तार के तौर पर हैं। बहुत मूर्ख और अयोग्य वे लोग हैं जो पवित्र क़ुर्आन की प्रशंसा उसी प्रकार से नहीं करते जो पवित्र क़ुर्आन मैं मौजूद है अपितु उसे साधारण और कम श्रेणी पर लेने के लिए कोशिश कर रहें हैं। अतः

एक भविष्यवाणी यह भी है जो ख़ुदा तआला की ओर से मुझे दी गई जिसका मुक़ाबला कोई विरोधी नहीं कर सका और ख़ुदा ने समस्त शत्रुओं को अपमानित किया। क़ुर्आन के चमत्कार पूर्ण मआरिफ जो असीमित हैं उन पर एक यह भी तर्क है कि बाह्य और साधारण मायने तो प्रत्येक मोमिन और पापी तथा मुस्लिम और क़ाफिर को मालूम हैं। और कोई कारण नहीं कि मालूम न हों। तो फिर नबियों और अध्यात्म ज्ञानियों को उन पर क्या श्रेष्ठता हुई और फिर उसके क्या मायने हुए कि -

لَا يَمَسُّهٗۤ اِلَّا الۡمُطَهَّرُوۡنَ (अल वाकिय: 80)

तेरहवीं भविष्यवाणी - वह है जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 241 में लिखी गई है। और वह यह है -

الا ان نصر اللہ قریب۔ یا تیک من کل فجٍ عمیق۔ یا تون من کل فجٍ عمیق

अर्थात् ख़ुदा की सहायता तुझे दूर दूर से पहुँचेगी और लोग दूर दूर से तेरे पास आऐंगे। अतः ऐसा ही हुआ और हमारे विरोधी भी मानते हैं कि हिन्दुस्तान के किनारों तक हमारे सिलसिले के मदद करने वाले मौजूद हैं। और पेशावर से लेकर बम्बई, मद्रास तथा कलकत्ता तक लोग दूर दूर से सफ़र करके क़ादियान में पहुँचते हैं। और यह भविष्यवाणी सत्रह वर्ष की है और उस समय लिखी गई थी जब इस लोगों के रुजू का नामो निशान न था। अब सोचना चाहिए कि क्या यह मनुष्य का कार्य है ? क्या इन्सान इस बात पर सामर्थ्यवान है कि ऐसी गुप्त और छुपी से छुपी बातें जो एक आयु के बाद प्रकट होने वाली थीं पहले से बता दे?!

चौदहवीं भविष्यवाणी - जो बराहीन अहमदिया के इसी पृष्ठ 239 पर है यह है :-

ھو الذی ارسل رسولہ بالھدی و دین الحق لیظھرہ علی الدین کلہ ۚ لا مبدل لکلمات اللہ ظلموا و ان اللہ علٰی نصرھم لقدیر

अर्थात् ख़ुदा वह है जिसने अपना रसूल मार्गदर्शन और सच्चे धर्म के साथ भेजा ताकि इस धर्म को समस्त धर्मों पर विजयी करे। कोई नहीं जो ख़ुदा की बातों को टाल सके। उन पर ज़ुल्म हुआ ख़ुदा उनकी सहायता करेगा। ये क़ुर्आनी

आयतें इल्हामी पद्धति में इस ख़ाकसार के पक्ष में हैं और रसूल से अभिप्राय मामूर और भेजा हुआ है जो इस्लाम धर्म की सहायता के लिए प्रकट हुआ। इस भविष्यवाणी का सारांश यह है कि ख़ुदा ने जो इस मामूर को भेजा है यह इसलिए भेजा है ताकि उसके हाथ से इस्लाम धर्म को समस्त धर्मों पर विजयी करे। और प्रांरभ में अवश्य है कि इस मामूर और उसकी जमाअत पर अत्याचार हो परन्तु अन्त में **विजयी होगा**। और यह धर्म इस मामूर के माध्यम से समस्त धर्मों पर विजयी हो जाएगा और दूसरी समस्त मिल्लतें बय्यिन: के साथ तबाह हो जाएंगी। देखो! यह कितनी महान भविष्यवाणी है। और यह **वही भविष्यवाणी** है प्रारंभ से अधिकतर उलेमा कहते आए हैं जो **मसीह मौऊद के पक्ष में है और उसके समय में पूरी होगी।** और बराहीन अहमदिया में सत्रह वर्ष से मसीह मौऊद के दावे से पहले दर्ज है ताकि ख़ुदा उन लोगों को शर्मिन्दा करे जो इस ख़ाकसार के दावे को मनुष्य का बनाया हुआ झूठ समझतें हैं। बराहीन अहमदिया स्वयं गवाही देती है कि उस समय इस ख़ाकसार को अपने बारे में मसीह मौऊद होने का विचार भी नहीं था और पुरानी आस्था पर नज़र थी। परन्तु ख़ुदा के इल्हाम ने उसी समय गवाही दी थी कि तू मसीह मौऊद है। क्योंकि जो कुछ नबवी आसार ने मसीह के बारे में फ़रमाया था ख़ुदा के इल्हाम ने इस ख़ाकसार पर जमा दिया था। **यहां तक** कि उसी बराहीन अहमदिया में नाम भी ईसा रख दिया। अत: बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 556 में यह इल्हाम मौजूद है-

يا عيسٰى انّى متوفّيك و رافعك الىّ و جاعل الذين اتبعوك فوق الذين كفروا الى يوم القيامه ثلّة من الاولين و ثلّة من الاٰخرين

अर्थात् हे ईसा! मैं तुझे स्वाभाविक मृत्यु दूंगा और अपनी ओर उठाऊंगा और तेरे अनुयायियों को उन लोगों पर विजयी प्रदान करूंगा जो विरोधी होंगे और तेरे अनुयायी दो प्रकार के होंगे। पहला गिरोह और पिछला गिरोह। यह आयत हज़रत मसीह पर उस समय उतरी थी कि जब उनकी जान यहूदियों की योजनाओं से अत्यन्त घबराहट में थी और यहूदी अपनी धृष्टता से उन्हें सलीब पर मारने की चिन्ता में थे ताकि उन पर आपराधिक मौत का दाग़ लग कर तौरात की एक

आयत के अनुसार उनको धिक्कृत ठहरा दें। क्योंकि तौरात में लिखा था कि जो लकड़ी पर लटकाया जाए वह लानती है। चूंकि सलीब को अपराधी को दण्ड देने की प्राचीन पद्धति के कारण एक समानता पैदा हो गई थी और प्रत्येक ख़ूनी और चरम सीमा का दुष्कर्मी सलीब द्वारा दण्ड पाता था। इसलिए ख़ुदा की तक़दीर ने ईमानदारों पर सलीब को हराम (अवैध) कर दिया था, ताकि पवित्र को अपवित्र से समानता पैदा न हो। तो यह अजीब बात है कि कोई नबी सलीब पर नहीं मरा ताकि उनकी सच्चाई लोगों की दृष्टि में संदिग्ध न हो जाए।

अत: इस आयत में अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह को ऐसे घबराहट के समय में सांत्वना दी थी कि जब यहूदी उनको सलीब पर मारने की चिन्ता में थे अब जो यह आयत बराहीन अहमदिया में इस ख़ाकसार पर बतौर इल्हाम उतरी तो इस में एक बारीक संकेत यह है कि इस ख़ाकसार पर भी ऐसी घटना आएगी कि लोग क़त्ल करने या सलीब पर मारने की स्कीमें बनाएंगे ताकि यह ख़ाकसार अपराधी का दण्ड पाकर सच संदिग्ध हो जाए। तो इस आयत में अल्लाह तआला इस ख़ाकसार का नाम ईसा रख कर और मृत्यु देने का वर्णन करके संकेत करता है कि ये स्कीमें कुछ न कर सकेंगी और मैं उनकी शरारतों से **संरक्षक** हूँगा। और इसी इल्हाम के आगे जो पृष्ठ - 557 में इल्हाम है उसमें व्यक्त किया गया कि ऐसा कब होगा और उस दिन का निशान क्या है। अर्थात् ऐसी स्कीमें जो क़त्ल के लिए बनाई जाएंगी वे कब और किस समय में होंगी तथा किन बातों का उन से पहले होना आवश्यक है तो इसी इल्हाम के बाद में जो इल्हाम है उसमें इसकी ओर संकेत किया गया है और वह यह है-

"मैं अपनी चमकार दिखलाऊंगा, अपनी क़ुदरत नुमाई से तुझ को उठाऊंगा (यह राफ़िउका इलय्या की तफ़्सीर है।) दुनिया में एक नज़ीर आया पर दुनिया ने उसे क़बूल न किया लेकिन ख़ुदा उसे क़बूल करेगा और बड़े ज़ोरआवर हमलों से उसकी सच्चाई ज़ाहिर कर देगा।"

इस इल्हाम में अल्लाह तआला ने स्पष्ट शब्दों में फ़रमाया है कि क़त्ल के षडयन्त्रों का समय वह होगा कि जब एक चमकदार निशान आक्रमण के

रूप में प्रकट होगा। अतः इस इल्हाम के बाद जो अरबी में इल्हाम है वह भी इस क़त्ल के विषय की ओर संकेत करता है और वह यह है-

الفتنة هٰهنا فاصبر كما صبر اولوا العزم. فلمّا تجلّٰى ربّه للجبل جعله دكّا. قوّة الرحمٰن لعبيد الله الصّمد. مقام لا تترقى العبد فيه بسعى الاعمال

अनुवाद -यह है कि जब चमकता हुआ निशान प्रकट होगा तो उस समय एक फ़ित्नः खड़ा होगा।★

(यह वही फ़ित्नः क़त्ल का षडयंत्र है जिसकी अनुकूलता से कथित इल्हाम में इस ख़ाकसार को हे ईसा करके पुकारा गया था। अर्थात् क़त्ल करने या सलीब पर मारे जाने के इरादे का फ़ित्नः) इस इल्हाम में पहले इस ख़ाकसार का नाम

★ **हाशिया -** आर्यों और हिन्दुओं ने इस ख़ाकसार के क़त्ल के लिए जगह-जगह जितने गुप्त जलसे और मशवरे किए हैं उनके बारे में अब तक मेरे पास लगभग पचास पत्र पहुँचे हैं। उन में से कुछ अज्ञात हिन्दुओं के पत्र हैं और कुछ प्रतिष्ठित मुसलमानों के पत्र हैं जिन को इन मशवरों की सूचना हुई। इस समय यहां पत्रों की नक़ल की आवश्यकता नहीं वे सब मेरे पास सुरक्षित हैं। परन्तु हिन्दू अख़बार में से कुछ बतौर नमूना नक़ल करता हूँ ताकि मालूम हो कि वह आज़मायश जिस का यहूदियों की शरारतों से हज़रत ईसा को सामना करना पड़ा था वही मुझ पर आ गई। और इस फ़ित्नः के शब्द से जो इल्हाम الفتنة هٰهنا में पाया जाता है वही इब्तिला (आज़मायश) अभिप्राय है। और इसी अधार पर कुछ अन्य कारणों सहित इस ख़ाकसार का नाम ईसा रखा गया है। यहूदियों का फित्नः दो भागों पर आधारित था। एक वह भाग था जो हज़रत ईसा के क़त्ल के लिए उनकी अपनी स्कीमें थीं और दूसरा वह भाग था जो वे रूमी सरकार को हज़रत ईसा की गिरफ़्तारी क़त्ल के लिए उत्तेजित करते थे। तो इन दिनों में भी वही मामला सामने आया, अन्तर केवल इतना रहा कि वहां यहूदी थे और यहां हिन्दू। अतः पहला भाग जो क़त्ल के लिए घरेलू षडयंत्र है उनका नमूना एम.आर.विशेषर दास के उस निबंध से मालूम होता है जो उसने अख़बार "आफ़्ताब हिन्द" 12 मार्च 1897 ई के पृष्ठ-5 कालम-1 में छपवाया है जिसका शीर्षक यह है "**मिर्ज़ा क़ादियानी ख़बरदार**" और फिर इसके बाद लिखा है कि "मिर्ज़ा क़ादियानी भी आज कल का मेहमान है। बकरी की मां कब तक ख़ैर मना सकती है। आजकल हिन्दुओं के विचार मिर्ज़ा क़ादियानी के बारे में बहुत बिगड़े हुए हैं। इसलिए मिर्ज़ा क़ादियानी को ख़बरदार रहना चाहिए कि वह भी बक़र ईद की क़ुर्बानी न हो जाए।" और फिर अख़बार रहबर हिन्द लाहौर 15 मार्च 1897 ई० में पृष्ठ -14,

ईसा रखा गया और फिर वादा किया गया है कि मैं तुझे मृत्यु दूँगा और वही आयत जो पवित्र क़ुर्आन में हज़रत ईसा की मृत्यु के बारे में है इस ख़ाकसार के पक्ष में इल्हाम हुई। अर्थात्

يا عيسٰى انّى متوفّيك و رافعك الىّ

और जैसा कि मैं अभी लिख चुका हूँ इस ख़ुशख़बरी की हज़रत ईसा के

शेष हाशिया - कालम -1 में लिखा है "कहते हैं कि हिन्दू क़ादियान वाले को क़त्ल कराएंगे।"

और दूसरा भाग जो सरकार को उत्तेजित करने के बारे में है उसका निम्नलिखित अख़बारों में जो हिन्दुओं की ओर से निकले हैं, बयान है। अत: अख़बार "पंजाब समाचार" 27 मार्च 1897 ई जो एक हिन्दू पर्चा लाहौर से निकलता है इस प्रकार से अपने पृष्ठ-5 में सरकार को उकसाता है। "सर्वप्रथम इस विचार को (अर्थात क़त्ल के षडयंत्र के विचार को) पैदा करने वाले मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी की भविष्यवाणी है।" फिर इसी अख़बार के पृष्ठ- 6 में लिखा है कि "मिर्ज़ा साहिब इस बात को स्वीकार करते हैं कि पंडित जी की मृत्यु 2 शव्वाल को होनी थी।"अर्थात भविष्यवाणी में जो 2 शव्वाल की ओर संकेत था और वैसा ही घटित हुआ तो बस यह पर्याप्त प्रमाण है कि भविष्यवाणी करने वाले के षडयंत्र से यह क़त्ल हुआ फिर यही अख़बार 10 मार्च 1897 ई के पर्चे में लिखता है- "एक हज़रत ने (अर्थात इस ख़ाकसार ने) अपनी लिखी पुस्तक मौऊद मसीही में यह भविष्यवाणी भी की थी "पंडित लेखराम छ: वर्ष की अवधि में ईद के दिन अत्यन्त दर्दनाक हालत में मरेगा।" अब यह पर्चा ईद का नाम लेकर सरकार को इस बात की ओर ध्यान दिलाता है कि ऐसा पता देना मनुष्य की स्कीम को बताता है परन्तु ईद का दिन वर्णन करने में ग़लती करता है। ख़ुदा के इल्हाम में 2 शव्वाल की ओर संकेत पाया जाता है।★ फिर इसी पर्चे के पृष्ठ - 2 में लिखता है "क़त्ल के लिए आदमी नियुक्त किया गया। उधर से मौऊद मसीह की भविष्यवाणी भी क़रीब थी। क्योंकि संभवत: 1897 ई छठा वर्ष था और 5 मार्च सन वर्तमान अन्तिम ईद छठे वर्ष की थी।" इस में जितनी ग़लतियां हैं उनके वर्णन करने की आवश्यकता नहीं। बहरहाल कि इस वर्णन से इसका मतलब यह है कि यह स्कीम बनाई गई कि ईद पर या ईद के क़रीब क़त्ल किया जाए। फिर इसी विचार को शक्ति देने के लिए उसी अख़बार में लिखता है कि - "यह

★हाशिए का हाशिया - ख़ुदा तआला के इल्हाम में लेखराम का नाम عِجلٌ جَسَدٌ لَّهٗ خُوار रखा है। अर्थात सामरी का बछड़ा इसमें भी यही संकेत है कि वह ईद के दिनों में मरेगा क्योंकि तौरात में अब तक लिखा हुआ मौजूद है कि सामरी का बछड़ा भी ईद के दिन मिटाया गया था और ईद का दूसरा दिन भी ईद ही है। इसी से।

पक्ष में भी आवश्यकता पड़ी थी कि उस समय की प्रतिदिन की धमकियों से उनकी जान ख़तरे में थी और यहूदी लोग उनको एक ऐसी मौत की धमकी देते थे जिस मौत को एक अपराधिक मौत समझ सकते हैं और जिस पर तौरात की दृष्टि से भी ईमानदारी की प्रतिष्ठा को धब्बा लगता है। इसलिए ख़ुदा तआला ने ऐसे ख़तरे से भरपूर समय में ऐसी गंदी और लानती मौत से उनको बचा लिया।

शेष हाशिया - क़त्ल कई लोगों के लम्बे समय के सोचे और समझे तथा पुख्ता षडयंत्र का परिणाम है जिसके परामर्श अमृतसर, गुरदासपुर के निकट तथा देहली और बम्बई के चारों ओर लम्बे समय से हो रहे थे। क्या यह असंभव है कि इस षड़्यंत्र का जन्म उन लोगों से हुआ हो जो खुल्लम खुल्ला लिखित एवं मौखिक तौर पर कहा करते थे कि पंडित को मार डालेंगे। इसके अतिरिक्त यह कि पंडित इस अवधि में और अमुक दिन एक दर्दनाक हालत में मरेगा। क्या आर्य धर्म के विरोधी कुछ एक पुस्तकों के एक विशेष लेखक को इस षडयंत्र से कोई संबंध नहीं है।" इस में यह पर्चा सरकार को यह जतलाना चाहता है कि क्या ऐसा व्यक्ति जिसने मीआद निर्धारित कर दी, क़त्ल का दिन बता दिया और जीभ से कहता रहा कि अमुक दिन मरेगा उसका क़त्ल की योजना में कुछ षडयंत्र नहीं ? फिर एक अन्य अख़बार जिसका नाम "अख़बार आम" है। उसके 16 मार्च 1897 ई के पर्चे के पृष्ठ -3 में लेखराम के क़ातिल के बारे में लिखा है -"कि तरह तरह की अफवाहें प्रसिद्ध हैं और क़ादियानी साहिब का व्यवहार सब से निराला है....... बड़े अफसोस से स्वीकार करना पड़ता है कि मिर्ज़ा क़ादियानी साहिब का कर्तव्य है कि जब इल्हाम के ज़ोर से उन्होंने लेखराम के क़त्ल की भविष्यवाणी की थी उसी इल्हाम के ज़ोर से बता दें कि उसका क़ातिल कौन है।" फिर अख़बार आम का एडीटर अपने 10 मार्च 1897 ई के पर्चे में लिखता है कि - "यदि डिप्टी साहिब अर्थात आथम के साथ ऐसी घटना हो जाती जिसका परिणाम लेखराम को भुगतना पड़ा तब और बात थी।" अर्थात इस हालत में सरकार भविष्यवाणी करने वाले की अवश्य पकड़ करती। ऐसा ही "अनीस हिन्द" मेरठ लेखराम के मारे जाने की ओर संकेत करके अपने मार्च के पर्चे में लिखता है कि "हमारा माथा तो उसी समय ठनका था कि जब मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी ने लेखराम की मृत्यु के बारे में भविष्यवाणी की थी क्या उसे ग़ैब का ज्ञान था।"

इसी प्रकार कई अन्य हिन्दू अख़बारों में विविध तारीक़ों से अपने उपद्रव पूर्ण विचारों को व्यक्त किया है। और मैं समझता हूँ कि इससे अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं। क्योंकि पंजाब में उनकी उपद्रव पूर्ण योजनओं का ऐसा शोर पड़ा हुआ है कि बहुत कम ही उनसे कोई अपरिचित होगा। इसी से।

अत: इस इल्हाम में जो उसी आयत के साथ इस ख़ाकसार को हुआ यह एक अत्यन्त सूक्ष्म भविष्यवाणी है जो आज के दिन से सत्रह वर्ष पहले की गई और यह बुलन्द आवाज़ में बता रही है कि वैसी घटना का यहां भी सामना होगा। और इस ख़ाकसार को ईसा के नाम से सम्बोधित करके यह कहना कि हे ईसा मैं तुझे मृत्यु दूंगा और अपनी ओर उठाऊंगा। यह वास्तव में उस घटना का नक़्शा दिखाना है जो हज़रत ईसा के समक्ष आई थी और वह घटना यह थी कि यहूदियों ने उन्हें इस इरादे से क़त्ल करना चाहा था कि उनका झूठा होना सिद्ध करें। और उन्होंने यह पहलू हाथ में लिया था कि हम उसे सलीब के द्वारा क़त्ल करेंगे और सलीब पर मरने वाला लानती होता है। और लानत का अर्थ यह है कि मनुष्य बेईमान और ख़ुदा से विमुख, दूर और पृथक कर दिया हो और इस प्रकार उनका झूठा होना सिद्ध हो जाएगा। ख़ुदा ने उनको सांत्वना दी कि तू ऐसी मौत से नहीं मरेगा जिस से परिणाम निकले कि तू लानती, ख़ुदा से दूर और पृथक किया हुआ है अपितु मैं तुझे अपनी ओर उठाऊंगा अर्थात् अधिक से अधिक तेरा सानिध्य सिद्ध करूंगा।★और यहूदी अपने इस इरादे में असफल रहेंगे। तो शब्द रफ़ा के अर्थ में हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने की भी एक भविष्यवाणी छुपी हुई थी क्योंकि जिस सच्चाई के अधिक प्रकट होने का वादा था वह हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रादुर्भाव से घटित हुई। और ख़ुदा तआला के अपने एक सच्चे नबी को गवाही के बिना नहीं छोड़ा।

अत: यही भविष्यवाणी इस ख़ाकसार के बारे में बराहीन अहमदिया में ख़ुदा तआला की ओर से मौजूद है और आज से सत्रह वर्ष पूर्व प्रकाशित हो चुकी।

★ **हाशिया-** यह वादा इस ख़ाकसार को भी दिया गया कि मैं तुझे मृत्यू दूंगा और अपनी ओर उठाऊंगा। अत: उसी आयत को बतौर इल्हाम इस ख़ाकसार के लिए भी उतारा है जिस से हमारे उलेमा पार्थिव शरीर के साथ उठाना अभिप्राय लेते हैं और मैं तर्कों द्वारा सिद्ध कर चुका हूं कि यह आयत मेरे लिए भी इल्हाम हुई है। तो अब क्या मेरे बारे में भी यह आस्था रखनी चाहिए कि मैं पार्थिव शरीर के साथ आकाश की ओर उठाया जाऊंगा। यदि कहो तुम्हारा इल्हाम सिद्ध नहीं हुआ तो यह बहाना व्यर्थ होगा क्योंकि जिस सूक्ष्म भविष्यवाणी पर यह इल्हाम आधारित है वह प्रकट हो चुकी है। तो इसी तर्क से इल्हाम का सच्चा होना सिद्ध हो गया। इसी से।

अतः यह इल्हाम उतरने का वही कारण अपने साथ रखता है जो हज़रत मसीह के बारे में होने की हालत में उसके साथ था। अर्थात् जैसा कि उस समय यह वह्यी इसी उद्देश्य से हज़रत ईसा पर उतरी थी कि उनको समय से पूर्व सूचना दी जाए कि तेरे बारे में क़त्ल की योजनाएं होंगी और मैं तुझे बचा लूंगा। इसी उद्देश्य से यह इल्हाम भी है। यदि अन्तर है तो केवल इतना है कि उस समय क़त्ल की योजनाएं बनाने वाले यहूदी थे और अब हिन्दू हैं। और यहूदियों ने हज़रत मसीह को झुठलाने के लिए यह पहलू सोचा था कि उनको सलीब पर क़त्ल करके तौरात के अनुसार उनका लानती होना स्पष्ट हो जाएगा। और सच्चा पैग़म्बर लानती नहीं हो सकता। तो इस प्रकार से उनका झूठा होना हृदयों पर जम जाएगा और ऐसे अपमानित जीवन का अन्त होकर फिर उनका कोई भी नाम नहीं लेगा। और इसी अपमानजनक मृत्यु का भारी ग़म था जिसने पूरी रात हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को दुआ करने का जोश दिया और ठीक सलीब के समय "ईली ईली लिमा सबक़तनी" उनके मुंह से कहलाया। अन्यथा एक नबी को अपनी मौत की क्या चिन्ता हो सकती है। यह बहादुर क़ौम तो मौत की चिन्ता को पैरों के नीचे कुचलती है। ऐसा डर नबी के दिल की ओर क्यों कर सम्बद्ध कर सकें अपितु लानत के फ़ित्नः का डर था जो उन के दिल को खा गया था। अन्ततः में उस ईमानदार को ख़ुदा ने बचा लिया। बराहीन अहमदिया की इस भविष्यवाणी में यह संकेत है कि यही योजना तुम्हारे लिए एक क़ौम बनाएगी। अतः उन दिनों में लेखराम की मृत्यु के पश्चात् हिन्दुओं ने यही किया और कर रहे हैं। परन्तु उन्होंने मुझे झुठलाने के लिए यह दूसरा पहलू सोचा है कि यदि संभव हो तो इसको भी ईद के करीब - करीब क़त्ल कर दें और इस प्रकार से ख़ुदा की भविष्यवाणी को बरबाद कर के दिलों से इस्लामी प्रतिष्ठा को मिटा दें और लोगों को इस ओर ध्यान दिलाएं कि जैसा कि लेखराम एक समय से पूर्व भविष्यवाणी के अनुसार क़त्ल हो गया ऐसा ही यह व्यक्ति भी समय से पूर्व हमारी भविष्यवाणी के अनुसार क़त्ल हो गया। तो यदि वह ख़ुदा का इल्हाम हो सकता है तो हमारी बात को भी ख़ुदा का इल्हाम कहना चाहिए। तो इस प्रकार

से दुनिया में गड़बड़ पड़ जाएगी और लोग हिन्दुओं के एक मुर्दे की तुलना में मुसलमानों के एक मुर्दे को देख कर इस परिणाम तक पहुँच जाएंगे कि दोनों इन्सानी योजनाएं हैं। और इस प्रकार से आसानी के साथ इस व्यक्ति का झूठा होना सिद्ध हो जाएगा। अतः यहूद और हुनूद झुठलाने के उद्देश्य में एक हैं। केवल अलग- अलग दो पहलू उन्हें सूझे। इसलिए ख़ुदा ने इस समय से सत्रह वर्ष पूर्व समझा दिया कि जैसा कि यहूदी अपने इरादे में असफ़ल रहे **हिन्दू भी अपने इरादे में असफल रहेंगे।** और स्पष्ट शब्दों में समझा दिया कि यह क़त्ल की योजना उस समय होगी कि जब एक चमकता हुआ निशान आक्रमण के रूप में प्रकट होगा और उस आक्रमण के बाद एक फित्नः होगा उसी फित्नः के समान जो मसीह के बारे में हुआ था। फिर इसी इल्हाम के साथ अरबी में इल्हाम है जिसके मायने यह हैं कि ख़ुदा कठिनाइयों के पहाड़ दूर कर देगा और यह सब रहमान (कृपालु ख़ुदा) की शक्ति से होगा।

फिर इसी इल्हाम के समर्थन में बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 506 में एक इल्हाम है जिस में हिन्दुओं और ईसाइयों के लिए एक खुले- खुले निशान का वादा किया है। जैसा कि फ़रमाया है-

لم یکن الذین کفروا من اھل الکتاب والمشرکین منفکین حتی تاتیھم البینۃ و کان کیدھم عظیما

अर्थात् मुश्रिक और ईसाई एक खुले-खुले निशान के अतिरिक्त अपने झुठलाने से रुकने वाले नहीं थे और उनका मक्र बहुत बड़ा था। फिर फ़रमाया कि यदि ख़ुदा ऐसा न करता तो दुनिया में अंधेर पड़ जाता और वही खुला खुला निशान है जिसे दूसरे स्थान पर चमकार का शब्द प्रयोग हुआ है जो लेखराम की मृत्यु का निशान है और स्पष्ट तौर पर प्रकट है कि ख़ुदा तआला ने अत्यन्त सफ़ाई से इस निशान को प्रकट किया है। क्योंकि इस भविष्यवाणी में मीआद बताई गई थी। ईद का दूसरा दिन बताया गया था और मौत क़त्ल द्वारा बताई गई थी और कश्फ़ी इबारत साफ बता रही कि मौत रविवार को होगी और रात के समय होगी। तो यह समस्त बातें उसी प्रकार से प्रकट हो गईं जैसा कि पहले से कही गई थीं। और हिंदुओं

का षड्यंत्र का आरोप और क़त्ल करने के इरादे का आरोप इस भविष्यवाणी की सफाई पर कुछ धूल नहीं डाल सकता। क्योंकि अभी हम वर्णन कर चुके हैं कि बराहीन अहमदिया में यह भविष्यवाणी मौजूद है कि इस निशान के प्रकट होने के समय एक फित्नः होगा और वह फित्नः उस फित्नः के समान होगा जो हज़रत ईसा के बारे में यहूदियों ने उठाया था। अर्थात् यह कि सरकार के द्वारा सलीब पर मारने की कोशिश या स्वयं क़त्ल करने की योजना बनाना।

यहां स्मरण रहे है कि जो कुछ हिंदू और हमारे दूसरे विरोधी इस भविष्यवाणी को धूमिल करना चाहते हैं **ऐसा कभी नहीं होगा।** क्योंकि यह ख़ुदा तआला का कार्य है इसलिए ख़ुदा तआला उसको कदापि नष्ट नहीं करेगा अपितु वह दिन प्रतिदिन उस की सफाई प्रकट करेगा। और जैसे जैसे लोगों को यह भविष्यवाणी समझ आती जाएगी वैसे वैसे उस की ओर ख़ीचे जाएंगे। क्या इस भविष्यवाणी की प्रतिष्ठा के लिए यह पर्याप्त नहीं कि इन समस्त व्याख्याओं के अतिरिक्त जो इस भविष्यवाणी में मौजूद हैं बराहीन अहमदिया में भी इस घटना ने सत्रह वर्ष पूर्व भविष्यवाणी की सूचना दी गई।

पन्द्रहवीं भविष्यवाणी: डिप्टी अब्दुल्लाह आथम के बारे में भविष्यवाणी की है जो अत्यन्त सफाई से पूरी हो गई। कथित आथम के बारे में भविष्यवाणी के इल्हाम में स्पष्ट तौर पर यह शर्त थी कि यदि सत्य की ओर लौट आएगा तो मौत में विलम्ब डाल दिया जाएगा। अतः उस ने भविष्यवाणी की मीयाद में अपने कथनों एवं कर्मों से सच की ओर रूजू करना सिद्ध कर दिखाया। उस ने न केवल भय का इक़रार किया अपितु वह भविष्यवाणी की मीआद में अपने एकान्तवास में मुर्दे के समान पड़ा रहा।★ इस अवधि में एक बार उसे

★ **हाशिया-** आथम भविष्यवाणी की मीयाद में जो पन्द्रह महीने थी, अपनी पहली आदतें अर्थात मुबाहसों और शास्त्राथों से ऐसा पृथक हो गया कि उस का उदाहरण उस के पहले सम्पूर्ण जीवन में नहीं पाया जाता। उस ने इस मीआद में एक पंक्ति के बराबर भी कोई विरोधपूर्ण निबन्ध नहीं निकाला। अतः यह नितान्त स्पष्ट और साफ सबूत इस बात पर है कि वह भविष्यवाणी के दिनों में पुरानी आदतों से रुका रहा और वही रुजू था। इसी से।

ज्वर हुआ तो वह रोता हुआ बोला कि "हाय मैं पकड़ा गया।" उसने मीआद के अन्दर समस्त मुबाहसे छोड़ दिए जैसे उसके मुंह में जीभ न थी। मीआद के दिनों में उस ने अपना विचित्र परिवर्तन दिखाया कि जैसे वह आथम ही नहीं है। तो यद्यपि यह परिवर्तन और निराशा और ग़म जो उसके चेहरे से स्पष्ट था रुजू के लिए पर्याप्त तर्क था। परन्तु इससे बढ़कर उसने यह भी सबूत दे दिया कि मैंने उसको कहा कि ख़ुदा तआला ने मुझे सूचना दी है कि तू मीआद के अन्दर अवश्य भयभीत रहा और ईसाइयत की धृष्टतापूर्ण पद्धति से अवश्य पृथक होकर इस्लाम के भय से प्रभावित हो गया था जो रुजू के प्रकारों में से एक प्रकार है। और यदि यह बात सही नहीं है तो तुझे क़सम खाना चाहिए जिस पर हम तुझे चार हज़ार रुपया अविलम्ब दे देंगे। परन्तु उसने क़सम न खाई और न नालिश से अपने उन झूठे आरोपों को सिद्ध किया जो अपने भय का आधार ठहराया था। अर्थात् यह आरोप कि जैसे हमने एक सिधाए सांप उसकी ओर छोड़ा था और कुछ हथियार बन्द सिपाही भेजे थे। अतः उसकी इस कारवाई से साफ तौर पर सिद्ध हो गया कि उसने अवश्य रुजू किया। और इल्हामी इबारत में यह भी था कि यदि रुजू पर स्थापित नहीं रहेगा और सच को छुपाएगा तो शीघ्र मर जाएगा। तो वह सच को छुपा कर हमारे अन्तिम विज्ञापन से सात माह के अन्दर मर गया। इल्हाम के अनुसार उसका मरना भी स्पष्ट गवाही देता है कि वह केवल रुजू के कारण कुछ दिनों तक जीवित रह सका था। यह कैसी साफ बात है कि ख़ुदा के इल्हाम में आथम के लिए एक जीवित रहने का पहलू था और एक मरने का पहलू। तो ख़ुदा ने भविष्यवाणी के शब्दों के अनुसार दोनों पहलुओं को पूरा करके दिखा दिया। क्या जीवित रहने का पहलू जो इल्हामी शर्त है पीछे बना दिया है और पहले इल्हाम में दर्ज नहीं था? यदि समझ ऐसी ही अपूर्ण है तो मोटे तौर पर समझ लो कि इल्हाम के शब्दों में हाविय: का ज़िक्र था और हाविय: की ख़ूबी मौत समझी गई थी। अब सच कहो कि क्या आथम भविष्यवाणी की मीआद के अन्दर बेचैनी में नहीं रहा जो हाविय: का चरितार्थ है? क्या कह सकते हो कि आराम और तसल्ली से रहा? क्या यह सच नहीं कि वह मीआद

से बाहर होकर और ईसाइयत पर आग्रह कर के हमारे अन्तिम विज्ञापन से सात माह तक मर गया? क्या दिखा सकते हो कि अब तक वह कहीं जीवित बैठा है? क्या ये ऐसी बातें हैं जो किसी को समझ में नहीं आ सकतीं? तो इन्कार पर आग्रह यदि बेईमानी नहीं तो और क्या है? सच तो यह है कि दुनिया किसी पहलू से प्रसन्न नहीं हो सकती। आथम ने नर्मी और शर्म ग्रहण की और उसका हृदय भय से भर गया, तो ख़ुदा ने इल्हाम की शर्त के अनुसार भय के दिनों में उसे छूट दे दी परन्तु दुनिया के लोगों ने फिर यही कहा कि "आथम क्यों नहीं मरा"। और लेखराम ने कुछ भय न किया और धृष्टता दिखाई। इसलिए ख़ुदा तआला ने ठीक-ठाक मीआद के अन्दर उसे मार दिया और दुनिया के लोगों ने कहा कि "लेखराम क्यों मर गया।" अवश्य कोई गुप्त षड्यंत्र होगा। तो वह जो मीआद के अन्दर मरने से बचाया गया उस पर भी विरोधियों का शोर उठा कि क्यों बचाया गया और जो मीआद के अन्दर पकड़ा गया उस पर भी शोर उठा कि क्यों पकड़ा गया।

और जैसा कि लेखराम के बारे में सत्रह वर्ष पहले बराहीन अहमदिया में सूचना मौजूद है ऐसा ही आथम के बारे में भी बराहीन अहमदिया में सूचना मौजूद है। जो व्यक्ति बराहीन अहमदिया का पृष्ठ 241 ध्यान पूर्वक पढ़ेगा उसे इस बात को स्वीकार करना पड़ेगा कि वास्तव में बराहीन अहमदिया में ईसाइयों के उस फित्नः की जो आथम की मीआद गुज़रने के बाद प्रकटन में आया ख़बर दी गई है। इन बातों पर विचार करने से एक ईमानदार का ईमान शक्ति पाता है, परन्तु अफसोस कि हमारे विरोधी प्रतिदिन बेईमानी में बढ़ते जाते हैं। न मालूम उनके भाग्य में क्या लिखा है। मौलवियों की हालत पर तो बहुत ही अफसोस है कि उनको आसार- ए नबविय: के द्वारा आथम की भविष्यवाणी के बारे में ख़बर दी गई थी, परन्तु उन्होंने इस ख़बर की भी कुछ परवाह नहीं की एक बुद्धिमान इन्सान जब बराहीन अहमदिया को खोलकर पृष्ठ - 241 में ईसाइयों के ज़िक्र, उनके छल और सच पर पर्दा डालने की भविष्यवाणी के बाद फिर उस इल्हाम को पढ़ेगा الفتنة هٰهنا فاصبر كما صبر اولوا العزم۔ और फिर आगे

चलकर जब पृष्ठ- 511 पर एक मुफ़्तरी और धृष्ट मुसलमान की चर्चा के बाद फिर उस इल्हाम को पढ़ेगा- الفتنة هٰهنا فاصبر كما صبر اولوا العزم. और फिर आगे चलकर जब पृष्ठ- 557 में एक चमकते हुए निशान की चर्चा के पश्चात् फिर उस इल्हाम को पढ़ेगा-الفتنة هٰهنا فاصبر كما صبر اولوا العزم तो इन तीन फ़ित्नों की कल्पना से जो पृष्ठ-241 और 511 और 557 बराहीन अहमदिया में इस समय से सत्रह वर्ष पूर्व लिखी हुई है स्वाभाविक तौर पर उसके हृदय में एक प्रशन उत्पन्न होगा कि यह तीन फ़ित्ने कैसे हैं जिन में से एक ईसाइयों से संबंध रखता है और एक किसी षड्यंत्र बनाने वाले मुसलमान से और एक खुले खुले निशान के प्रकटन के समय से। और फिर जब घटनाओं की तलाश में पड़ेगा तो वे तीन बड़े उत्पात उसकी दृष्टि के सामने आ जाएंगे उनमें से प्रत्येक महा फ़ित्नः कहलाने के योग्य है। तब ख़ुदा का गहरा ज्ञान देखकर अवश्य सज्दा करेगा जिसने उस समय ये ख़बरें दीं जबकि इन तीनों फ़ित्नों का **नामो निशान न था।** यदि ये तीनों फ़ित्ने पहेली के तौर पर किसी घटनाओं के जानने वाले के सामने प्रस्तुत किए जाएं तो वह तुरन्त उत्तर देगा कि एक फ़ित्नः आथम की भविष्यवाणी से संबधित है जो ईसाइयों और उनके सहायक कंजूस मुसलमानों से प्रकटन में आया। अर्थात् उन मुसलमानों से जिनका नाम इस भविष्यवाणी में यहूदी रखा है। और दूसरा फ़ित्नः मुहम्मद हुसैन बटालवी के काफ़िर ठहराने का फ़ित्नः है और तीसरा वह फ़ित्नः जो हिन्दुओं की ओर से ख़ुदा के निशान के प्रकट होने के बाद घटित हुआ। ये तीन फ़ित्ने हैं जो शोर से भरपूर उत्पात के समान प्रकटन में आए जिन की ख़ुदा ने सत्रह वर्ष पहले ख़बर दे दी थी।

इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि इन तीनों में से कोई फ़ित्नः भी क़ौमी शोर और कोलाहल से ख़ाली न था और प्रत्येक में नितान्त स्तर का जोश भरा हुआ था और प्रत्येक में असाधारण शोर उठा था। अतः ईसाइयों का फ़ित्नः उस समय घटित हुआ था जब आथम भविष्यवाणी की मीआद के बाद जीवित पाया गया। **पादरियों को भली-भांति मालूम था** कि इल्हामी भविष्यवाणी में स्पष्ट शर्त थी कि आथम रुजू की हालत में जो एक हार्दिक कार्य है मीआद में

मरने से पृथक रखा गया है और यह भी वे ख़ूब जानते थे कि आथम भविष्यवाणी के भय से अवश्य डरता रहा। और वह भी मीआद के दिनों में ईसाइयों के पक्षपात पर स्थापित नहीं रह सका और उनकी मज्लिसों से भाग कर फीरोज़पुर के एकान्तवास में जा बैठा। और उनको स्वयं मालूम था कि एक बार बीमारी के समय में उसने यह भी कहा कि "मैं पकड़ा गया।" और ख़ूब जानते थे कि स्वाभाविक तौर पर उसकी रूह डरने वाली थी और उन्हें यथायोग्य इस बात की जानकारी थी कि उसने अपनी गतिविधियों से भय व्यक्त किया, दृढ़ता प्रकट न की और पहले पक्षपाती आचरण को ऐसा परिवर्तित कर दिया कि मीआद के बीच में इस्लाम धर्म के विरोध में कभी दो पंक्तियों का निबंध भी किसी अख़बार में नहीं छपवाया और न कोई पुस्तक निकाली जैसा कि हमेशा से उसकी आदत थी और न किसी मुसलमान से बहस की, अपितु इस प्रकार से दिनों को गुज़ारा जैसा कि किसी ने ख़ामोशी का रोज़ा रखा हुआ होता है। और फिर आश्चर्य यह कि चार हज़ार रुपया देने पर भी क़सम न खाई और मार्टिन क्लार्क सर पीट-पीट कर रह गया, परन्तु नालिश न की और सिधाए हुए सांप इत्यादि आरोपों को सिद्ध न कर सका। इन समस्त कारणों से पादरी लोगों को निश्चित ज्ञान था कि वह कायर और डरपोक निकला और मीआद के बाद भी वह अपना क़िस्सा याद करके रोया। परन्तु पादरियों ने ख़ुदा तआला का भय न किया और उसको अमृतसर के बाज़ारों में लिए फिरे कि देखो आथम साहिब जीवित मौजूद है और भविष्यवाणी झूठी निकली। बहुत मलिन स्वभाव मौलवी जो नाम के मुसलमान थे और कुछ अयोग्य और दुनिया के पुजारी अख़बार वाले उनके साथ हो गए और लानत एवं धिक्कार, झुठलाने तथा अपशब्द निकालने में उनके भाई बन बैठे हैं और बड़े जोश से इस्लाम को लज्जित कराया। फिर क्या था ईसाइयों को और भी अवसर हाथ लगा तो उन्होंने पेशावर से लेकर इलाहाबाद, बम्बई, कलकत्ता और दूर-दूर के शहरों तक अत्यन्त धृष्टता से नाचना आंरभ किया और इस्लाम धर्म पर ठट्ठे किए। और ये सब यहूदियों जैसे मौलवी और अख़बार वाले उनके साथ ख़ुश- ख़ुश और हाथ में हाथ मिलाए हुए थे। उन पर आकाश

से ख़ुदा की लानत बरस रही थी परन्तु उन्हें दिखाई नहीं देती थी। उस समय वह ख़ुदा के प्रकोप के नीचे थे परन्तु अहंकार के जोश की धूल और ग़ुबार से अंधे के समान हो रहे थे। ये लोग उस समय शैतान की आवाज़ के सत्यापन करने वाले थे और आकाश की आवाज़ की कुछ परवाह न थी। उन्हीं दिनों में एक भाग्यहीन अयोग्य मुसलमान एडीटर ने लाहौर से अपने अख़बार में आथम को सम्बोधित करके तथा मेरा नाम लेकर लिखा कि "आथम साहिब ख़ुदा की प्रजा पर उपकार करेंगे यदि नालिश करके इस व्यक्ति को दण्ड दिलाएंगे।" इस मूर्ख ने अपने इन जोश से भरे शब्दों से मुर्दे को बुलाना चाहा। परन्तु चूंकि वह मर चुका था इसलिए हिल न सका और ख़ुदा तआला जानता है कि मैं स्वयं चाहता था कि यदि आथम ने क़सम नहीं खाई तो नालिश ही करता परन्तु आथम तो मुर्दा था। जीवित ख़ुदा की भविष्यवाणी का रोब उसे मार गया था। यद्यपि जीता दिखाई देता था परन्तु उसमें जान न थी। मैं सच -सच कहता हूँ कि यदि ये सब लोग उसके टुकड़े-टुकड़े भी कर देते तब भी वह कभी नालिश न करता और यदि मैं एक करोड़ रुपया भी उसको देता तो कभी क़सम न खाता। उसका दिल मेरा क़ाइल हो गया था और ज़बान पर इन्कार था तथा मैं ख़ूब जानता हूँ कि इस मामले में आथम से अधिक मेरी सच्चाई का और कोई गवाह न था। इसलिए पादरियों ने आथम के मामले में सच को छुपा कर बहुत धृष्टता की और अमृतसर से आरंभ करके पंजाब तथा हिन्दुस्तान के बड़े-बड़े शहरों में नाचते फिरे और बहरूप निकाले और ऐसा कोलाहल किया कि अंग्रेज़ी शासन में आज तक इसका कोई उदाहरण नहीं मिल सकता। और इस झूठी ख़ुशी में जिस के मुक़ाबले पर उन्हीं की अन्तर्आत्मा उनके मुंह पर तमाचे मारती थी बहुत बुरा नमूना दिखाया। और गन्दी गालियों से भरे हुए पत्र मेरी ओर भेजे और वह शोर किया और वह धृष्टता व्यक्त की कि जैसे हज़ारों विजय उनके भाग्य में आ गईं और हज़ारों विज्ञापन छपवाए परन्तु फिर भी इतने और इस सीमा तक जोश के साथ **आथम का मुर्दा हिल न सका।** और इस झूठी विजय की ख़ुशी में उसने कोई दो पृष्ठ की पुस्तिका भी प्रकाशित न की अपितु एक अख़बार में प्रकाशित

कर दिया कि यह सम्पूर्ण फ़ित्नः और कोलाहल जो ईसाइयों की ओर से हुआ यह मेरी इच्छा के विरुद्ध हुआ। मैं इनके साथ सहमत नहीं। और यद्यपि सच्ची गवाही को छुपाया परन्तु विरोधपूर्ण तेज़ी और चालाकी से भी चुप रहा, यहां तक कि ख़ुदा के इल्हाम के अनुसार हमारे अन्तिम विज्ञापन से सात माह के अन्दर मर गया। अतः बड़ा भारी फ़ित्नः यह था जिस में इस्लाम धर्म पर ठट्ठा किया गया और जिसमें अभागे मौलवियों तथा अन्य अज्ञानी मुसलमानों ने पादरियों की हां में हां मिलाकर अपना मुंह काला किया। और एक इल्हामी भविष्यवाणी को अकारण झुठलाया और इस्लाम के भारी अपमान करने वाले हुए। अब बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 242 को ध्यानपूर्वक पढ़ो और इन्साफ़ करो कि इस में कैसी सफाई से इस फ़ित्ने की ख़बर है और कैसा साफ़-साफ़ लिखा है कि सर्वप्रथम ईसाई छल करेंगे और फिर सच्चाई प्रकट हो जाएगी।

दूसरा फ़ित्नः जो दूसरी श्रेणी पर था मुहम्मद हुसैन बटालवी की ओर से क़ाफिर ठहराने का था। इसमें भी जन सामान्य का शोर पादरियों के शोर से कुछ कम न था। इसी फ़ित्ने के आयोजन पर देहली में सात या आठ हज़ार के लगभग क़ाफिर ठहराने वाले, और झुठलाने वाले जामे मस्जिद में मेरे मुकाबले पर एकत्र हुए थे। यदि ख़ुदा की कृपा शामिल न होती तो एक ख़तरनाक उत्पात मच जाता। अतः इस फ़ित्ने का व्यवस्थापक मुहम्मद हुसैन बटालवी था और इसके साथ नज़ीर हुसैन देहलवी था जिसके बारे में अल्लाह तआला ने उस इल्हाम में फ़रमाया जो पृष्ठ 511 में दर्ज है -

تَبَّتْ يَدَآ اَبِیْ لَهَبٍ وَّ تَبَّ مَا كَانَ لَهٗ اَنْ يَدْخُلَ فِيْهَا اِلَّا خَآئِفًا

अर्थात् अबू लहब के दोनों हाथ तबाह हो गए जिससे उस ने कुफ्र का फ़त्वा लिखा और वह स्वयं भी तबाह हो गया। उसे नहीं चाहिए था कि इस मुकदमा में हस्तक्षेप करता परंतु डरता हुआ। यह फ़ित्नः भी पेशावर से लेकर कलकत्ता मुंबई हैदराबाद सम्पूर्ण पंजाब तथा हिंदुस्तान में फैल गया और मूर्ख मुसलमानों ने राफिज़ियों की तरह मुझ पर लानत भेजना पुण्य का कारण समझा

और मुसलमानों के आपसी संबंध टूट गए और भाई-भाई से और बेटा बाप से पृथक हो गया। इस्लाम को त्याग दिया गया यहां तक कि हमारी जमाअत में से किसी मुर्दे का जनाज़ा पढ़ना कुफ्र का कारण समझा गया।

तीसरा फित्नः जो तीसरी श्रेणी पर है जो अब लेखराम की मौत पर खुला -ख़ुला निशान प्रकट होने के समय हिंदुओं की ओर से घटित हुआ और उन्होंने यथाशक्ति फ़ित्ने को चरम सीमा तक पहुंचाया और क़त्ल की योजनाएं बनाई और बना रहे हैं और सरकार को उकसाया तथा उकसा रहे हैं।★ इस फ़ित्नः के साथ चूंकि एक ऐसा खुला-खुला निशान है जिससे पूरे विरोधियों के हृदयों में भूकंप आ गया है और महान विजय प्राप्त हुई है और बहुत से अन्धे सुजाखे होते जा रहे हैं। इस लिए यह फ़ित्नः तीसरी श्रेणी पर है।

यह तीन फित्ने हैं जिन की आज से सत्रह वर्ष पहले बराहीन अहमदिया में चर्चा है। अब यदि बड़े से बड़े पक्षपाती मुसलमान या ईसाई या हिन्दू के सामने यह पुस्तक रख दी जाए और उसे इस तीन फ़ित्नों का स्थान दिखाया जाए। और उस से क़सम से लेकर पूछा जाए कि ये तीनों फ़ित्ने निश्चित तौर पर घटित हो चुके हैं या नहीं। और क्या ये तीनों घटनाएं जो बड़े ज़ोर शोर से घटित हो चुकी हैं। नहीं बताते तथा गवाही नहीं देते कि वास्तव में एक फ़ित्नः ईसाइयों की ओर से भी हुआ जिस में लाखों लोगों का कोलाहल हुआ। और गिरोह के गिरोह अत्यन्त जोश के साथ बाज़ारों में फिरते थे और बहरूप निकालते थे और दूसरा फित्नः वास्तव में मुहम्मद हुसैन बटालवी की ओर से हुआ जिसने मुसलमानों के विचारों को इस ख़ाकसार के बारे में भड़कती हुई आग के आदेश में कर दिया और भाइयों को भाइयों से और बापों को बेटों से और मित्रों को मित्रों से पृथक कर दिया रिश्ते नाते तोड़ डाले।

और तीसरा फित्नः लेखराम की मौत के समय और ख़ुदा के निशान के प्रकट होने की ईर्ष्या से हिंदुओं की ओर से हुआ इन फित्नः के जोश में कई

★**हाशिया-** 8 अप्रैल 1897 ई० को डिस्ट्रिक्ट सुप्रिन्टेनडेन्ट पुलिस के द्वारा घर की तलाशी कराई। इसी से।

मासूम बच्चे क़त्ल किए गए। रावलपिण्डी में लगभग 40 आदमियों को ज़हर दिया गया और मुझे क़त्ल की धमकियां दी गईं तथा सरकार को भड़काने के लिए प्रयास किया गया और भविष्य में मालूम नहीं कि क्या कुछ करेंगे।★ अब बताओ कि क्या यह सच नहीं कि जैसे बराहीन अहमदिया में व्याख्या और विवरण सहित तीन फित्नों की चर्चा की गई थी वे तीनों फित्ने प्रकट में न आ गए। क्या मुहम्मद हुसैन बटालवी सय्यिद अहमद खान साहिब के.सी.एस.आई या नज़ीर हुसैन देहलवी या अब्दुल जब्बार गज़नवी, या रशीद अहमद गंगोही या मुहम्मद बशीर भोपाली या ग़ुलाम दस्तगीर कसूरी या अब्दुल्लाह टोंकी प्रोफ़ेसर लाहौर या मौलवी मुहम्मद हसन रईस लुधियाना क़सम खा सकते हैं कि ये तीन फ़ित्ने जिन की चर्चा भविष्यवाणी के तौर पर बराहीन अहमदिया में की गई है प्रकटन में नहीं आ गए। यदि कोई साहिब इन महानुभावों में से मेरे इल्हाम की सच्चाई के इन्कारी हैं तो क्यों लोगों को तबाह करते हैं मेरे मुकाबले पर क़सम खाएं कि ये तीनों फ़ित्ने जो बराहीन अहमदिया में बतौर भविष्यवाणी वर्णन किए गए हैं ये भविष्यवाणियां पूरी नहीं हुईं और यदि पूरी हो गई हैं तो हे सर्वशक्तिमान ख़ुदा! 41 दिन तक हम पर वह अज़ाब उतार जो अपराधियों पर उतरता है। और यदि खुदा तआला के हाथ से और किसी मनुष्य के माध्यम के बिना वह अज़ाब जो आकाश से उतरता और खा जाने वाली आग की तरह झूठों को मिटा देता है 41 दिन के अंदर न उतरा तो मैं झूठा और मेरा समस्त कारोबार झूठा होगा और मैं वास्तव में समस्त लानतों के योग्य ठहरूंगा और वह यदि किसी दूसरे व्यक्ति की ओर से इस प्रकार की भविष्यवाणियां जिन को स्वयं वर्णन करने वाले ने अपने लेखों और छपी हुई पुस्तकों द्वारा विरोधियों और मित्रों के समय से पूर्व प्रकाशित कर दिया हो तथा अपनी श्रेष्ठता में मेरी भविष्यवाणियों के बराबर हों इस युग में दिखा दें जिनमें ख़ुदाई शक्ति महसूस हो तब भी मैं झूठा हो जाऊंगा और क़सम के लिए आवश्यक होगा कि जो साहिब क़सम खाने पर तत्पर हों क़ादियान में आकर मेरे सामने क़सम खाएं मैं किसी के पास नहीं जाऊंगा यह धर्म का कार्य

★ **हाशिया-** 8 अप्रैल 1897 ई को मेरे घर की तलाशी ली गई। इसी से।

है इसलिए जो लोग मौलवियत की डींगें मारने के बावजूद इस में सुस्ती करें तो स्वयं झूठे ठहरेंगे। यदि मुझ जैसे व्यक्ति को जिस का नाम दज्जाल रखते हैं पराजित कर लें तो जैसे सम्पूर्ण विश्व को बुराई से छुड़ाएंगे और क़सम के समय यह बात आवश्यक होगी कि मैं उनकी क़सम से पूर्व पूरे दो घंटे तक सामान्य जलसे में इन भविष्यवाणियों की सच्चाई के तर्क उन के सामने वर्णन करूंगा ताकि वे जल्दी करके मर न जाएं तथा उन पर हुज्जत पूरी हो जाए और उनका अधिकार नहीं होगा कि क़सम खाने के अतिरिक्त एक वाक्य भी मुहं पर लाएं ख़ामोशी से दो घण्टे मेरे वर्णन को सुनेंगे। फिर कथित नमूने के अनुसार क़सम खाकर अपने घरों को जाएंगे। स्मरण रहे कि मैंने सय्यद अहमद खान साहिब का नाम इन्कारियों की मद में इस लिए लिखा है कि उन को ख़ुदा के उस इल्हाम अपितु वह्यी से भी इन्कार है जो ख़ुदा से उतरती और परोक्ष के ज्ञान की श्रेष्ठता अपने अन्दर रखती है चूंकि वह भी अब आयु की मंज़िलों को तय कर चुके हैं मैं नहीं चाहता कि वह यूरोप के अन्धे विचारों का अनुकरण कर के इस ग़लती को क़ब्र में ले जाएं। अब यद्यपि वह ध्यान न दें और इस बात को उपहास में उड़ाएं परन्तु मैं ने तो तब्लीग़ करना थी वह कर चुका। मैं डरता हूं कि मैं पूछा न जाऊं कि एक खोए हुए बंदे को तुम ने क्यों तब्लीग़ न की ।

कुछ मूर्ख कहते हैं कि हर बार **अज़ाब और मौत** की भविष्यवाणियां क्यों की जाती हैं। ये मूर्ख नहीं जानते कि प्रत्येक नबी इन्ज़ारी (डराने वाली) भविष्य-वाणियां करता रहा है यदि वैध नहीं है इसके क्या मायने हैं कि **मसीह मौऊद के दम से विरोधी मरेंगे।**

अत: ये नौ साहिब हैं जो क़सम खाने के लिए चुने गए हैं क्योंकि इनमें से प्रत्येक एक जमाअत अपने साथ रखता है। अत: उसके साथ फैसला करने से जमाअत का फैसला स्वयं मध्य में हो जाएगा। क़सम का विषय यही होगा ये भविष्यवाणियां पूरी नहीं हुईं पहले से ही बराहीन अहमदिया में इसकी चर्चा नहीं है। इस बात को भली प्रकार स्मरण रखना चाहिए यद्यपि इन्कारी अपनी मूर्खता और नादानी से बात-बात में झुठलाते हैं तथा प्रत्येक भविष्यवाणी को घटना के

विरुद्ध ठहराते हैं परंतु उनका वह झुठलाना जो एक भयावह फित्न: के रंग में पैदा हुआ और उत्पात की सीमा तक पहुंच गया जिसके साथ एक असभ्यतापूर्ण तूफान उठा और भयंकर परिणाम पैदा हुए वे केवल तीन बार घटित हुए उसी का नाम बराहीन अहमदिया में तीन महा फ़ित्ने रखा गया है यह पुस्तक अर्थात् बराहीन अहमदिया आज के दिन से सत्रह वर्ष पूर्व सम्पूर्ण देश अपितु अरब देश और फ़ारस तक प्रकाशित हो चुकी है और ये फ़ित्ने जिस शक्ति और श्रेष्ठता पूर्वक प्रकटन में आए और जिस भयंकर शोर के साथ इस देश के किनारों तक उनको फैलाया गया, यह ऐसी बात नहीं है जो किसी से छुपी रही हो। अपितु पंजाब और हिंदुस्तान के पुरुष और स्त्री तथा हिंदू और मुसलमान इन तीनों फित्नों को इस प्रकार से याद रखते हैं कि कदापि आशा नहीं कि इन तीनों फित्नों की चर्चा इतिहास के पन्नों से मिट सके जो व्यक्ति इन तीनों फित्नों की भयंकर घटनाओं पर सूचना पाकर फिर बराहीन अहमदिया में उनकी ख़बर देखना चाहे या बराहीन अहमदिया में इन तीनों फ़ित्नों की भविष्यवाणी पढ़ कर और फिर बाह्य घटनाओं में उसे पूर्ण विश्वास हो जाएगा कि बराहीन अहमदिया में उन तीन फित्नों की चर्चा है जो प्रकटन में आ गए या यों कहो कि जो तीन फ़ित्ने बाह्य प्रकटन में देखे गए तो वही उनका नमूना देखना चाहिए तो ये दोनों परिस्थितियां हैं जो पहले से दर्ज हैं। अब सोचो कि आथम के बारे में जो भविष्यवाणी थी जिसके बारे में ईसाइयों, यहूदियों जैसे मौलवियों ने शोर मचाया और लेखराम के बारे में जो भविष्यवाणी थी जिस के बारे में आर्यों ने तूफान खड़ा किया है ये दोनों सुदृढ़ चट्टान पर रखी गई हैं। हे मुसलमानों की संतान सीमा से न बढ़ते जाओ। संभव है कि मनुष्य अपनी बुद्धि और अपने विवेक से एक राय को सही समझे और वास्तव में वह राय ग़लत हो तथा संभव है कि एक व्यक्ति को झूठा समझे और वास्तव में वह सच्चा हो। तुम से पहले बहुत से लोगों को धोखे लगे तुम क्या चीज़ हो कि तुम्हें न लगें। इसलिए डरो और संयम का मार्ग ग्रहण करो ताकि परीक्षा में न पड़ो। मैं बार-बार कहता हूं कि यदि यह मनुष्य का कार्य होता तो कब का तबाह किया जाता और इससे पहले कि तुम्हारा हाथ उठता ख़ुदा का

हाथ उसे तबाह कर देता है देखो। ख़ुदा फ़रमाता है-

فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖۤ اَحَدًا ۙ﴿۲۷﴾ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ

(अलजिन्न 27, 28)

अर्थात् ग़ैब (परोक्ष की बातों को) को चुने हुए लोगों के अतिरिक्त किसी पर नहीं खोला जाता। अब सोचो और ख़ूब ध्यान पूर्वक उस पुस्तक को पढ़ो कि क्या वह परोक्ष(ग़ैब) जिस की इस आयत में तारीफ है पूर्ण रूप से प्रस्तुत नहीं किया गया। मैं तुम्हें सच सच कहता हूं कि जो कुछ तुम्हें दिखाया गया है यदि उन अन्धों को दिखाया जाता जो इस सदी से पूर्व ग़ज़र गए तो वे अन्धे न रहते। इसलिए तुम प्रकाश को पाकर उसे रद्द न करो । ख़ुदा तुम्हें रोशन आंखें देने के लिए तैयार है और पवित्र हृदय प्रदान करने के लिए तत्पर है वह नवीन प्रकार से अपना अस्तित्व तुम पर प्रकट करना चाहता है उसके हाथ एक नया आकाश नई पृथ्वी बनाने के लिए लम्बे हुए हैं। अतः तुम हस्तक्षेप मत करो और नेकी से शीघ्र झुक जाओ। तुम अपने नफ़्सों पर ज़ुल्म ना करो और अपनी संतान के शत्रु न बनो ताकि ख़ुदा तुम पर दया करे ताकि वह तुम्हारे गुनाह माफ करे और तुम्हारे दिनों में बरकत दे। देखो आकाश क्या कर रहा है और पृथ्वी का ख़ुदा क्योंकर खींच रहा है। अफसोस कि तुम ने सदी के सर को भी भुला दिया।

पन्द्रहवीं भविष्यवाणी जो आथम की भविष्यवाणी और लेखराम की भविष्यवाणी से अत्यंत समानता रखी है वह इल्हाम है जो आथम को मीआद गुज़रने के बाद पुस्तक "अनवारुल इस्लाम" में प्रकाशित किया गया था वह यह है-

اطلع اللّٰہ علی ھَمِّہٖ و غمّہ و لن تجد لسنۃ اللّٰہ تبدیلا۔ ولا تعجبوا ولا تحزنوا و انتم الاعلون ان کنتم مؤمنین۔ و بعزّتی و جلالی انّک انت الاعلٰی۔ و نمزق الاعداء کُلّ ممزق۔ انا نکشف السرّ عن ساقہٖ۔ یومئذ یفرح المؤمنون۔ ثُلّۃ من الاولین و ثُلّۃ من الاٰخرین۔ ھذہ تذکرۃ فمن شاء اتخذالی ربّہٖ سبیلا

अर्थात् ख़ुदा ने देखा कि आथम का दिल दु:ख और ग़म से भर गया और

तू ख़ुदा की सुन्नत में परिवर्तन नहीं पाएगा अर्थात् वह डरने वाले दिल के लिए अज़ाब की भविष्यवाणी को विलम्ब में डाल देता है। यही उसकी सुन्नत (नियम) है और फिर फ़रमाया कि जो घटना हुई उससे आश्चर्य मत करो और यदि तुम ईमान पर कायम रहोगे तो अंतिम विजय तुम्हारी ही होगी और मुझे मेरे सम्मान और प्रताप की क़सम है कि अंत में तू ही विजयी होगा और हम शत्रुओं को टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे। हम इल्हामी भविष्यवाणी की गुप्त बातों को उसके पिंडली से नंगा करके दिखाएंगे उस दिन मोमिन लोग प्रसन्न होंगे। पहला गिरोह भी और पिछला गिरोह भी। यह ख़ुदा की ओर से एक स्मरण कराना है इसलिए जो चाहे स्वीकार करे। अब देखो कि यह भविष्यवाणी तीन वर्ष से कुछ अधिक समय की अर्थात् उस समय की जब आथम की मीआद का अंतिम दिन था इसमें ख़ुदा तआला का वादा था यह भविष्यवाणी का असर जो मूर्खों पर संदिग्ध है उसे हम नंगा करके दिखा देंगे। तो उसने लेखराम के निशान के बाद अपने वादे के अनुसार उस बात को नंगा करके दिखा दिया और बराहीन अहमदिया की भविष्यवाणियों को एक दर्पण की तरह आगे रख दिया। अतः उसका यह फ़ज़्ल (कृपा) इस युग पर है कि उस ने नई मरिफत का उद्गम खोला। **मुबारक वह जो इस से ले**। और वह जो फ़रमाया था कि पहला गिरोह भी उस समय प्रसन्न होगा और पिछला गिरोह भी। ये समस्त भविष्यवाणियां इस समय में प्रकटन में आ गईं। अतः लेखराम के निशान के प्रकट होने से ईमान वालों की शक्ति बहुत बढ़ गई और उन्हें वह प्रसन्नता पहुंची जिस का अनुमान लगाना कठिन है हज़ारों ईमानदारों पर आर्द्रता छा गई। और आत्मविस्मृति के जोश से प्रसन्नता आंसुओं के मार्ग से निकली। जैसे गुप्त ख़ुदा को उन्होंने आंखों से देख लिया। यह विचित्र घटना हुई कि हिंदू और आर्य तो लेखराम के शोक से रोए और ईमानदारों तथा सच्चों का गिरोह मारिफत में वृद्धि की ख़ुशी से रोया। बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 242 में जो निम्नलिखित इल्हामों में जो एक भविष्यवाणी थी उसी निशान के बाद मैंने पूर्ण रूप से पूरी होती देखी और वह यह है-

اصحاب الصُّفة۔ وما ادرٰک ما اصحاب الصُّفة ۔ ترٰی اعینھم تفیض من

الدمع يُصَلُّون عَلَيْك۔ ربنا اننا سمعنا مناديًا ينادى للايمان و داعيًا الى الله و سراجا منيرا۔ اَمْلُوا۔

अनुवाद: हुज़ूर के मित्र! और तू क्या जानता है कि क्या है हुज़ूर के साथ बैठने वाले! (मित्र) तू देखेगा कि उनकी आंखों से आंसू जारी होंगे, तुझ पर दरूद भेजेंगे। हे हमारे ख़ुदा हमने एक मुनादी करने वाले को सुना जो तेरे नाम की मुनादी करता है और लोगों को ईमान की ओर बुलाता है और एक भागीदार रहित ख़ुदा की ओर बुलाता है और एक चमकता हुआ दीपक है। लिख लो।

और अनवरुल इस्लाम की उपरोक्त कथित भविष्यवाणी में यह भी स्पष्ट तौर पर लिखा है एक निशान के बाद एक और गिरोह भी इस जमाअत के साथ सम्मिलित हो जाएगा और वे दोनों गिरोह उस निशान पर प्रसन्न होंगे। अत: अब यह भविष्यवाणी पूरी हो रही है और विरोधियों के विनय पूर्वक बहुत से पत्र पर पत्र आ रहे हैं कि हम ग़लती पर थे इस पर ख़ुदा की हर प्रकार की प्रशंसा।

सोलहवीं भविष्यवाणी- बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 227 में एक आर्य के बारे में एक भविष्यवाणी है जिसका नाम **मलावामल** है वह अभी तक जीवित है यह व्यक्ति क्षय के रोग में ग्रस्त हो गया था। एक दिन वह मेरे पास आकर और जीवन से निराश होकर बहुत बेचैनी के साथ रोया। मुझे याद पड़ता है कि उसने उस दिन भयावह स्वप्न भी देखा था, जहां तक मुझे याद है स्वप्न यह था कि उसे एक जहरीले सांप ने काटा है और समस्त शरीर में ज़हर फैल गया। इस स्वप्न ने उस को बहुत संतप्त कर दिया। और पहले से एक हलके ज्वर ने जो खाने के बाद तेज़ हो जाता था। उसे बड़ी घबराहट में डाला हुआ था। इस लिए वह बेचैनी और लगभग बहुत निराशा की अवस्था में था। मेरे पास आ कर रोया। इसलिए मेरा दिल उसकी हालत पर नर्म हुआ और मैंने ख़ुदा के हुज़ूर उस आर्य के लिए दुआ की जैसा कि उस पहले आर्य के लिए दुआ की थी जिसका नाम शरमपत है और मुझे यह इल्हाम जो बराहीन के पृष्ठ 227 में मौजूद है

قُلْنَا يَا نَارُ كُوْنِىْ بَرْدًا وَّ سَلَامًا

अर्थात् हमने ज्वर की अग्नि को कहा कि ठंडी और सलामती हो। अत:

उसी समय उसको जो मौजूद था इस इल्हाम की सूचना दी गई तथा कई अन्य लोगों को सूचना दी गई कि वह मेरी दुआ की बरकत से अवश्य स्वस्थ हो जाएगा। तो इसके पश्चात् एक सप्ताह नहीं गुज़रा होगा कि वह आर्य ख़ुदा की कृपा से स्वस्थ हो गया यद्यपि आर्यों की ऐसी हालत है कि उनको सच्ची गवाही अदा करना मौत से अधिक बुरा है और परन्तु मैं अल्लाह तआला की क़सम खाकर कहता हूं कि यह घटना सही है और इसमें लेशमात्र भी अतिश्योक्ति की मिलावट नहीं। यदि इन घटनाओं के विषय के किसी भाग में मुझे संदेह होता तो मैं इन घटनाओं को कदापि न लिखता और अतिश्योक्ति करना अपनी ओर से अधिक बातें मिला देना लानती इन्सानों का काम है। ये दोनों घटनाएं शरमपत और मलावामल की सत्रह वर्ष से बराहीन अहमदिया में लिखी हुई हैं। तो जो लोग इन सन्देहों में पड़ते हैं कि विरोधियों के लिए हानि पहुंचाने के ही इल्हाम होते हैं वे इन दोनों इल्हामों पर विचार करें क्योंकि ये दोनों आर्य हैं। हमारा कार्य समस्त सृष्टि की सहानुभूति है। भला आर्य ही कोई उदाहरण दें कि उन्होंने इस प्रकार की सहानुभूति किसी मुसलमान से की है। मैं सच-सच कहता हूं कि सच्चे प्रेम से ख़ुदा के बंदों की हमदर्दी करना सच्चे मुसलमान के अतिरिक्त किसी से संभव ही नहीं है, हां दिखाने की साथ संभव हो तो हो, परंतु हृदय की पवित्र प्रफुल्लता से ठीक-ठाक सिद्धांत पर क़दम रख कर दूसरों को ये बातें प्राप्त नहीं हो सकतीं। मुसलमान स्वाभाविक तौर पर आवभगत को चाहते हैं इसीलिए खान पान में भी हिंदुओं से बचाव नहीं करते परंतु हिंदुओं में नफ़रत भी एक कृपणता की निशानी है। हां किसी अवज्ञाकारी पर ख़ुदा का प्रकोप होना चाहे मुसलमान हो या ईसाई अथवा हिंदू यह और बात है हमदर्दी के सिद्धांत से उसको कुछ संबंध नहीं।

और मैंने जो इन दोनों आर्यों की घटनाओं को प्रस्तुत करते समय क़सम खाई है यह इसलिए कि मैं विश्वास नहीं करता कि वे कम से कम इतनी सच्चाई को छुपाने के लिए तैयार न हो जाएं कि मेरे बारे में यह आरोप लगाएं कि इस ने असल घटनाओं में न्यूनाधिकता कर दी है और इसलिए क़सम खाई है कि आजकल आर्यों का इस्लाम के साथ विशेष वैर है।

मैं पुनः अल्लाह तआला की क़सम खाकर कहता हूं इन घटनाओं में एक कण भर विरोधाभास नहीं। ख़ुदा मौजूद है और झूठे के झूठ को ख़ूब जानता है यदि मैंने झूठ बोला है या मैंने इन किस्सों को एक कण भर न्यूनाधिक कर दिया है तो अत्यावश्यक है कि ऐसा गुमान करने वाला ख़ुदा की क़सम के साथ विज्ञापन दे दे कि मैं जानता हूं कि इस व्यक्ति ने झूठ बोला है या इसमें कमी -बेशी कर दी है और यदि नहीं की तो एक वर्ष तक इस झुठलाने का बवाल मुझ पर पड़े और अभी मैं भी क़सम खा चुका हूं अतः यदि मैं झूठा हूंगा तो मैंने इन को कम या अधिक किया होगा तो इस झूठ और इफ़्तिरा का दंड मुझे भुगतना पड़ेगा परंतु यदि मैंने पूरी ईमानदारी से लिखा है और ख़ुदा तआला जानता है कि मैंने पूरी इमानदारी से लिखा है तब झुठलाने वाले को ख़ुदा दंड दिए बिना नहीं छोड़ेगा। निस्संदेह समझो कि ख़ुदा है और वह हमेशा सच्चाई की सहायता करता है यदि कोई परीक्षा के लिए उठे तो बिल्कुल कामना है क्योंकि परीक्षा से ख़ुदा हम में और हमारे विरोधियों में निर्णय कर देगा। हमारे विरोधी मौलवियों के लिए भी यह अवसर है कि इन लोगों को उठाएं जैसा कि आथम के उठाने के लिए प्रयास किया था। निर्णय हो जाना प्रत्येक के लिए मुबारक है। इस से दुनिया को पता लग जाएगा कि ख़ुदा मौजूद है और सच्चों की दुआएं स्वीकार करता है। दयानंद और उसका शिष्य इस दुनिया से गुज़र गए परंतु नास्तिकता और कृपणता और पक्षपात की दुर्गन्ध छोड़ गए और मैं चाहता हूं वह दुर्गंध दूर हो। इसलिए मैं उस आर्य से भी क़सम से फ़ैसला करना चाहता हूं जैसा कि पहले आर्य से निवेदन किया गया है और मैं निश्चित तौर पर जानता हूं अपितु आंखों से देख रहा हूं कि ख़ुदा सच्चाई का दोस्त है सच्चाई के विरोधी का दुश्मन। सच्ची बात की गवाही देना एक ईमानदार के लिए कठिन नहीं परन्तु आर्यों के लिए आजकल बहुत कठिन है। यदि कोई झुठलाने वाला हो या आर्य हो या वह आर्य तो क़सम खा कर मुझ से यह फैसला कर ले। मैं जानता हूं कि वह ख़ुदा जो हमारा ख़ुदा है एक खा जाने वाली अग्नि है जो झूठे को कभी नहीं छोड़ेगा परंतु यदि सच्चा होगा तो उसकी कोई हानि नहीं। अब देखो सबूत इसे कहते हैं कि

धर्म के शत्रुओं के संदर्भ से जिस बरकत वाली भविष्यवाणी की सच्चाई प्रकट की गई है। दुनिया में इससे बढ़कर और क्या सबूत होगा ऐसे धर्म के शत्रु जैसा कि आजकल आर्य हैं ख़ुदा की भविष्यवाणियों की सच्चाई के गवाह हों। क्या ऐसी दवाइयां और ऐसे मौजूदा निशान ईसाइयों के पास भी हैं? यदि हैं तो एक आधा बतौर उदाहरण प्रस्तुत तो करें। तो निस्संदेह समझो कि सच्चा ख़ुदा वही ख़ुदा है जिसकी ओर **पवित्र क़ुर्आन बुलाता** है इसके अतिरिक्त मनुष्य की उपासनाएं या पत्थर उपासनाएं हैं। निस्सन्देह मसीह इब्ने मर्यम ने भी उस झरने से पानी पिया है जिससे हम पीते हैं, निश्चित तौर पर उसने भी उस फल में से खाया है जिस से हम खाते हैं परन्तु इन बातों को ख़ुदाई से क्या संबंध और इब्नियत (बेटा होने) से क्या रिश्ता है। ईसाइयों ने मसीह को एक बंधक ख़ुदा बनाने का माध्यम भी खूब निकाला अर्थात् लानत यदि लानत न हो तो ख़ुदाई बेकार और इब्नियत निरर्थक। किन्तु एकमत होकर समस्त शब्दकोश वाले मलऊन होने का अर्थ यह करते हैं कि ख़ुदा से दिल उद्दण्ड हो जाए बेईमान हो जाए, मुर्तद हो जाए, ख़ुदा का शत्रु हो जाए निर्दयी हो जाए, कुत्तों सुअरों और बंदरों से अधिक निकृष्ट हो जाए जैसा कि तौरात भी गवाही दे रही है तो क्या यह अर्थ भी एक सैकण्ड के लिए मसीह के लिए प्रस्तावित कर सकते हैं? क्या उस पर ऐसा समय आया था कि वह ख़ुदा का प्रिय नहीं रहा था? क्या उस पर वह समय आया था कि उसका हृदय ख़ुदा से उद्दण्ड हो गया था? क्या कभी उसने बेईमानी का इरादा किया था, क्या कभी ऐसा हुआ कि वह ख़ुदा का दुश्मन और ख़ुदा उसका दुश्मन था। फिर अगर ऐसा नहीं हुआ तो उसने लानत में से क्या हिस्सा लिया जिस पर मुक्ति का सम्पूर्ण मदार ठहराया गया। क्या तौरात गवाही नहीं देती के सलीब पर मरने वाला लानती होता है तो यदि सलीब पर मरने वाला लानती होता है तो निस्सन्देह वह लानत जो आमतौर पर सलीब पर मरने का परिणाम मसीह पर पड़ी होगी परन्तु लानत का अर्थ संसार की सहमति की दृष्टि से ख़ुदा से दूर होना ख़ुदा से उद्दण्ड होना है केवल किसी पर संकट आना यह लानत नहीं है अपितु लानत ख़ुदा से दूरी, ख़ुदा से नफ़रत, और ख़ुदा से दुश्मनी है। और लईन शब्दकोश की दृष्टि से

शैतान का नाम है। अब ख़ुदा के लिए सोचो कि क्या वैध है कि एक ईमानदार को ख़ुदा का दुश्मन और ख़ुदा से उद्दण्ड अपितु शैतान नाम रखा जाए, ख़ुदा को उसका दुश्मन ठहराया जाए। अच्छा होता कि ईसाई अपने लिए नर्क स्वीकार कर लेते हैं परंतु उस चुने हुए इन्सान को मलऊन और शैतान न ठहराते। ऐसी मुक्ति पर लानत है जो उसके बिना कि ईमानदारों को बेईमान और शैतान ठहराया जाए मिल नहीं सकती। पवित्र क़ुर्आन ने यह अच्छी सच्चाई प्रकट की मसीह को सलीबी मौत से बचाकर लानत की अपवित्रता से बरी रखा और इंजील भी यही गवाही देती है क्योंकि मसीह ने यूनुस के साथ अपनी उपमा प्रस्तुत की है और कोई ईसाई इस से अनभिज्ञ नहीं है कि यूनुस मछली के पेट में नहीं मरा था। फिर यदि मसीह क़ब्र में मुर्दा पड़ा रहा तो मुर्दे को जीवित से क्या समानता और जीवित की मुर्दे से कौन सी समानता। फिर यह भी मालूम है कि मसीह ने सलीब से मुक्ति पाकर शागिर्दों को अपने ज़ख़्म दिखाए। तो यदि उसको दोबारा प्रतापी तौर पर जीवन प्राप्त हुआ था तो उस पहले जीवन के ज़ख़्म क्यों शेष रह गए? क्या प्रताप में कुछ कमी शेष रह गई थी और यदि कमी रह गई थी तो क्योंकर आशा रखें कि वे ज़ख़्म फिर कभी क़यामत तक मिल सकेंगे। ये व्यर्थ किस्से हैं जिन पर ख़ुदाई का शहतीर रखा गया है। परंतु समय आता है अपतिु आ गया कि जिस प्रकार रुई को धुना जाता है उसी प्रकार अल्लाह तआला उन समस्त किस्सों को टुकड़े टुकड़े करके उड़ा देगा। अफ़सोस कि ये लोग नहीं सोचते कि यह कैसा ख़ुदा था जिसके ज़ख़्मों के लिए मरहम बनाने की आवश्यकता पड़ी। तुम सुन चुके हो ईसाई और रूमी और यहूदी और मजूसी पुस्तकालयों के प्राचीन चिकित्सा संबंधी पुस्तकें जो अब तक मौजूद हैं गवाही दे रही हैं कि यसू की चोटों के लिए एक मरहम तैयार किया गया था इसका नाम रखा **मरहम ईसा** है जो अब तक चिकित्सा की पुस्तकों में मौजूद है। नहीं कह सकते कि वह मरहम नुबुव्वत के युग से पहले बनाया होगा क्योंकि यह मरहम हवारियों ने तैयार किया था और नुबुव्वत के पहले हवारी कहां थे। यह कभी नहीं कह सकते कि इन ज़ख्मों का कोई अन्य कारण होगा न कि सलीब। क्योंकि नुबुव्वत के

तीन वर्ष के समय में अन्य कोई ऐसी घटना सलीब के अतिरिक्त सिद्ध नहीं हो सकती और यदि ऐसा दावा हो तो सबूत का भार दावेदार का दायित्व है। शर्म का स्थान है कि यह **ख़ुदा** और ये **ज़ख़्म** और यह **मरहम,** निस्संदेह में सही और सच्ची वास्तविकताओं पर कहां कोई पर्दा डाल सकता है और कौन ख़ुदा के साथ युद्ध कर सकता है। हमेशा के लिए जीवित रहने वाला और क़ायम रहने वाला केवल वह अकेला ख़ुदा है जो शरीर धारण करने और सीमित होने से पाक और अजर-अमर है तथा झूठे ख़ुदा के लिए इतना ही अच्छा है कि उस ने एक हज़ार नौ सौ वर्ष तक अपनी ख़ुदाई का दिल का सिक्का चला लिया। आगे याद रखो यह झूठी ख़ुदाई बहुत शीघ्र समाप्त होने वाली है। वे दिन आते हैं ईसाइयों के भाग्यशाली लड़के सच्चे ख़ुदा को पहचान लेंगे और पुराने बिछड़े हुए भागीदार रहित एक ख़ुदा को रोते हुए आ मिलेंगे। यह मैं नहीं कहता अपितु वह **रूह** कहती है जो मेरे अंदर है। जितना कोई सच्चाई से लड़ सकता है लड़े, जितना कोई छल कर सकता है करे, निस्सन्देह करे परन्तु अन्त में ऐसा ही होगा। यह आसान बात है कि पृथ्वी और आकाश परिवर्तित हो जाएं। यह आसान है कि पर्वत अपना स्थान छोड़ दें परन्तु ये वादे परिवर्तित नहीं होंगे।

सत्रहवीं भविष्यवाणी: यह भविष्यवाणी वह है जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 239 में दर्ज है और वह यह है-

يتم نعمته عَلَيك ليكون اٰية للمؤمنين

अर्थात् ख़ुदा अपनी नेमतें तुझ पर पूरी करेगा ताकि वे मोमिनों के लिए निशान हों। अर्थात् दुनिया के जीवन में तुझे जो कुछ भी नेमतें दी जाएंगी वे सब निशान के तौर पर होंगीं अर्थात् कथन भी निशान होगा जैसा कि लोगों ने धर्म महोत्सव लाहौर और पुस्तकों में देख लिया और कर्म भी निशान होगा, ख़ुदा के कर्म भी बतौर निशान मेरे माध्यम से प्रकटन में आ रहे हैं और संतान भी निशान होगी जैसा कि ख़ुदा ने नेक और बरकत वाली संतान का वादा दिया तथा पूर्ण किया, ख़ुदा की आर्थिक सहायता भी निशान होगी जैसा कि ख़ुदा ने बराहीन

अहमदिया में आर्थिक सहायता का वादा दिया और वह वादा अब पूर्ण हुआ और पूरब तथा पश्चिम से लोग आए और पूरब तथा पश्चिम से सहयोगी पैदा हुए जैसा कि पृष्ठ 241 में फ़रमाया था-

ينصرك رجال نوحى اليهم من السماء يأتون من كل فج عميق

अर्थात् वे लोगो तेरी सहायता करेंगे जिनके हृदयों में हम स्वयं डालेंगे वे दूर-दूर से और बड़े गहरे मार्गों से आएंगे। अत: अब वह भविष्यवाणी जो आज के दिन से सत्रह वर्ष पूर्व लिखी गई थी प्रकटन में आई। किसको मालूम था कि ऐसी सच्ची निष्कपटता और प्रेम से लोग सहायता में व्यस्त हो जाएंगे। देखो कहां और किस दूरी पर मद्रास है जिस में से ख़ुदा तआला का इरादा **अब्दुल रहमान हाजी अल्लाह रखा** को उसके समस्त परिजनों तथा मित्रों सहित खींच लाया जिन्होंने आते ही इख़लास तथा सेवाओं में वह उन्नति की कि सहाबा के रंग में प्रेम पैदा कर लिया और कहां है बम्बई जिस में मुंशी ज़ैनुद्दीन इब्राहीम जैसे निष्कपट जोशीले तैयार किए गए कहां है हैदराबाद दक्कन जिस में एक जमाअत जोशीले निष्कपट लोगों की तैय्यार की गई। क्या ये वही नहीं जिनके बारे में पहले से ही बराहीन अहमदिया में सूचना दी गई थी।

अठारहवीं भविष्यवाणी यह भविष्यवाणी है जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 240 में दर्ज है -

قل عندی شهادة من الله فهل انتم مؤمنون۔ قل عندی شهادة من الله فهل انتم مسلمون

अर्थात् मेरे पास ख़ुदा की एक गवाही है तो क्या तुम उस पर ईमान लाओगे। कह मेरे पास ख़ुदा की एक गवाही है क्या तुम उसको स्वीकार करोगे।

ये दोनों वाक्य बतौर भविष्यवाणी के हैं और ऐसे निशानों की ओर संकेत कर रहे हैं जो बतौर भविष्यवाणी के हों। क्योंकि ख़ुदा की गवाही निशान दिखाती है। अत: इसके पश्चात् यह गवाही दी कि चंद्र और सूर्य ग्रहण रमज़ान में किया जैसा के आसार (हदीसों) में महदी मौऊद की निशानी में आ चुका था। दूसरी गवाही ख़ुदा ने यह दी के आथम की भविष्यवाणी पर ईसाइयों ने घटनाओं को

छुपा कर छल किया और यहूदियों के गुण वाले मौलवियों ने उनकी हां के साथ हां मिलाई और शैतानी आवाज़ थी जो ईसाईयों की सहायता में पृथ्वी के शैतानों अर्थात् मुसलमानों ने दी थी फिर ख़ुदा ने गवाही को छुपाने के बाद आथम को मारा, इस भविष्यवाणी के सत्यापन के लिए लेखराम के निशान को प्रकट किया और वह आकाशीय आवाज़ थी जिस ने शैतानी आवाज़ को समाप्त कर दिया। आसारे नबविय्या (हदीसों) में पहले से लिखा हुआ था जो आथम की भविष्यवाणी में पूरा हुआ था। ख़ुदा की तीसरी गवाही वह भविष्यवाणी थी जो धर्म महोत्सव से पूर्व प्रकाशित की गई थी। चौथी ख़ुदा की गवाही लेखराम के मारे जाने का निशान था जिसने विरोधियों के कमर तोड़ दी। यह भविष्यवाणी जिन अनिवार्य बातों और स्पष्टता के साथ वर्णन की गई तथा प्रकाशित की गई थी वे समस्त बातें ऐसी थीं कि कोई बुद्धिमान विश्वास नहीं करेगा कि उनको अंजाम देना इन्सान के अधिकार में हो सकता है, क्योंकि इसमें मिआद बताई गई थी, दिन बताया गया था।★ तिथि बताई गई थी, समय बताया गया था और मौत का रूप बताया गया था। अर्थात् यह कि किस प्रकार मरेगा, रोग से या क़त्ल से और भविष्यवाणी के संकेत यह भी प्रकट करते हैं कि जिन लोगों ने इस बछड़े

★ **हाशिया**- ख़ुरूज अध्याय- 32 से सिद्ध होता है कि सामरी के बछड़े को मिटाने का इरादा यहूदियों की ईद के दिन में किया गया था परन्तु आग में जलाना और बारीक पीसना और धूल के समान बनाना जैसा कि ख़ुरूज अध्याय 32 आयत 20 में लिखा है यह कार्य फ़ुर्सत चाहता था। इस बुरे कार्य ने अवश्य रात का कुछ भाग लिया होगा क्योंकि हज़रत मूसा उस समय उतरे थे जब बछड़े की उपासना का मेला ख़ूब गर्म हो गया था और यह समय संभवत: दोपहर के बाद का होगा और कुछ समय नाराज़गी और क्रोध में गुज़रा। इसलिए यह निश्चित बात है कि सोने का जलाना और धूल के समान करना रात के कुछ भाग तक जो दूसरे दिन में शामिल होते ही समाप्त हुआ होगा। इसलिए ख़ुदा तआला ने लेखराम के लिए सामरी के बछड़े का नाम ग्रहण किया। इस नाम में यह रहस्य छुपा हुआ था कि ईद के दूसरे दिन में उसकी तबाही का

की स्तुति को उपासना तक पहुंचाया और सच्चाई का ख़ून किया और उसकी प्रशंसा में अतिशयोक्ति की वे भी ख़ुदा तआला की दृष्टि में उस क़ौम के समान हैं जिन्होंने सामरी के बछड़े की उपासना की थी अल्लाह तआला सूरह आराफ़ में फ़रमाता है- اِنَّ الَّذِیۡنَ اتَّخَذُوا الۡعِجۡلَ سَیَنَالُهُمۡ غَضَبٌ مِّنۡ رَّبِّهِمۡ وَ ذِلَّةٌ فِی الۡحَیٰوةِ الدُّنۡیَا ؕ وَ کَذٰلِکَ نَجۡزِی الۡمُفۡتَرِیۡنَ (सूरह अल्आराफ- 153)

शेष हाशिया- सामान होगा जैसा कि सामरी के बछड़े का हुआ और चूंकि बछड़े पर प्राय: छुरी फिरती है इस लिए इज्ल के शब्द में जो इल्हाम में ग्रहण किया गया है यह मौत का तरीका छुपा है और लेखराम की मृत्यु के बारे में जो यह भविष्यवाणी है कि वह ईद के दूसरे दिन कत्ल किया जाएगा इसमें खुदा तआला का इल्हाम है जो पुस्तक "करामातुस्सादिकीन" के पृष्ठ 54 में लिखा हुआ है अर्थात् ستعرف یوم العید والعید اقرب इसके पहले का शेर यह है

الا انّنی فی کل حرب غالبٌ
فکدنی بمازوّرت فالحق یغلب

अर्थात मैं प्रत्येक युद्ध में विजयी हूं तू झूठ बोल कर जिस प्रकार चाहे छल कर। अत: सच प्रकट हो जाएगा और फिर दूसरे शे'र में इस शेर की व्याख्या की और वह यह है-

و بشّرنی ربی و قال مبشّرا
ستعرف یوم العید والعید اقرب

अर्थात मेरे रब्ब ने मुझे ख़ुशख़बरी दी और ख़ुशख़बरी देकर कहा कि तू शीघ्र ही ईद के दिन को अर्थात खुशी के दिन को पहचान लेगा और उस दिन से सामान्य ईद बहुत क़रीब होगी अर्थात सच के विजय होने का वह दिन होगा इसलिए मोमिनों की वह ईद होगी और सामान्य ईद उससे मिली हुई होगी और इसी शे'र की व्याख्या टाइटल पेज के अंतिम पृष्ठ इसी पुस्तक करामातुस्सादिक़ीन में लिखी हुई है और यही शब्द بشرنی ربی जो इस शेर के सर पर है वहां भी मौजूद है और वह यह है-

अर्थात् जिन्होंने बछड़े की उपासना की उन पर प्रकोप का अज़ाब आएगा और दुनिया के जीवन में उनको अपमान पहुंचेगा और इसी प्रकार हम दूसरे झूठ गढ़ने वालों को दण्ड देंगे और यह एक सूक्ष्म संकेत उन बछड़े के उपासकों की ओर से है जो एक दूसरे **बछड़े** लेखराम की उपासना करने में अत्याचार और खून बहाने के इरादों तक पहुंच गए। ख़ुदा तआला के ज्ञान से कोई चीज़

शेष हाशिया-

و بشرنی ربی بموته فی ستّ سنة ان فی ذالك لاٰية للطالبين

अर्थात ख़ुदा तआला ने मुझे खुशख़बरी दी कि लेखराम छ: वर्ष की अवधि में मर जाएगा और इसी ख़ुशख़बरी की ओर "अंजाम आथम" के क़सीदा में वह शेर जो सितम्बर 1896 ई में शेख़ मुहम्मद हुसैन बटालवी को संबोधित करके लिखे गए हैं संकेत कर रहे हैं जैसा कि **تعرف** का शब्द ستعرف يوم العيد में मौजूद है इस कसीद: में भी मुहम्मद हुसैन को संबोधित करके **ستعرف** (सतारिफु) मौजूद है जैसा कि वह कसीद: जिसमें इल्हाम है अर्थात-

ستعرف يوم العيد و العيد اقرب

मुहम्मद हुसैन के लिए और उस को संबोधित करके लिखा गया था, ऐसा ही इसका कसीद: में भी मुहम्मद हुसैन बटालवी संबोधित है और यह

تب ايها الغالی و تأتی سَاعة
تمشی تعض يمينك الشلّاء

हे अतिशयोक्ति करने वाले तौब: कर क्योंकि वह समय आता है कि तू अपने खुश्क हाथ को काटेगा।

تأتيك اياتی فتعرف وجهها
فاصبر ولا تترك طريق حياء

मेरे निशान तुच्छ तक पहुंचेंगे तो तू उन्हें पहचान लेगा इसलिए सब्र कर और शर्म का मार्ग मत छोड़।

انی لشرّ الناس ان لم ياتنی
نصر من الرحمٰن للاعلاء

बाहर नहीं। वह ख़ूब जानता था कि हिंदू भी लेखराम की उपासना करके उसे बछड़ा बनाएंगे। इसलिए उसने "कज़ालिका" के शब्द से लेखराम के किस्से की ओर संकेत कर दिया है। तौरात ख़ुरूज अध्याय-32 आयत 35 से सिद्ध होता है ख़ुदा तआला ने बनी इस्राईल पर बछड़े की उपासना के कारण मृत्यु भेजी थी एक मरी(संक्रामक रोग) उन में पड़ गई थी जिस से वे मर गए थे और इस अज़ाब की सूचना के समय अल्लाह तआला ने यह भी फ़रमाया था कि जो लोग ईमान लाएंगे मैं उन को मुक्ति दूंगा जैसा कि फ़रमाता है-

وَ الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِهَا وَ اٰمَنُوْٓا ۫ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (सूरह अलआराफ - 154)

अर्थात् जिन्होंने बछड़े की उपासना की धुन में बुरे काम किए इसके बाद तो फिर इस के बाद तौब: की और ईमान लाए तो ख़ुदा तआला ईमान के बाद उनके गुनाह क्षमा कर देगा और उन पर दया करेगा क्योंकि वह बहुत क्षमा करने

मैं संपूर्ण सृष्टि में से निकृष्टतम हूंगा यदि ख़ुदा की सहायता मुझ को ऊंचा करने के लिए न पहुंचे।

هل تطمع الدنيا مذلّت صادق
هيهات ذاك تخيل السفهاء

क्या दुनिया आशा रखती है कि सच्चा अपमानित हो जाएगा यह कहां संभव है अपितु यह तो भोले भाले लोगों का विचार है

من ذالذی یخزی عزیز جنابه
الارض لا تفنی شموس سماء

ख़ुदा के प्रिय को कौन अपमानित कर सकता है। क्या पृथ्वी को शक्ति है कि आकाश से सूर्य को फ़ना करे।

یا ربنا افتح بیننا بکرامة
یا من یری قلبی و لب لحائی

हे मेरे रब्ब एक करामत दिखाकर हम में फैसला कर। हे वह ख़ुदा मेरे दिल और मेरे अस्तित्व के भेद को जानता है। इसी से

वाला और बहुत दयालु है।

और लेखराम के मुकदमों में पवित्र आयत का यह संकेत है जिन्होंने अकारण इल्हाम को झुठलाया और क़त्ल के षड्यंत्र किए और सरकार को क़त्ल के लिए भड़काया तत्पश्चात् तौबा की और ईमान लाए तो ख़ुदा उन पर दया करेगा। इसी स्थान के बारे में इस ख़ाकसार को इल्हाम हुआ है।

يا مسيح الخلق عدوانا

अर्थात् हे सृष्टि के लिए मसीह हमारे असाध्य रोगों के लिए ध्यान कर। और बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 519 में इसी की ओर संकेत है जैसा कि ख़ुदा तआला फ़रमाता है-

انت مبارك فى الدنيا و الاٰخِرَةِ امراض الناس و بركاته ان ربّك فعّال لما يريد

और तुझे दुनिया और आख़िरत में बरकत दी गई है ख़ुदा की बरकतों के साथ लोगों के रोगों की खबर ले तेरा रब्ब जो चाहता है करता है। देखो यह किस युग की खबरें हैं न मालूम किस समय पूरी होंगी। एक वह समय है कि दुआ से मरते हैं और दूसरा वह समय आता है कि दुआ से जीवित होंगे।

उन्नीसवीं भविष्यवाणी-यह भविष्यवाणी जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 240 में है यह है

ربّ ارنى كيف تحى الموتٰى ربّ اغفر و ارحم من السّمآء۔ ربّ لا تذرنى فردا و انت خير الوارثين۔ ربّ اصلح امّة محمّد۔ ربّنا افتح بيننا و بين قومنا بالحق و انت خير الفاتحين۔ يريدون ان يطفئوا نور الله بافواههم و الله متم نوره ولوكره الكافرون۔ اذا جاء نصر الله و الفتح وانتهٰى امر الزمان الينا اليس هٰذا بالحق۔

अर्थात् हे मेरे रब्ब! मुझे दिखा कि तू मुर्दों को कैसे ज़िंदा करता है। हे मेरे रब्ब! क्षमा कर और आकाश से दया कर। हे मेरे रब्ब! मुझे अकेला मत छोड़ और तू वारिसों में सबसे अच्छा वारिस है। हे मेरे रब्ब! उम्मते मुहम्मदिया का सुधार कर। हे मेरे रब्ब! हम में और हमारी क़ौम में सच्चा फैसला कर दे और तू सब फैसला करने वालों से उत्तम है। ये लोग इरादा करेंगे कि ख़ुदा के प्रकाश को

अपने मुंह की फूंकों से बुझा दें। और ख़ुदा अपने प्रकाश को पूरा करेगा। यद्यिप काफ़िर घृणा ही करें। जब ख़ुदा की सहायता आएगी और उसकी विजय उतरेगी और हृदयों का सिलसिला हमारी ओर रुजू करेगा तथा हमारी ओर आ ठहरेगा तब कहा जाएगा कि क्या यह सच नहीं था। इस सम्पूर्ण इल्हाम में यह भविष्यवाणी है कि आवश्यक है कि क़ौम विरोध करे और इस सिलसिले को मिटाने के लिए पूर्ण प्रयास करे और कदापि न चाहे कि यह सिलसिला स्थापित रह सके। किन्तु ख़ुदा इस सिलसिले को उन्नति देगा यहां तक कि युग इसी ओर लौट आएगा इसके बाद कि लोगों ने अकेला छोड़ दिया होगा फिर इस ओर रुजू करेंगे। अब देखो कि यह भविष्यवाणी कितनी सफाई से पूरी हुई। बराहीन अहमदिया के समय में उलेमा का कुछ शोर- कोलाहल न था अपितु जो काफिर ठहराने के फ़िल्ने का प्रवर्तक है उसने पूर्ण स्तुति और विशेषता से बराहीन अहमदिया का रीव्यू लिखा था फिर एक लंबे समय के पश्चात् काफ़िर ठहराने का तूफान उठा और एक लम्बे समय तक अपना ज़ोर दिखाता रहा और आप फिर ख़ुदा के इल्हाम के अनुसार वह बाढ़ अब कुछ कम होती जाती है तथा अब वह समय आता है कि प्रकाश की स्पष्ट विजय और अंधकार की खुली खुली पराजय हो।

बीसवीं भविष्यवाणी -यह भविष्यवाणी बराहीन अहमदिया में आथम के बारे में है जो पृष्ठ 241 में है और हम उसे विस्तार पूर्वक लिख चुके हैं और बहुत समय हुआ कि आथम साहिब दुनिया से कूच कर के अपने ठिकाने पर पहुंच गए हैं। हमारे विरोधियों को अब इस में तो संदेह नहीं कि आथम मर गया है जैसा के लेखराम मर गया है और जैसा कि अहमद बेग मर गया है परंतु अपने अंधेपन से कहते हैं कि आथम मीआद के अंदर नहीं मरा। **हे मूर्ख क़ौम!** जो व्यक्ति ख़ुदा के वादे के अनुसार मर चुका अब उसकी मीयाद ग़ैर मीआद की बहस करने की क्या आवश्यकता है। भला दिखाओ कि अब वह कहां हैं और किस शहर में बैठा है। तुम सुन चुके हो कि उस पर तो मीआद के अन्दर ही हाविय: की आंच आरंभ हो गई थी। शर्त पर उसने अमल किया इसीलिए कई दिन अधमरे की तरह व्यतीत किया। अंतत: उस अग्नि ने उसे न छोड़ा और

भस्म कर दिया।

यह ख़ुदा तआला के ग़ैब (परोक्ष की) क़ुदरतों का एक भारी नमूना है कि आथम के किस्से के सत्रह वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में ख़बर दर्ज कर दी गई। पहले इस बहस की ओर संकेत कर दिया जो तौहीद (ऐकेश्वरवाद) और तस्लीस (ईसाइयों के तीन को ख़ुदा मानने की आस्था) के बारे मैं अमृतसर में हुई थी तथा इसके संबंध में फ़रमाया

قل ھو اللّٰہ احد اللّٰہ الصمد لم یلد و لم یولد و لم یکن لہ کفوا احد

फिर ईसाइयों के उस छल की ख़बर दी गई जो सच को छुपाने के लिए मीआद ग़ुजरने के बाद उन्होंने किया फिर उस छल पूर्ण फित्ने की सूचना दी गई जो ईसाइयों की ओर से नितान्त पक्षपातपूर्ण जोश के साथ प्रकटन में आया और फिर अंत में सच्चाई को प्रकट करने की ख़ुशख़बरी दी गई और फिर उस इल्हाम के साथ जो पृष्ठ 241 में है अर्थात् انّا فتحنا لک فتحا مبینا महान विजय की ख़ुशख़बरी सुनाई गई। अब बताओ क्या यह इन्सान का काम है। आंख खोलो और देखो कि आथम की भविष्यवाणी कैसी महान ग़ैब की ख़बरें अपने साथ रखती हैं।

इक्कीसवां निशान - यह भविष्यवाणी भी बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 241 में दर्ज है-

فتح الولی فتح و قرّبناہ نجیّا اشجع الناس۔ ولو کان الایمان معلقا بالثریا لنالہ۔ انار اللّٰہ برھانہ

अनुवाद- विजय वही है जो इस वली की विजय है और हमने मित्रता के स्थान पर उसको सानिध्य प्रदान किया है समस्त लोगों से अधिक बहादुर है। यदि ईमान सुरैया पर चला गया होता तो यह उसको वहां से ले आता। ख़ुदा उसके तर्क को रोशन कर देगा।

बाईसवां निशान - यह भविष्यवाणी भी बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 241 में है और वह यह है-

انک باعیننا یرفع اللّٰہ ذکرک و یتم نعمتہ علیک فی الدنیا والاٰخرۃ

तू हमारी आंखों के सामने है। ख़ुदा तेरा ज़िक्र ऊंचा करेगा ख़ुदा अपनी

नेमतें दुनिया और आख़िरत में तुझ पर पूरी करेगा और यह जो फ़रमाया कि तेरा ज़िक्र ऊंचा कर देगा। इसके मायने यह है कि दुनिया और दीन (धर्म) के विशेष लोग प्रशंसा पूर्वक तेरा ज़िक्र करेंगे और ऊंचे पद वाले तेरे यशोगान में व्यस्त होंगे। अतः क्या यह आश्चर्य नहीं कि जो व्यक्ति काफ़िर और तिरस्कृत गिना जाता है और दज्जाल तथा शैतान कहा जाता है उसका अंजाम यह हो कि धर्म और दुनिया के ऊंचे पद वाले सच्चे दिल के लोग उसकी प्रशंसाएं करेंगे।

तेईसवीं भविष्यवाणी- यह भविष्यवाणी बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 242 में दर्ज है-

اِنِّیْ رَافِعُکَ اِلَیَّ۔ واَلقَیْتُ عَلَیْکَ مَحَبَّۃً مِنِّی و بشّر الذین اٰمنوا انّ لھم قدم صدق عند ربھم۔ واتل علیھم ما اوحی الیک من ربّک ولا تُصعّر لخلق اللہ ولا تسئم من الناس۔

अनुवादः मैं तुझे अपनी ओर उठाऊंगा और मैं अपनी ओर से तुझ पर प्रेम डालूंगा। अर्थात् इसके पश्चात् कि लोग शत्रुता और वैर करेंगे सहसा प्रेम की ओर लौटाए जांएगे जैसा कि यही प्रेम **महदी मौऊद** के निशानों में से है और फिर फ़रमाया कि जो लोग तुझ पर ईमान लाएंगे उन को ख़ुशख़बरी दे दे कि वे अपने रब्ब के निकट श्रद्धा के क़दम रखते हैं और जो मैं तुझ पर वह्यी उतारता हूं तू उन को सुना अल्लाह की सृष्टि से मुंह न फेर और उन की मुलाक़ात से न थक इस के बाद इल्हाम हुआ **ووسّع مکانک** अर्थात् अपने मकान को विशाल कर ले इस भविष्यवाणी में स्पष्ट फ़रमा दिया कि वह दिन आता है कि मुलाकात करने वालों की बहुत भीड़ हो जाएगी यहां तक कि तुझ से प्रत्येक का मिलना कठिन हो जाएगा तो तू उस समय दुःख व्यक्त न करना और लोगों की मुलाकात से थक न जाना। सुब्हान अल्लाह यह किस शान की भविष्यवाणी है और आज से सत्रह वर्ष पूर्व बताई गई है जब मेरी मज्लिस में शायद दो तीन आदमी आते होंगे और वे भी कभी-कभी। इस से ख़ुदा का कैसा ग़ैब का ज्ञान सिद्ध होता है

चौबीसवीं भविष्यवाणी - यह भविष्यवाणी बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 489 में है और वह यह है-

انت وجیہ فی حضرتی اخترتک لنفسی۔ انت بمنزلۃ توحیدی و تفریدی فحان ان تعان و تعرف بین الناس

अर्थात् तू मेरे सामने ख़ूबसूरत है। मैंने तुझे चुन लिया तू मुझ से ऐसा है जैसे कि मेरा एकेश्वरवाद और अकेला होना। अत: वह समय आ गया कि तेरी सहायता की जाएगी और तू लोगों में प्रसिद्ध किया जाएगा। यह उस समय की भविष्यवाणी है कि इस छोटे से गांव में भी बहुत से ऐसे थे जो मुझ से अपरिचित थे और अब जो इस भविष्यवाणी पर सत्रह वर्ष गुज़र गए तो भविष्यवाणी के अर्थ के अनुसार इस ख़ाकसार की ख़्याति उस सीमा तक पहुँच गयी है कि इस देश के ग़ैर क़ौमों के बच्चे और औरतें भी इस ख़ाकसार से अपरिचित नहीं होंगे जिस व्यक्ति को इन दोनों समयों की ख़बर★ होगी कि वह समय क्या था और अब क्या है तो सहसा उसकी रूह बोल उठेगी कि यह महान परोक्ष का ज्ञान मानवीय शक्तियों से ऐसा दूर है कि एक मक्खी की शक्ति से एक शक्तिशाली मोटे हाथी का काम।

पच्चीसवीं भविष्यवाणी - यह भविष्यवाणी बराहीन अहमदिया के पृष्ठ-490 में मौजूद है और वह यह है-

سبحان اللہ تبارک و تعالیٰ زاد مجدک ینقطع اباءک و یبدء منک

अनुवाद - पवित्र है वह ख़ुदा जो मुबारक और बुलन्द है। तेरी बुज़र्गी को उसने बढ़ाया। अब यों होगा कि तेरे बाप -दादा का नाम कट जाएगा और उनकी चर्चा स्थायी तौर पर कोई नहीं करेगा और ख़ुदा तेरे अस्तित्व को तेरे ख़ानदान (वंश) की बुनियाद ठहराएगा।

इस भविष्यवाणी में दो वादे हैं-

(1) प्रथम यह कि ख़ुदा योग्य और अच्छी संतान इस ख़ानदान में पैदा करेगा और दूसरे यह कि समस्त सम्मान और श्रेष्ठता का प्रारंभ इस ख़ाकसार

★ **हाशिया**- इस ख़ाकसार सिराजुल हक़ जमाली ने ख़ुदा के फज़्ल से दोनों समय देखे और ईमान में वृद्धि हुई। ख़ुदा से दुआ है कि आगे को पूरी ख़ूबी और उन्नति इस सच्चे और मासूम इमाम की दिखाए और इस सच्चे के साथ रख कर ईमान में वृद्धि करे। (जमाली)

को ठहरा दिया जाएगा। और वह भविष्यवाणी जो एक मुबारक लड़के के लिए की गई थी वह इल्हाम भी वास्तव में इसी इल्हाम का एक भाग है। उस समय मूर्खों ने शोर मचाया था कि भविष्यवाणी के करीब समय में लड़का पैदा नहीं हुआ अपितु लड़की पैदा हुई। यह समस्त शोर इसलिए था कि यह मूर्ख समझते थे कि भविष्यवाणी का बिना फ़ासला पूरा होना आवश्यक है और इल्हामों में ख़ुदा तआला का यह उद्देश्य नहीं होता अपितु यदि हज़ार लड़की पैदा होकर भी फिर उन विशेषताओं का लड़का पैदा हुआ तो भी कहा जाएगा कि भविष्यवाणी पूरी हुई। हां यदि ख़ुदा के इल्हाम में बिना फासला का शब्द मौजूद हो तो तब उस शब्द को ध्यान में रख कर भविष्यवाणी का प्रकटन में आना आवश्यक होता।

छब्बीसवीं भविष्यवाणी - यह भविष्यवाणी बराहीन अहमदिया पृष्ठ - 491 में यह है-

وما كان الله ليتركك حتى يميز الخبيث من الطيب والله غالب على امره ولكن اكثر الناس لا يعلمون۔

अनुवाद - ख़ुदा तुझे नहीं छोड़ेगा जब तक पवित्र और अपवित्र में अन्तर न कर ले। और ख़ुदा अपनी बात पर विजयी है परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।

सत्ताईसवीं भविष्यवाणी - यह भविष्यवाणी बराहीन अहमदिया के पृष्ठ - 492 में है और वह यह है-

اردت ان استخلف فخلقت اٰدم

अर्थात् मैंने ख़लीफ़ा बनाने का इरादा किया तो मैंने आदम को पैदा किया। और दूसरे स्थान में इसी की व्याख्या यह इल्हाम है।

وقالوا أتجعل فيها من يفسد فيها قال اِنی اَعلم ما لا تعلمون

अर्थात् लोगों ने कहा कि क्या तू ऐसे आदमी को ख़लीफ़ा बनाता है जो पृथ्वी पर फ़साद फैलाएगा। ख़ुदा ने कहा मैं उसमें वह चीज़ जानता हूँ जिसकी तुम्हें ख़बर नहीं। जैसा कि दूसरे इल्हाम में इसी बराहीन में फ़रमाया है -

أنت منی بمنزلة لا يعلمها الخلق

अर्थात् तू मुझ से उस स्थान पर है जिसकी दुनिया को ख़बर नहीं। अब

स्पष्ट है कि यह भविष्यवाणी तो सत्रह वर्ष से बराहीन अहमदिया में प्रकाशित हो चुकी और जिस फ़ित्न: की ओर यह भविष्यवाणी संकेत करती है वह (बहुत) वर्षों के बाद प्रकटन में आया। अत: मौलवियों ने इस ख़ाकसार को उपद्रवी ठहराया, कुफ्र के फ़त्वे लिखे गए नज़ीर हुसैन देहलवी ने (अलैहि मा यस्तहिक़्क़हू) काफ़िर ठहराने की बुनियाद डाली और मुहम्मद हुसैन बटालवी ने मक्का के काफ़िरों की तरह यह सेवा अपने दायित्त्व में लेकर उस पर समस्त प्रसिद्ध और अप्रसिद्ध लोगों से कुफ्र के फ़त्वे लिखवाए। और जैसा कि ख़ुदा के इल्हाम से प्रकट होता है बराहीन अहमदिया में पहले से ख़बर दी गई थी कि ऐसे फ़त्वे लिखे जाएंगे और आसार★-ए-नबविय्या में भी ऐसा ही आया है कि उस मसीह मौऊद पर कुफ्र का फ़त्वा लगाया जाएगा। तो वह सब लिखा हुआ पूरा हुआ।

अट्ठाईसवीं भविष्यवाणी - यह भविष्यवाणी बराहीन अहमदिया के पृष्ठ- 496 में है और वह यह है -

يُحی الدّین و یقیم الشریعة یاآدم اسکن انت و زوجك الجنة۔ یا مریم اسکن انت وزوجك الجنة یا احمد اسکن انت و زوجك الجنة۔ نفخت فیك من لدنی روح الصدق

(अनुवाद) - धर्म को जीवित करेगा और शरीअत को स्थापित करेगा। हे आदम तू और तेरी पत्नी (जोड़ा) स्वर्ग में दाख़िल हो जाओ। हे मरयम तू और तेरा पति स्वर्ग में दाख़िल हो जाओ। हे अहमद तू और तेरा जोड़ा स्वर्ग में दाख़िल हो जाओ। मैंने अपने पास से तुझ में सच्चाई की रुह फूंकी। यह एक महान भविष्यवाणी है और तीन नामों से तीन भविष्य की घटनाओं की ओर संकेत है जिन को शीघ्र ही लोग मालूम करेंगे। और इस इल्हाम में जो शब्द لـدُنْ का ज़िक्र है उसकी व्याख्या कशफी तौर पर यों मालूम हुई कि एक फ़रिश्ता स्वप्न में कहता है कि यह मर्तबा 'लदुन' जहां तुझे पहुंचाया गया यह वह स्थान है जहां हमेशा बारिशें होती रहती हैं और एक पल के लिए भी वर्षाएं नहीं रुकतीं।

उन्तीसवीं भविष्यवाणी - यह वह भविष्यवाणी है जो बराहीन अहमदिया

★**आसार** - नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसें सहाबा के कथन (अनुवादक)

के पृष्ठ 506 में दर्ज है। और वह यह है -

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَ الْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ

और फिर फ़रमाया कि **यदि ख़ुदा ऐसा न करता तो दुनिया में अंधेर पड़ जाता।** यह ख़ुदा के एक ऐसे निशान की ओर संकेत है जो दुनिया को तबाह होने से बचा लेगा तथा इल्हाम के ये अर्थ हैं कि संभव न था कि अहले किताब और हिन्दू अपने पक्षपात और शत्रुता से रुक जाते जब तक मैं उनको एक खुला- खुला निशान न देता। और यदि ऐसा मैं न करता तो दुनिया में अंधेर पड़ जाता और सच संदिग्ध हो जाता।

तीसवीं भविष्यवाणी -यह वह भविष्यवाणी है जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ - 515 में दर्ज है और वह यह है-

اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا ليغفر لك الله ما تقدّم من ذنبك وما تأخّر

अर्थात् हम तुझको एक खुली खुली विजय देंगे ताकि हम तेरे अगले-पिछले गुनाह क्षमा कर दें। यह रूपक अपनी सहमति व्यक्त करने के लिए वर्णन किया है। उदाहरणतया एक मालिक अपने किसी दास के साथ ऐसे दार्शनिकता पूर्ण तरीके से समय व्यतीत करता है कि मूर्ख समझते हैं कि वह उस पर नाराज़ है। तब उस मालिक का स्वाभिमान जोश मारता है और उस दास की बुलन्दी के लिए कोई ऐसा कार्य करता है कि जैसे उसने उसके अगले-पिछले समस्त गुनाह माफ़ कर दिए हैं। अर्थात् ऐसी सहमति व्यक्त करता है कि लोगों को विश्वास हो जाता है कि ऐसा मेहरबान उस पर कभी नाराज़ नहीं होगा। यह महान भविष्यवाणी है। फिर उसके बाद उसी पृष्ठ में एक तस्वीर दिखाई गई है और वह तस्वीर इस ख़ाकसार की है। हरी पोशाक है और तस्वीर अत्यन्त रोबनाक है जैसे हथियार बन्द विजयी सेनापति और तस्वीर के दाएं-बाएं यह लिखा है हुज्जतुल्लाहिल्क़ादिर सुल्तान अहमद मुख़्तार और तिथि यह लिखी है सोमवार का दिन उन्नीसवीं ज़िलहज्ज 1300 हिज्री तदनुसार 22 अक्तूबर 1883 ई० और 6 कार्तिक संवत 1940 वि० यह समस्त इबारत बराहीन के पृष्ठ 515 और 516 में

मौजूद है। यह कश्फ़ बता रहा है कि हथियार के द्वारा एक निशान प्रकट होगा। अत: लेखराम का निशान इसी प्रकार घटित हुआ। फिर इसके पश्चात् पृष्ठ - 516 में यह इल्हामी इबारत है-

اليس اللہ بکاف عبدہ۔ فَبَرَّأَہُ اللہ مِمّا قالوا و کَانَ عندَاللہ وجیھا۔ فلمّا تجلّٰی ربّہ للجَبَل جَعَلہ دکّا و اللہ موھن کیدالکافرین۔ ولنجعلہ اٰیۃ للناس ورحمۃ منّا و کان امرًا مقضیًّا

अर्थात् क्या ख़ुदा अपने बन्दे के लिए पर्याप्त नहीं है। अत: ख़ुदा ने उसको उस आरोप से बरी किया जो काफ़िरों ने उस पर लगाया। और वह ख़ुदा के नज़दीक प्रतिष्ठित है और ख़ुदा ने कठिनाइयों के पर्वत को टुकड़े - टुकड़े किया और काफ़िरों के छल को सुस्त किया और हम उसे अपनी दया से एक निशान ठहराएंगे और प्रारंभ से ऐसा ही प्रारब्ध था। इस इल्हाम में ख़ुदा तआला प्रकट करता है कि हिन्दू लेखराम के क़त्ल के बाद क़त्ल के षड्यंत्र का एक आरोप लगाएंगे और छल करेंगे ताकि वह आरोप पुख़्ता हो जाए। हम इस मुल्हम की बरीयत प्रकट कर देंगे और उनके छल को सुस्त कर देंगे और कठिनाइयों के पर्वत आसान हो जाएंगे।

अब कुछ अवश्य नहीं कि हम किसी को इस भविष्यवाणी की ओर ध्यान दिलाएं। इन्साफ़ करने वाले स्वयं सोचें तथा इतने खुले-खुले परोक्ष की बातों से इन्कार करके अपनी आख़िरत को ख़राब न करें।

यह भी स्मरण रखना चाहिए कि इस भविष्यवाणी में जो लेखराम को बछड़े से समानता दी गई इसमें कई समानताओं को ध्यान में रखा गया है।

(1) प्रथम यह कि जैसा कि सामिरी का बछड़ा बेजान (निर्जीव) था ऐसा ही यह भी निर्जीव था और उसमें सच्चाई की रूह नहीं थी।

(2) दूसरे यह कि जैसा कि उस निर्जीव बछड़े के अन्दर से निरर्थक आवाज़ आती थी ऐसा ही इसके अन्दर से भी निरर्थक आवाज़ आती थी।

(3) तीसरे यह कि जैसा कि वह निर्जीव बछड़ा ईद के दिन नष्ट किया गया था ऐसा ही ईद के दिनों में ही यह भी नष्ट किया गया।

(4) चौथे यह कि जैसा कि वह बछड़ा क़ौम के सोने के आभूषण से बनाया गया था ऐसा ही यह बछड़ा भी क़ौम के आर्थिक संकलन के कारण तैयार हुआ।

(5) पांचवें यह कि जैसा कि वह बछड़ा अन्ततः क़ौम के मुफ़्तरी लोगों के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के अज़ाब और दुखों का कारण हुआ ऐसा ही इस बछड़े के मुफ़्तरी पुजारियों का अंजाम होगा।

इकत्तीसवीं भविष्यवाणी - यह वह भविष्यवाणी है जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 522 में दर्ज है -

بخرام کہ وقت تو نزدیک رسید و پائے محمدیاں
برمنار بلند تر محکم افتاد

पाक मुहम्मद मुस्तफ़ा नबियों का सरदार। ख़ुदा तेरे सब काम दुरुस्त कर और तेरी सारी मुरादें तुझे देगा। फ़ौजों का रब्ब इस ओर ध्यान देगा। इस निशान का उद्देश्य यह है कि पवित्र क़ुर्आन ख़ुदा की किताब और मेरे मुंह की बातें हैं ख़ुदा तआला के उपकारों का दरवाज़ा खुला है और उसकी पवित्र रहमतें इस ओर ध्यान दे रही हैं।

बत्तीसवीं भविष्यवाणी - यह वह भविष्यवाणी है जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ-556 और 557 पर दर्ज है। और वह यह है-

يٰعِيْسٰى اِنِّىْ متوفيك و رافعك اِلَيَّ وجاعل الذين اتبعوك فوق الذين كفروا اِلٰى يوم القيٰمة۔

मैं अपनी चमकार दिखलाऊंगा। अपनी क़ुदरत नुमाई से तुझ को उठाऊंगा। दुनिया में एक नज़ीर (डराने वाला) आया, पर दुनिया ने उसको क़बूल न किया लेकिन ख़ुदा उसे क़बूल (स्वीकार) करेगा और बड़े ज़ोरआवर (शक्तिशाली) हमलों (आक्रमणों) से उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा।

الفتنة هٰهُنا فاصبر كما صبر اولو االعزم۔

यह भविष्यवाणी लेखराम के बारे में थी जो पूरी हो गई और उसका विवरण गुज़र चुका है और इसके शेष अन्य निशान भी आने वाले हैं और इसी के बारे में बराहीन अहमदिया के पृष्ठ - 560 और 510 में यह इल्हाम है -

و يخوفونك من دونه۔ ائمة الكفر لا تخف انّك انت الاعلیٰ ينصرك الله فی مواطن۔ ان يومی لفصل عظيم

अर्थात् तुझे काफ़िर डराएंगे परन्तु अन्त में विजय तुझे ही होगी। ख़ुदा कई मैदानों में तेरी विजय करेगा। मेरा दिन बड़े फ़ैसले का दिन होगा।

يظل ربك عليك ويعينك۔ و يرحمك يعصمك الله من عنده و ان لم يعصمك الناس- و ان لم يعصمك الناس يعصمك الله من عنده۔ انی منجّيك من الغم انت منی بمنزلة لا يعلمها الخلق۔ كتب الله لاغلبن انا و رسلی لا مبدّل لكلمته۔

(अनुवाद) ख़ुदा अपनी रहमत की छाया तुझ पर करेगा और तेरी फ़रियाद सुनेगा और तुझ पर रहम (दया) करेगा वह तुझे स्वयं बचाएगा। यद्यपि मनुष्यों में से कोई भी न बचाए, फिर मैं कहता हूँ कि यद्यपि मनुष्यों में से कोई भी न बचाए परन्तु वह तुझे स्वयं बचाएगा। मैं तुझे ग़म से बचाऊंगा। तू मुझ से वह सानिध्य रखता है जिसका लोगों को ज्ञान नहीं। ख़ुदा ने यह लिख छोड़ा है कि मैं और मेरे रसूल विजयी होंगे। अतः ख़ुदा के कलिमे कभी नहीं बदलेंगे।

तेतीसवीं भविष्यवाणी - यह भविष्यवाणी बराहीन अहमदिया के पृष्ठ- 558 और 559 में दर्ज है। और वह यह है -

سَلَامٌ عَلَيْك يَا اِبْرَاهِيْمُ اِنَّكَ الْيَومَ لَدَيْنَا مَكِيْنٌ اَمِيْنٌ۔ حِبُّ اللهِ خَلِيْلُ اللهِ۔ اَسَدُ اللهِ اَلَمْ نَجْعَلْ لَّكَ سَهُوْلَةً فِی كُلِّ امرٍ بَيْتُ الْفِكْرِ۔ وَ بَيْتُ الذِّكْرِ۔ وَ مَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا۔ مُبَارِكٌ ط وَمُبَارَكٌ وَ كُلّ اَمْرٍ مُبَارَك يُجْعَلُ فِيه۔ رُفِعتَ وَجُعِلْتَ مُبَارَكًا۔ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا وَ لَمْ يَلْبِسُوْا اِيْمَانهم بظلم اُولٓئك لَهُمُ الامن و هم مّهتدون۔

(अनुवाद) तुझ पर सलाम हे इब्राहीम! आज तू हमारे नज़दीक मर्तब: वाला और अमीन है ख़ुदा का दोस्त, ख़ुदा का ख़लील, ख़ुदा का शेर। हमने प्रत्येक बात में तेरे लिए आसानी कर दी, बैतुल फ़िक्र और बैतुल ज़िक्र और जो इसमें दाख़िल हुआ वह अमन में आ गया। वह बैतुज़्ज़िक्र बरकत देने वाला और बरकत दिया गया है और प्रत्येक बरकत का काम उसमें किया जाएगा और जो

लोग ईमान लाए और किसी ज़ुल्म से ईमान को अपवित्र नहीं किया उन्हीं को अमन दिया जाएगा और वही हिदायत प्राप्त होंगे।

बैतुज़्ज़िक्र से अभिप्राय वह मस्जिद है जो घर के साथ छत पर बनाई गई है। और यह इल्हाम कि मुबारिकुन व मुबारकुन व कुल्लो अमरिन मुबारकुन युजअलु फ़ीहे। यह उस मस्जिद की नींव का माद्दः तारीख़ हैं और ये उसकी भावी बरकतों के लिए एक भविष्यवाणी है जिनके प्रकटन के लिए अब नींव डाली गई है।

चौंतीसवी भविष्यवाणी - यह भविष्यवाणी पुस्तक बराहीन अहमदिया के पृष्ठ - 521 में दर्ज है और वह यह है -

"वह तुझे बहुत बरकत देगा यहां तक कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूढेंगे।" और इसी के संबंध में एक कश्फ़ है और वह यह है कि कश्फ़ की अवस्था में मैंने देखा कि ज़मीन ने मुझ से बातचीत की और कहा يَا وَلِيَّ اللّٰهِ كُنْتُ لَا اَعْرِفُكَ अर्थात् हे ख़ुदा के वली मैं तुझे पहचानती नहीं थी।

पैंतीसवीं भविष्यवाणी - शेख़ मुहम्मद हुसैन बटालवी साहिब इशाअतुस्सुन्नः पत्रिका जो काफ़िर ठहराने का प्रवर्तक है और जिसकी गर्दन पर नज़ीर हुसैन देहलवी के बाद समस्त काफ़िर ठहराने वालों के गुनाह का भार है और जिसके लक्षण अत्यन्त रद्दी और निराशा की अवस्था के हैं उसके बारे में मुझे तीन बार मालूम हुआ है कि वह अपनी इस हालत पर गुमराही से रुजू करेगा और फिर ख़ुदा उसकी आंखे खोलेगा। और अल्लाह हर चीज़ पर समर्थ है।

एक बार मैंने स्वप्न में देखा कि मानो मैं मुहम्मद हुसैन के मकान पर गया हूँ और मेरे साथ एक जमाअत है और हमने वहीं नमाज़ पढ़ी और मैंने इमामत कराई और मुझे ख़याल आया कि मुझ से नमाज़ में यह ग़लती हुई है कि मैंने ज़ुहर या अस्र की नमाज़ में सूरह फ़ातिहा को ऊंची आवाज़ से पढ़ना आरंभ कर दिया था, फिर मुझे मालूम हुआ कि मैंने सूरह फ़ातिहा ऊंची आवाज़ से नहीं पढ़ी अपितु केवल तक्बीर ऊंची आवाज़ से कही। फिर हम जब नमाज़ से निवृत हुए तो मैं क्या देखता हूं कि मुहम्मद हुसैन हमारे मुक़ाबले पर बैठा है और उस

समय मुझे उसका रंग काला मालूम होता है और बिलकुल नंगा है तो मुझे शर्म आई कि मैं उसकी ओर नज़र करूं। अत: उसी हाल में वह मेरे पास आ गया। मैंने उसे कहा कि क्या समय नहीं आया कि तू सुलह करे और क्या तू चाहता है कि तुझ से सुलह की जाए। उसने कहा कि हां। अत: वह बहुत निकट आया और गले मिला और उस समय वह एक छोटे बच्चे के समान था। फिर मैंने कहा कि यदि तू चाहे तो उन बातों को क्षमा कर जो मैंने तेरे बारे में कहीं जिन से तुझे दुख पहुंचा और ख़ूब याद रख कि मैंने कुछ नहीं कहा परन्तु सही नीयत से। और हम डरते हैं ख़ुदा के उस भारी दिन से जबकि हम उसके सामने खड़े होंगे। उसने कहा कि मैंने क्षमा किया। तब मैंने कहा कि गवाह रह कि मैंने वे समस्त बातें तुझे क्षमा कर दीं जो तेरी जीभ पर जारी हुईं और तेरे काफ़िर कहने और झुठलाने को मैंने माफ़ किया। इसके बाद ही वह अपने असली क़द पर दिखाई दिया और सफ़ेद कपड़े दिखाई दिए। फिर मैंने कहा जैसा कि मैंने स्वप्न में देखा था आज वह पूरा हो गया। फिर एक आवाज़ देने वाले ने आवाज़ दी कि एक व्यक्ति जिसका नाम सुल्तान बेग है। चन्द्रा की अवस्था में है। मैंने कहा कि अब शीघ्र ही मर जाएगा, क्योंकि मुझे स्वप्न में दिखाया गया है कि उसकी मौत के दिन सुलह होगी। फिर मैंने मुहम्मद हुसैन को यह कहा कि मैंने स्वप्न में यह देखा था कि सुलह के दिन की यह निशानी है कि उस दिन बहाउद्दीन मृत्यु पा जाएगा। मुहम्मद हुसैन ने इस बात को सुनकर बड़े सम्मान पूर्वक देखा और ऐसा आश्चर्य किया जैसा कि एक व्यक्ति एक सही घटना की श्रेष्ठता से आश्चर्य करता है और कहा यह बिल्कुल सच है और वास्तव में बहाउद्दीन मृत्यु पा गया। फिर मैंने उसकी दावत की और उसने एक हल्के बहाने के साथ दावत को स्वीकार कर लिया। और फिर मैंने उसे कहा कि मैंने स्वप्न में यह भी देखा था कि सुलह सीधे तौर पर होगी। तो जैसा ही देखा था वैसा ही प्रकटन में आ गया और अब यह बुध का दिन और तिथि 12 दिसम्बर 1894 ई० थी।

छत्तीसवीं भविष्यवाणी -छत्तीसवीं भविष्यवाणी यह है जैसा कि मैं "इज़ाला औहाम" में लिख चुका हूं ख़ुदा तआला ने मुझे सूचना दी कि तेरी आयु अस्सी

वर्ष या इस से कुछ कम या कुछ अधिक होगी और यह इल्हाम लगभग बीस या बाईस वर्ष के समय का है जिसकी सूचना बहुत से लोगों को दी गई और 'इज़ाला औहाम' पुस्तक में भी दर्ज होकर प्रकाशित हो गया ।

सेंतीसवीं भविष्यवाणी - यह है कि ख़ुदा तआला ने मुझे सूचना दी कि इन विज्ञापनों के आयोजन पर जो आर्य क़ौम, पादरियों और सिक्खों के मुक़ाबले पर जारी हुए हैं जो व्यक्ति मुक़ाबले पर आएगा ख़ुदा उस मैदान में मेरी सहायता करेगा। इसी प्रकार और भी भविष्यवाणियाँ हैं जो विभिन्न पुस्तकों में लिखी गई हैं और ऐसे विलक्षण निशान **पांच हज़ार के लगभग पहुंच चुके हैं** जिनके देखने वाले अधिकतर गवाह अब तक जीवित मौजूद हैं और प्रत्येक व्यक्ति जो एक समय तक संगत में रहा है उसने स्वयं अपने आखों से देख लिया है और देख रहे हैं। अत: उन अभागे लोगों की हालत पर अफ़सोस है जो कहते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कोई चमत्कार और भविष्यवाणी नहीं हुई। ये मूर्ख नहीं समझते कि जिस हालत में उनकी उम्मत से ये निशान प्रकट नहीं होते तो सच्चाई का कितना (अधिक) ख़ून करना है कि ऐसे बरकतों के उद्‌गम से इन्कार किया जाए अपितु सच तो यह है कि यदि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुबारक अस्तित्व न होता तो किसी नबी की नुबुव्वत सिद्ध न हो सकती।

स्पष्ट है कि केवल क़िस्सों और कहानियों को प्रस्तुत करना इस का नाम तो सबूत नहीं है। ये क़िस्से तो प्रत्येक क़ौम में बड़ी प्रचुरता से पाए जाते हैं। लानत है ऐसे दिल पर जो केवल क़िस्सों पर अपने ईमान की बुनियाद ठहराए। विशेष तौर पर वे लोग जिन्होंने एक इन्सान के असहाय बच्चे को ख़ुदा बना लिया। देखा न भाला क़ुर्बान गई ख़ाला।

हम जब इन्साफ़ की दृष्टि से देखते हैं तो नुबुव्वत के सम्पूर्ण सिलसिले में से उच्चकोटि का बहादुर नबी और ख़ुदा का उच्चकोटि का प्रिय नबी केवल एक मर्द को जानते हैं अर्थात् वही नबियों का सरदार और रसूलों का गर्व, समस्त मुर्सलों का मुकुट जिसका नाम मुहम्मद मुस्तफ़ा व अहमद मुज्तबा सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम है जिसके अनुकरण में दस दिन चलने से वह प्रकाश मिलता है जो इस से पूर्व हज़ार वर्ष तक नहीं मिल सकता था। वे कैसी किताबें हैं जो हमें भी यदि हम उनके अधीन हों धिक्कृत, शर्मिन्दा और अनुदार करना चाहती हैं क्या उनको जीवित नुबुव्वत कहना चाहिए जिन की छाया से हम स्वयं मुर्दा हो जाते हैं। निश्चित समझो कि ये सब मुर्दें हैं। क्या मुर्दे को मुर्दा प्रकाश प्रदान कर सकता है ? यसू की उपासना करना केवल एक मूर्ति की उपासना करना है। मुझे क़सम है उस अस्तित्व की जिसके हाथ में मेरी जान है कि यदि वह मेरे युग में होता तो उसे विनय पूर्वक मेरी गवाही देनी पड़ती। कोई इसको स्वीकार करे या न करे परन्तु यही सच है और सच में बरकत है कि अन्तत: उसका प्रकाश दुनिया में पड़ता है। तब दुनिया की समस्त दीवारें चमक उठती हैं। परन्तु वे जो अंधकार में पड़े हों तो अन्तिम वसीयत यही है कि प्रत्येक प्रकाश हमने रसूल उम्मी नबी के अनुकरण से पाया है और जो व्यक्ति अनुकरण करेगा वह भी पाएगा और उसे ऐसी स्वीकारिता मिलेगी कि उसके आगे कोई बात अनहोनी नहीं रहेगी। ज़िन्दा ख़ुदा जो लोगों से गुप्त है उसका ख़ुदा होगा और झूठे ख़ुदा सब उसके पैरों के नीचे कुचले और रौंदे जाएंगे और वह प्रत्येक स्थान पर मुबारक होगा और ख़ुदाई शक्तियां उसके साथ होंगी। **वस्सलामो अला मनित्तबअल हुदा** (अर्थात सलामती हो उस पर जो हिदायत का अनुसरण करे)

अब हम इस पुस्तक को इस वसीयत पर समाप्त करते हैं कि हे सच्चाई के अभिलाषियो! सच्चाई को ढूंढो कि अब आकाश के दरवाज़े खुले हैं और हे हमारी क़ौम के मूर्ख★ मौलवियो! ये वही ख़ुदा के दिन हैं जिन का वादा था। अत: आंखें खोलो और देखो कि पृथ्वी पर क्या हो रहा है और कैसे सच्चाई के बादशाह पवित्र रसूल को पैरों के नीचे कुचला जाता है। क्या इस पवित्र नबी के अपमान में कुछ कसर रह गई? क्या आअवश्यक न था कि पृथ्वी के इस तूफ़ान के समय आकाश पर कुछ प्रकट होता। तो इसलिए ख़ुदा ने एक बन्दे को अपने

★ **हाशिया** - इस युग के मौलवियों के बारे में वही कहता हूं जो "आसार" (हदीस) में पहले से कहा गया है। इसी से।

बन्दों में से चुन लिया ताकि अपनी क़ुदरत दिखाए और अपने अस्तित्व का सबूत दे और वे जो सच्चाई से उपहास करते और झूठ से प्रेम रखते हैं उनको जतलाए कि मैं हूं तथा सच्चाई का सहायक हूं। यदि वह ऐसे फ़ित्ने के समय में अपना चेहरा न दिखाता तो दुनिया पथभ्रष्टता में डूब जाती और प्रत्येक नफ़्स नास्तिक और अधर्मी होकर मरता। यह ख़ुदा की कृपा है कि इन्सानी नौका को यथा समय उसने थाम लिया। यह **चौदहवीं सदी** क्या थी **चौदहवीं रात का चन्द्रमा** था जिसमें ख़ुदा ने अपने प्रकाश को चादर की तरह पृथ्वी पर फैला दिया। अब क्या तुम ख़ुदा से लड़ोगे? क्या फ़ौलादी क़िले से अपना सर टकराओगे ? कुछ शर्म करो और सच्चाई के आगे मत खड़े हो। ख़ुदा ने देखा है कि पृथ्वी बिदअत, शिर्क और दुष्कर्मों से जल गई है और गन्दगी को पसन्द किया जाता है और सच्चाई को अस्वीकार किया जाता है। तो उसने जैसा कि उसकी सदैव से आदत है दुनिया के सुधार के लिए ध्यान दिया, क्योंकि सच्चा परिवर्तन आकाश से होता है न कि पृथ्वी से और सच्चा ईमान ऊपर से मिलता है न कि नीचे से। इसलिए उस रहीम ख़ुदा ने चाहा कि ईमान को ताज़ा करे और उन लोगों के लिए जिन को विज्ञापनों द्वारा बुलाया गया है या भविष्य में बुलाया जाए ऐसा निशान दिखाए। और मुझे मेरे ख़ुदा ने सम्बोधित करके फ़रमाया है -

اَلاَرْضُ وَالسَّمَاءُ مَعَكَ كَمَا هُوَ مَعِی ★ ۔قُلْ لِّی الأَرْضُ وَالسَّمَآء۔
قُلْ لِّی سلامٌ فی مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِیْكٍ مُّقْتَدِرْ۔ اِنّ اللّٰه مَعَ الّذِیْنَ
اتَّقَوْا وَّالّذِیْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْن۔ یَاْتِی نَصْرُاللّٰه۔ اِنّا سَنُنْذِرُ العَالم كُلّهٗ۔
انا سَنَنْزِلُ۔ اَنَا اللّٰهُ لا اِلٰه اِلّا اَنَا

अर्थात् आकाश और पृथ्वी तेरे साथ है जैसा कि वह मेरे साथ है। कह आकाश और पृथ्वी मेरे लिए है कह मेरे लिए सलामती है,वह सलामती जो सामर्थ्यर्वान ख़ुदा के सामने सच्चाई के बैठने के स्थान में है। ख़ुदा उनके साथ है जो उससे डरते हैं और जिनका सिद्धान्त यह है कि अल्लाह की सृष्टि से भलाई

★ **नोटः-** हुव (वह) की ज़मीर इस तावील से है कि उससे अभिप्राय सृष्टि है।

करते रहें। ख़ुदा की सहायता आती है। हम समस्त दुनिया को सतर्क करेंगे, हम पृथ्वी पर उतरेंगे। मैं ही पूर्ण और सच्चा ख़ुदा हूं मेरे अतिरिक्त और कोई नहीं।

इन इल्हामों में ख़ुदा की सहायता के ज़ोरदार वादे हैं परन्तु यह समस्त सहायता आसमानी निशानों के साथ होगी। वे लोग अत्याचारी, नादान और मूर्ख हैं जो ऐसा समझते हैं कि मसीह मौऊद और महदी माहूद तलवार लेकर आएगा। नुबुव्वत की भविष्यवाणियाँ पुकार-पुकार कर कहती हैं कि इस युग में तलवारों से नहीं अपितु आकाशीय निशानों से दिलों को विजय किया जाएगा और पहले भी तलवार उठाना ख़ुदा का उद्देश्य न था, अपितु जिन्होंने तलवारें उठाईं वे तलवारों से ही मारे गए। अब यह आकाशीय निशानों का युग है रक्त बहाने का युग नहीं। मूर्खों ने बुरी तावीलें करके ख़ुदा की पवित्र शरीअत को बुरे रूपों में दिखाया है। आकाशीय शक्तियां जितनी इस्लाम में हैं किसी धर्म में नहीं हुईं। **इस्लाम तलवार का मुहताज कदापि नहीं।**

लेखक - मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

23 ज़िलक़ाद: : 1314 हिज्री

नज़्म

मुन्शी गुलाबुद्दीन साहिब रोहतासी

अल्लाह अल्लाह सदी चौदहवीं का जाहो जलाल
रहमते हक़ से मिला है उसे क्या फ़ज़्लो कमाल
जिसमें मामूर मिनल्लाह हुआ एक बन्दए हक़
ताकि इस्लाम की रौनक़ को करे फिर वह बहाल
जिसके आने की ख़बर मुख़्बिरे सादिक़ ने थी दी
आस्मां पर से उतर आया वह साहिबे इक़्बाल
क़ादियान जाए क़ियाम उसका **ग़ुलाम अहमद** नाम
झाड़े इस्लाम ने फिर जिसके सबब से पर व बाल
दीन की तज्दीद लगी होने बसद शद्दो मद
देखो जिस शख़्स को करता है यही क़ीलो क़ाल
भूखे नूरानी ग़िज़ाओं से लगे होने सेर
प्यासे बरकात की बारिश से हुए माला माल
शिर्क व बिदअत की स्याही तो लगी होने दूर
नज़र आने लगा तौहीद का अब हुस्नो जमाल
राज़ सरबस्तः बहुत इल्म लदुन्नी के खुले
देख ली कश्फ़ो करामात की एक ज़िन्दा मिसाल
वह्यी - व - इल्हाम की माहियतें रोशन हुईं आज
शबे मेराज का उक़्दः खुला और तूर का हाल
खुल गया आज कि है मौजिज़ः ज़िन्दा **क़ुर्आन**
सब जहां मान गया सामना उसका है मुहाल
हर मुख़ालिफ़ का कटा तेग़ बराहीन से सर

हो गए ग़ैर मज़ाहिब भी बहुज्जत पामाल
पेशगोइयों के खुले भेद रिसालत के भी राज़
खुल गया ईसा मरयम का नुज़ूल इज्लाल
माने ऐजाज़ -ए- नुबुव्वत के फ़रिश्तों का नुज़ूल
क़ल्बे मोमिन पे जो होते हैं इलाही अफ़्ज़ाल
हल हुए नुक्ते तसव्वुफ के विलायत के भी भेद
माना सब ने कि नहीं ख़ारिक़ आदत भी मुहाल
अलग़र्ज़ हो गए हल सैकड़ों उक़्दे ला हल
दस जवाब उसको मिले जिसने किया एक सवाल
मुन्सिफ़ो ग़ौर करो क्या है ज़माना उल्टा
कहते हैं **ईसा मौऊद** को आया दज्जाल
मिस्ल शीशे के नबी और वली होते हैं
नज़र आता है सदा शीशे में अपना खत्तो ख़ाल
ख़ुदा तो शप्पर की तरह आंखों से माज़ूर हैं और
ऐब सूरज को लगाते हैं बईं हुस्नो जमाल
इल्म ज़ाहिर तो है अलइल्म हिजाबुल अकबर
इल्म बातिन से सदा पाता है इन्सान कमाल
मूसा - व- ख़िज्र के क़िस्से को भी क्या भूल गए
कर दिया मूसा को हैरान चला ख़िज्र वह चाल
खिज्र के पीछे चले जाओ अक़ीदत से गुलाब
ख़ैरो ख़ूबी से अगर चाहते हो तुम हालो क़ाल

मेहमान ख़ाना और कुआं इत्यादि का निर्माण करने के लिए चन्दे की आय की तालिका

मुंशी अबदुर्रहमान साहिब अहले मद जरनेली विभाग कपूरथला
मौलवी सय्यद मुहम्मद अहसन साहिब अमरोही
अरब हाजी महदी साहिब बग़दादी नज़ील मद्रास
सेठ अबदुर्रहमान हाजी अल्लाह रखा मद्रास
हकीम फ़ज़्लुद्दीन साहिब भैरवी की पत्नियाँ
ख़ैरुद्दीन सेखवां निकट क़ादियान
जलालुद्दीन साहिब बिलानी ज़िला गुजरात
अब्दुल हक़ साहिब करांची वाला लुधियाना
इब्राहीम सुलेमान कम्पनी मद्रास
सेठ दालजी लाल जी साहिब मद्रास
सेठ सालेह मुहम्मद हाजी अल्लाह रक्खा मद्रास
मौलवी सुल्तान महमूद साहिब मद्रास
शेख़ मुहम्मद जान साहिब वज़ीराबादी
इमामुद्दीन सेखवां निकट क़ादियान
अबुल अज़ीज़ साहिब पटवारी सेखवां
ख़लीफा नूरुद्दीन साहिब वल्लाह दत्ता जम्मू
सेठ इस्हाक इस्माईल साहिब बंगलौर
मिर्ज़ा ख़ुदा बख़्श साहिब अतालीक़ नवाब साहिब मालेरकोटला
बेगम मिर्ज़ा साहिब (मिर्ज़ा ख़ुदा बख़्श साहिब)
शेख़ रहमतुल्लाह साहिब ताज़िर लाहौर
मुंशी करम इलाही साहिब कोह शिमला
नवाब खान साहिब तहसीलदार जेहलम
नबी बख़्श साहिब नम्बरदार बटाला
मुहम्मद सिद्दीक साहिब सेखवां निकट क़ादियान

मौला बख़्श साहिब ताज़िर चर्म डंगा, ज़िला-गुजरात
मुहम्मद्दीन साहिब जूता विक्रेता जम्मू
अल्लाह दत्ता साहिब जम्मू
सरदार समन्द खान साहिब जम्मू
क़ुतुबुद्दीन साहिब कोटला फ़क़ीर ज़िला जेह्लुम
मुहम्मद शाह साहिब ठेकेदार जम्मू
मौलवी मुहम्मद सादिक साहिब जम्मू
शादी ख़ान साहिब सियालकोट
फ़ज़ल करीम साहिब अत्तार जम्मू
मौलवी मुहम्मद अकरम साहिब जम्मू
मौलवी मुहम्मद अकरम साहिब जम्मू
ख़्वाजा जमालुद्दीन साहिब बी.ए जम्मू
मिस्त्री उमरद्दीन साहिब जम्मू
मुफ़्ती फ़ज़ल अहमद साहिब जम्मू
ग़ुलाम रसूल साहिब सौदागर कलकत्ता नज़ील जम्मू
मुंशी नबी बख़्श साहिब जम्मू
शेख़ मसीहुल्लाह साहिब शाहजहाँपूरी
ख़ानसामा साहिब प्रबंधक अन्हार मुल्तान
ज़ैनुद्दीन मुहम्मद इब्राहीम साहिब इंजीनीयर बम्बई
महदी हुसैन साहिब बम्बई
बाबू चिराग़ुद्दीन साहिब स्टेशन मास्टर लैया
अब्दुल्लाह ख़ान साहिब बिरादर तहसीलदार जेहलम
फ़ज़्ल इलाही साहिब फ़ैज़ुल्लाह चक निकट क़ादियान
अब्दुल्लाह साहिब थह ग़ुलाम नबी निकट क़ादियान
अब्दुल खालिक़ साहिब रफ़ूगर अमृतसर
मुहम्मद इस्माईल साहिब सौदागर पश्मीना अमृतसर
बेग़म अब्दुल अज़ीज़ साहिब पटवारी

ग़ुलाम हुसैन साहिब असिस्टेंट स्टेशन दीना
वज़ीरुद्दीन साहिब हेडमास्टर सुजानपुर कांगड़ा
फ़ज़लदीन साहिब क़ाज़ी कोट
नबी बख़्श साहिब अमृतसर की पत्नी
मेहर सावन शेखवां
सय्यद हामिद शाह साहिब सियालकोट
मुहम्मद्दीन साहिब पुलिस कान्सटेबल
हकीम मुहम्मद दीन साहिब पुलिस कान्सटेबल
सय्यद चिराग़ शाह साहिब
इनायतुल्लाह साहिब
सय्यद अमीर अली शाह सारजेण्ट प्रथम श्रेणी
मौलवी क़ुतुबुद्दीन साहिब बद्दोमल्ही
शाह रुकनुद्दीन अहमद साहिब कड़ा सज्जादा नशीन
मिर्ज़ा नियाज़ बेग साहिब ज़िलेदार नहर मुल्तान
हाफ़िज़ अब्दुर्रहमान साहिब लैया
मौलवी अब्दुल्लाह ख़ान साहिब
मौलवी महमूद हसन ख़ान साहिब पटियाला
शेख़ करम इलाही साहिब पटियाला
हाफ़िज़ नूर मुहम्मद साहिब पटियाला
पिसरान शेख़ ज़हूर अली (स्वर्गीय)
वन्बीरा अकरम अली (स्वर्गीय)
सय्यद मुहम्मद अली साहिब अध्यापक क़िला सोभा सिंह
शम्सुद्दीन मुहम्मद इब्राहीम साहिब बम्बई
नूर मुहम्मद साहिब
मिर्ज़ा अफ़ज़ल बेग साहिब मुख़्तार कसूर
अकबर अली शाह साहिब मोजियांवाला गुजरात
हाफ़िज़ नूर मुहम्मद साहिब फ़ैज़ुल्लाह चक निकट क़ादियान

ग़ुलाम कादिर साहिब थह ग़ुलाम नबी निकट क़ादियान
ग़ुलाम मुहम्मद साहिब अमृतसर शेराँवाला कटरा
नबी बख़्श साहिब रफूगर अमृतसर
जमालुद्दीन साहिब सेखवां
ख़लीफ़ा रशीदुद्दीन साहिब सहायक सर्जन चकराता
क़ाजी ज़ियाउद्दीन साहिब क़ाज़ीकोट
क़ाज़ी फ़ज़्लुद्दीन साहिब
सय्यद ख़स्लत अली शाह साहिब थानेदार डंगा
अब्दुल अज़ीज़ साहिब टेलर मास्टर साहिब सियालकोट
शाह साहिब की पत्नी और माँ
शेख़ अता मुहम्मद साहिब सब ओवरसीयर
मौला बख़्श साहिब जूता विक्रेता सियालकोट
सय्यद मुहम्मद साहिब कर्मचारी पुलिस सियालकोट
फ़ज़लदीन साहिब सुनार सियालकोट
मुहम्मद्दीन साहिब अपील नवीस सियालकोट
कादिर बख़्श साहिब लुधियाना
मुहम्मद अकबर साहिब बटाला
मौलवी ग़ुलाम मुहियुद्दीन साहिब टीचर नूर महल
सेठ मूसा साहिब मनीपुर आसाम सदर बाज़ार
मुंशी अज़ीज़ुल्लाह साहिब पोस्ट मास्टर सरहिंद नादून कांगड़ा
शेख मुहम्मद हुसैन साहिब मुरादाबादी मुरासला नवीस पटियाला
मुस्तफा व मुर्तज़ा साहिबान
मुहम्मद अफ़जल व मुहम्मद आज़म साहिबान
शेख़ अब्दुस्समद टीचर सिन्नोरी
मौलवी करमुद्दीन असिस्टेंट अध्यापक क़िला सोभा सिंह
शहाबुद्दीन शम्सुद्दीन साहिब बम्बई
फ़तह मुहम्मद खान बुज़्दार लैया, डेरा इस्माईल ख़ान

डाक्टर बूढ़े ख़ान साहिब कसूर
मौलवी मुहम्मद क़ारी साहिब इमाम मस्जिद कसांवा जेहलम
चिराग़ अली साहिब थह ग़ुलाम नबी निकट क़ादियान
निज़ामुद्दीन साहिब निकट क़ादियान
गुलाबुद्दीन साहिब थलवालिए रियासत जम्मू
अब्दुल अज़ीज़ साहिब पटवारी शेख़वां की माँ
शाहदीन साहिब स्टेशन मास्टर दीना ज़िला जेहलम
मुहम्मद ख़ान साहिब कपूरथला
क़ाज़ी मुहम्मद युसुफ़ क़ाजी कोट
नूर अहमद साहिब दरवेश के
मिस्त्री ग़ुलाम इलाही भेरा- भाईयों और मुहल्ला सहित
बेग़म अब्दुल अज़ीज़ साहिब
मुंशी अल्लाह दत्ता ख़ान साहिब सियालकोट
हकीम अहमदुद्दीन साहिब सियालकोट
सय्यद नवाब शाह साहिब अध्यापक सियालकोट
मिस्त्री निज़ामुद्दीन साहिब अध्यापक सियालकोट
गुलाब ख़ान साहिब सब ओवरसीयर
अली गौहर ख़ान साहिब ब्रान्च पोस्ट मास्टर जालंधर
मुंशी रुस्तम अली साहिब कोर्ट इन्सपेक्टर गुरदासपुर
बाबू ग़ुलाम मुहियुद्दीन फिल्लौर ज़िला- जालन्धर
शर्फुद्दीन साहिब कोटला फ़क़ीर ज़िला जेहलम
डॉ अब्दुल हकीम ख़ां साहिब पटियाला
शेख़ अब्दुल्लाह साहिब और शेख इबादुल्लाह साहिब पटियाला
मौलवी यूसुफ़ साहिब सिन्नौरी
हाफ़िज़ अज़ीम बख़्श साहिब सिन्नोरी
मास्टर ग़ुलाम मुहम्मद साहिब सियालकोट
मौलवी अब्दुल करीम साहिब सियालकोट

बाबू अता मुहम्मद साहिब सब ओवरसीयर कमेटी सियालकोट
विभिन्न लोग सियालकोट
मिस्त्री क़ुर्बान अली साहिब पलटन न० 43 कलकत्ता
मुंशी अब्दुर्रहीम साहिब तारघर मनीपुर
मिस्त्री अब्दुल ग़फ़्फ़ार साहिब कर्मचारी दानापुर पल्टन नम्बर 44
बशारत मियां कर्मचारी मनीपुर पल्टन नम्बर 44
पीर फैज़ अली साहिब मानीपुर
सर्वर ख़ान साहिब जमादार मनीपुर
खण्डा साहिब जमादार गुरदासपुर
लालदीन साहिब मनीपुर
ग़ुलाम रसूल ख़ान साहिब ग़ाज़ीपुर
हुसैन बख़्श साहिब बारकपुर
शबरानी बनारसी अर्दली बाज़ार
मुल्ला अब्दर्रहीम साहिब ग़ज़नी
मौलवी ग़ुलाम इमाम साहिब मनीपुर अज़ीज़ुल वाइज़ीन
मौलवी ग़ुलाम इमाम साहिब मनीपुर की पत्नी
मौलवी मुहम्मद्दीन साहिब पटवारी बिलानी ज़िला गुजरात
ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब बी.ए
मुफ़्ती मुहम्मद सादिक साहिब भैरवी
शेर मुहम्मद साहिब बखर
बाबू मौला बख़्श साहिब लाहौरी

इसके अतिरिक्त और भी कई नाम हैं जो दूसरे पर्चे में प्रकाशित होंगे।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

पत्राचार

इस अवधि में जो कुछ मुकर्रमी ख़्वाजा ग़ुलाम फ़रीद साहिब चिश्ती पीर नवाब साहिब बहावलपुर से इस ख़ाकसार का पत्राचार हुआ केवल जन - हित में वे समस्त पत्र दोनों ओर के छाप दिए जाते हैं शायद किसी ख़ुदा के बन्दे को इस से लाभ पहुंचे। وَ اِنَّمَا الاَعۡمَالُ بِالنِّيَّاتِ

ख़्वाजा साहिब का वह प्रथम पत्र जो अंजाम आथम के परिशिष्ट पृष्ठ 39★ पर प्रकाशित हुआ

अल्लाह के दरवाज़े के फ़क़ीर ग़ुलाम फ़रीद सज्जादा नशीन की ओर से जनाब मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियान की ओर

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم الحمدُ للہ ربّ الارباب والصّلوۃ علٰی رسُولہ الشفیع بیوم الحساب و علٰی اٰلہ و الاصحاب والسّلام علیکم و علی من اجتھد واصاب اما بعد قد ارسلت الیّ الکتاب و بہ دعوت الَی المباھلۃ و طالبت بالجواب و انّی و ان کنت عدیم الفرصۃ و لکن رایت جزءہ من حسن الخطاب و سوق العتاب اعلم یا اعزّ الاحباب انّی من بدو حالك واقف علی مقام تعظیمك لنیل التواب و ماجرت علٰی لسانی کلمۃ فی حقك الا بالتبجیل و رعایۃ الاداب و الان اطلع

لك بانی معترف بصَلاحِ حَالك بلا ارتیاب و موقن بانك من عباد اللہ الصلحین و فی سعیك المشکور مثاب وقد اوتیت الفضل من الملك الوھاب و لك ان تسئل من اللہ تعالی خیر عاقبتی و ادعولکم حسن ماب ولو لا خوف الاطناب لازددت فی الخطاب۔ والسّلام علی من سلك سبیل الصواب۔ فقط ۲۷ رجب ۱۳۱۴ھ من مقام چاچڑاں۔

فقیر غلام فرید

خادم الفقرا 1301 مھر

★ यह रूहानी ख़ज़ायन के उर्दू एडिशन का पृष्ठ न० है।

अनुवाद

समस्त प्रशंसाएं उस ख़ुदा के लिए हैं जो समस्त प्रतिपालकों का प्रतिपालक है और दरूद उस रसूल मक़्बूल पर जो हिसाब के दिन का शफ़ी है और उसकी आल और अस्हाब पर और तुम पर सलाम और प्रत्येक पर जो सीधे मार्ग की ओर कोशिश करने वाला है। तत्पश्चात् स्पष्ट हो कि मुझे आप की वह पुस्तक पहुंची जिसमें मुबाहले के लिए उत्तर मांगा गया है। और यद्यपि मैं फ़ुर्सत नहीं रखता था फ़िर भी मैंने उस पुस्तक के एक भाग को जो भाषण की सुन्दरता और प्रकोप के तरीक़े पर आधारित थी पढ़ी है। तो हे प्रत्येक मित्र से प्रियतर तुझे मालूम हो कि मैं प्रारंभ से तेरे लिए सम्मान करने के स्थान पर खड़ा हूँ ताकि मुझे पुण्य प्राप्त हो और कभी मेरी ज़ुबान पर सम्मान, आदर और शिष्टाचार को ध्यान में रखने के अतिरिक्त तेरे बारे में कोई वाक्य जारी नहीं हुआ और अब मैं तुझे सूचित करता हूं कि मैं निस्सन्देह तेरे नेक हाल का इक़रारी हूं और मैं विश्वास रखता हूं कि तू ख़ुदा के नेक बन्दों में से है और तेरी कोशिश ख़ुदा के नज़दीक धन्यवाद योग्य है जिसका प्रतिफल मिलेगा। और क्षमा करने वाले ख़ुदा बादशाह का तेरे पर फ़ज़्ल है। मेरे लिए अंजाम ख़ैर की दुआ कर और मैं आप के लिए अंजाम ख़ैर व ख़ूबी की दुआ करता हूं। यदि मुझे पत्र के लम्बे होने की आशंका न होती तो मैं अधिक लिखता। والسلام علی من سلک سبیل الصواب

इसका उत्तर

بسم اللّٰہ الرحمٰن الرحیم نحمدُہٗ و نصلی علیٰ رسُولہ الکرِیم

من عبداللّٰہ الاحد غلام احمد عافاہ اللّٰہُ و ایّد الی
الشیخ الکریم السعید حبی فی اللّٰہ غلام فرید۔
السلام علیکم و رحمۃ اللّٰہ وبرکاتہ۔

امّا بعد فاعلم ایھا العبد الصالح قد بلغنی منک مکتوب ضُمّخ بعطرِ الاخلاص والمحبۃ و کُتب بانامل الحبّ والالفۃ جزاک اللّٰہ

خیر الجزاء و حفظك من کل انواع البلاء انی وجدت ریح التقوٰی فی کلمٰتك فما اضوع ریاك وما احسن نموذج نفحاتك و قد اخبر النبیّ صَلّی اللّٰہ علیہ وسلم فی امری واثنٰی علٰی احبابی و زمری وقال لا یصدقہ الا صالح ولا یکذبہ الا فاسق فشرفا لك ببشارۃ المصطفٰی وواھًا لك من الربّ الاعلٰی و من تواضع للّٰہ فقد رُفِع و من استکبر فرد و دُفع و انی ما زلت مذ رأیت کتابك و اٰنست اخلاقك و ادابك ادعولك فی الحضرۃ واسئل اللّٰہ ان یتوب علیك بانواع الرحمۃ وقد سرنی حسن صفاتك ورزانۃ حصاتك وعلمت انك خُلِقت من طینۃ الحُرّیۃ و أعطیت مکارم السجیّۃ و احن الی لقائك بھوی الجنان ان کان قدرالرحمن و قد سمعت بعض خصائص نباھتك ومآثر وجاھتك من مخلصی الحکیم المولوی نور الدّین فالان زاد مکتوبك یقینا علی الیقین وصار الخبر عیانا والظن بُرۡھَانا فادعوا اللّٰہ سبحانہ ان یبقٰی مجدك و بنیانہ و یُحیط علیك رُحۡمہ وغفرانہ و کنت قلت للناس انك لا تلوی عذارك ولا تظھر انکارك فابشرت بان کلمتی قد تمّت و ان فراستی ما اخطأت و رغّبنی خلقك فی ان افوز بمرٰاك و اسرّ بلقیاك فارجو ان تسرّنی بالمکتوبات حتی تجیء من اللّٰہ وقت الملاقات والان ارسل اِلَیّك مع مکتوبی ھٰذا ضمیمۃ کتابی کما ارسلتہ الٰی احبابی و فیھا ذکرك و ذکر مکتوبك وارجوان تقرء ھا ولو کان حرج فی بعض خطوبك والسّلام علیك وعلی اعزتك وشعوبك۔

فقط من قادیان

अनुवाद:-

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिलकरीम

ख़ुदा-ए-वाहिद के बन्दे ग़ुलाम अहमद अफाहुल्लाहु व अय्यद (अल्लाह उसकी सुरक्षा करे और उसका सहायक हो) की ओर से आदरणीय एवं प्रिय ग़ुलाम फरीद के नाम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहू

तत्पश्चात हे अल्लाह के नेक बन्दे जान ले कि मुझे आप की ओर से श्रद्धा और प्रेम की सुगंध से भरा हुआ पत्र मिला है और उस पत्र को मुहब्बत की उँगलियों से लिखा गया है। अल्लाह आपको उत्तम प्रतिफल प्रदान करे और हर प्रकार की बुराई से आपकी सुरक्षा करे।

आपके शब्दों में मैंने तक़्वा की सुगंध पाई। आपकी पवित्र सुगंध का फैलाव और आपकी महक का नमूना क्या ही अच्छा है और निस्संदेह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरे बारे में ख़बर दी और मेरे प्यारों और साथियों की प्रशंसा की है और फ़रमाया कि इसका सत्यापन केवल नेक लोग करेंगे और उसे केवल पापी लोग झुठलाएंगे।

अतः मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह भविष्यवाणी आपके लिए सौभाग्य के तौर पर है और अल्लाह की ओर से आपको बधाई हो और अल्लाह की खातिर जिसने विनम्रता से काम लिया तो उसे बुलंद मुक़ाम प्राप्त होगा और जिस ने अहंकार से काम लिया उसे धुतकारा जाएगा और लौटा दिया जाएगा।

जब से मैंने आपका पत्र पढ़ा और आपके सद्व्यवहार और शिष्टाचार को अनुभव किया उस समय से मैं आपके लिए दुआ कर रहा हूँ कि अल्लाह आपको अपनी रहमतें प्रदान करे। और मुझे आपकी अच्छी विशेषताओं एवं उत्तम विवेक को देख कर प्रशंसा हुई और मुझे ज्ञात हुआ कि आप आज़ादी के खमीर से पैदा किए गए हैं और उत्तम शिष्टाचार से युक्त हैं और यदि रहमान ख़ुदा ने चाहा तो मैं दिल से आपसे मिलने का इच्छुक हूँ। और मैंने अपने प्रिय मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब से आपकी बुद्धिमत्ता की विशेषताओं और आपकी प्रतिष्ठा के बारे में सुना।

अतः अब आपके पत्र ने मुझे और अधिक विश्वास से भर दिया है और यह ख़बर देख लेने के समान विश्वसनीय हो गई है और अनुमान दलील बन गया है। मैं अल्लाह से दुआ करता हूँ कि वह आपकी शान को बनाए रखे और आपको अपनी रहमत और क्षमा से घेरे रखे, और आपने इससे पहले लोगों से कहा है कि आप (हमसे) मुंह नहीं फेरेंगे और न ही इन्कार करेंगे। अतः मैं आपको खुशख़बरी देता

हूँ कि आपके बारे में मेरे शब्द पूरे हुए और मेरे विवेक ने ग़लती नहीं की। आपके शिष्टाचार ने मुझे प्रेरित किया कि मैं आपको देखने में सफल हो जाऊँ और आपसे मिल कर प्रसन्न हो जाऊं। मैं आशा करता हूँ कि आप अपने पत्रों के माध्यम से मुझे प्रसन्न करते रहेंगे यहाँ तक कि अल्लाह से मिलने का समय (मृत्यु) आ जाए। मैं आपको अपने इस पत्र के साथ अपनी पुस्तक का परिशिष्ट भिजवा रहा हूँ जिस प्रकार मैंने अपने अन्य प्रियजनों को भिजवाया है। और इसमें आपका और आपके पत्र का वर्णन है। आप से निवेदन है कि इस पुस्तक को पढ़ें, यद्यपि आपके काम का कुछ नुकसान होगा। अस्सलामु अलैकुम और सलामती हो आप के प्यारों पर और आप के बुज़ुर्गों पर। इति

ख़्वाजा साहिब का दूसरा पत्र

بخدمت جناب میرزا صاحب عالی مراتب مجموعہ محاسن بیکراں مستجمع اوصاف بے پایان مکرم معظم برگزیدۂِ خدائے احد جناب میرزا غلام احمد صاحب متّع اللّٰہ الناس ببقائہ وسرّنی بلقائہ وانعمہ بآلائہ۔ پس از سلام مسنون الاسلام وشوق تمام ودعائے اعتلائے نام وارتقائے مقام واضح ولائح باد۔ نامۂ محبت ختامہ الفت شمامہ مشحون مہربانی ھائے تامہ معہ کتاب مرسلہ رسیدہ چھرہ کشائے مسرت تازہ و فرحت بے اندازہ گشت۔ مخفی مباد کہ ایں فقیر ازبدو حال خود بتقاضائے فطرت درعربدھا افتادن وبے ضرورت قدم درمعارک مناقشات نہادن پسند ندارد چند انکہ می تواند خود را ازمداخل طوفان نزاع بے معنی برمی آرد وچوں اکثر مردم راموافقت ھوا ازطلب حق بازداشتہ است وتعصب مجاری تحقیق رابخاک جھل فراانباشتہ براں بکنہ گفتار ھانا رسیدہ وغایت کارھا نادیدہ غوغائے برمی انگیزند وھماں غبار جھالت کہ بھوائے عناد برداشتہ بسر خویش می پیزند

ورنہ ثمرہ کارھا بر نیت صحیح است ودلالت کنایات ابلغ از تصریح پوشیدہ نماند کہ درین جزوزمان کسانے از علمائے وقت از فقیر مطالبہ جواب کردہ اند کہ ھمچو کسے را (یعنی آں صاحب را) کہ باتفاق علماء چنین وچنان ثابت شدہ است چرا نیک مرد پنداشتہ اند واز چہ رو در وے حسن ظن داشتہ چون تحریر ایشان مملو بود از کمال جوش وترکیب الفاظ ایشان بابرق طپشہا ھم آغوش نظر بر آنکہ مضامین شان بر غلیان دلہا گواہ است وبر نیت ھر کس خدائے دانا تر آگاہ و بہ ھیچ کس گمان بد بردن شیوہ اھل صفا نیست وبے تحقیق کسے را منافق یا مطیع نفس دانستن روانہ فقیر را در کار شان ھم گمان بد گران مے نمود زیر آنکہ اگر نیت صادق داشتہ باشند غلط شان بمشابہ خطا فی الاجتہاد خواھد بود ورنہ گوش محبت نیوش ھر قدر کہ از غایت کار آن مکرم ذخیرہ آگاھی انباشت دل الفت شامل زیادہ از ان در اخلاص افزود کہ داشت دعا ست کہ از عنایت حق سببے بھتر پیدا آید و ساعتے نیکو روئے نماید کہ حجاب مباعدت جسمانی ونقاب مسافت طولانی از میان برخیزد واگر بار سال مضمونیکہ در جلسۂ مذاھب پیش کردہ اند مسرور فرمایند منت باشد۔ والسلام مع الاکرام فضائل و کمالات مرتبت مولوی نور الدین صاحب سلام شوق مطالعہ فرمایند۔ وصاحبزادہ محمد سراج الحق صاحب نیز۔

الراقم فقیر غلام فرید الچشتی النظامی من مقام **چاچڑاں شریف**

مہر ۲۷ ماہ شعبان المعظم ۱۳۱۴ ھجریہ نبویہ

अनुवादः-

ख्वाजा साहिब का दूसरा पत्र

परम आदरणीय जनाब मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब जो बहुत सी विशेषताओं के मालिक और अनंत खूबियों से परिपूर्ण, ख़ुदा ए वाहिद की ओर से प्रतिष्ठित हैं

متع اللہ الناس ببقائہ و سرنی بلقائہ و انعمہ بالائہ

अस्सलामु अलैकुम, अत्यंत प्रेम और आपके नाम और मुक़ाम की बुलंदी के लिए दुआ करता हूँ। इसके बाद स्पष्ट हो कि आपकी मुहब्बत का पत्र जिस पर प्रेम की मुहर लगी थी और आपकी मुहब्बतों की सुगंध से भरा हुआ था, भेजी हुई पुस्तक के साथ मिला जो मुख पर ताज़ा ख़ुशी और अनन्त प्रसन्नताएं लाने का कारण बना।

स्पष्ट हो कि यह फ़क़ीर (अर्थात ख्वाजा साहिब) स्वभाविक रूप से अपनी दो अवस्थाओं को अर्थात लड़ाइयों में पड़ने और अकारण बहसों और दोगलेपन में क़दम रखने को पसन्द नहीं करता। जहाँ तक हो सके स्वयं को बेकार के झगड़ों के स्थानों से दूर रखता हूँ और चूंकि अधिकतर लोगों को उनकी सांसारिक इच्छाओं और लालचों ने सत्य को धारण करने से रोक रखा है और पक्षपात ने खोज के मार्गों को गुमराही की मिट्टी से भर दिया है और इससे भी बढ़ कर यह कि ये लोग बातों की गहराई तक पहुँचे बिना, कामों के परिणामों को देखे बिना उपद्रव करना आरम्भ कर देते हैं और इसी मूर्खता की धूल को जो यह शत्रुता से वशीभूत होकर उड़ाते हैं अपने सरों पर बैठा लेते हैं अन्यथा कर्मों का परिणाम और फल सही नीयत पर आधारित है और इशारों में की हुई बात विस्तार और व्याख्या से अधिक श्रेष्ठ होती है।

स्पष्ट हो कि इस युग में समय के उलमा (विद्वानों) में से कुछ इस वाक्य से इस बात का उत्तर मांग रहे हैं कि ऐसा व्यक्ति जो उलमा की सहमति से अमुक और अमुक सिद्ध हो चुका है आप उसे कैसे अच्छा इंसान अनुमान करते हैं और किस प्रकार उसके बारे में सुधारणा रखते हैं। उनका लेख अत्यंत जोश से भरा हुआ था और उनके शब्दों का क्रम बिजली के समान गर्म था और उनके लेख खोलते हुए दिलों पर गवाह हैं जबकि प्रत्येक की नीयत से अल्लाह तआला ही परिचित है जो सबसे

बेहतर जानने वाला है। और किसी के बारे में कुधारणा करना नेक लोगों का काम नहीं और बिना छान-बीन के किसी को मुनाफ़िक़★और तामसिक इच्छाओं का ग़ुलाम समझना भी उचित नहीं। इस फ़क़ीर को तो उनके इस काम पर भी कुधारणा करना कठिन लग रहा था क्योंकि यदि वे अच्छी नीयत रखते हैं तो उनकी ग़लती, इज्तेहादी ग़लती (समझने में ग़लती करने) के समान होगी, अन्यथा इस फ़क़ीर का कान जो मुहब्बत की बातें सुनने वाला है, जितना भी आप महोदय के कामों के बारे में ख़बरों का संग्रह जमा किया है उससे दिली मुहब्बत और श्रद्धा जो पहले से थी उसमें अधिक बढ़ोतरी ही हुई है। दुआ है कि अल्लाह तआला की कृपा से कोई बेहतर माध्यम पैदा हो और ऐसा अच्छा समय आए कि जब यह शारीरिक दूरी का पर्दा और लम्बे सफ़र का नक़ाब मध्य से उठ जाए। जो निबंध आप ने धर्म महोत्सव में प्रस्तुत किया था उसे भेज कर इस फ़क़ीर को प्रसन्न कर सकें तो कृपा होगी। और सम्मानपूर्वक (इस फ़क़ीर का) सलाम बहुत सी विशेषताओं से युक्त मौलवी नूरुद्दीन साहिब और साहिबज़ादा मुहम्मद सिराजुल हक़ साहिब को भी पहुंचा दें।

लेखक फ़क़ीर ग़ुलाम फरीद अच्चिश्ती अन्निज़ामी

चांचड़ा शरीफ़

27 शाबान 1314 हिज्री नबवी

उत्तर

بسم اللہ الرحمن الرحیم نحمدہ ونصلی علیٰ رسولہ الکریم

بخدمت حضرت مخدوم و مکرم الشیخ الجلیل الشریف السعید

حبّی فی اللہ غلام فرید صاحب کان اللہ معہ و رضی عنہ و ارضاہ۔

السلام علیکم و رحمۃ اللہ و برکاتہ

امابعد نامہ نامی و صحیفہ گرامی افتخار نزول فرمودہ باعث

★**मुनाफ़िक़-** ऐसा व्यक्ति जो स्वयं को मुसलमान कहता हो परन्तु अन्दर से इस्लाम विरोधी हो, दोगला। अनुवादक

گونان گون مسرت ها گردید و بمقتضائے آیہ کریمہ از چندین
هزار علماء و صلحا بوئے آشنائی از کلمات طیبات آن مخدوم
بشمیدم شکر خدا که این سرزمین ازان مردان حق خالی
نیست که در اظهار کلمة الحق ازلوم هیچ لائمے نمے ترسند۔ ونورے
دارند ازجناب احدیت و فراستے دارند از حضرت عزت پس فطرت
صحیحه مطهره ایشان سوئے حق ایشان رامے کشد و در احقاق حق
روح القدس تائید شان میفرماید فالحمدللّٰه ثم الحمدللّٰه که مصداق
این امور آن مخدوم را یافتیم۔ اے برادر مکرم رجوع مشائخ وقت
سوئے این عاجز بسیار کم است و فتنه ها ازهر سو پیدا پیش زین
حبی فی اللّٰه حاجی منشی احمدجان صاحب لدهیانوی که
مؤلف کتاب طب روحانی نیز بودند بکمال محبت و اخلاص بدین
عاجز ارادتے پیدا کردند و بعض مریدان نا اهل در ایشان چیز ها
گفتند که بدین مشیخت و شهرت کجا افتاد چون اوشان را از
آن کلمات اطلاعے شد معتقدان خود را در مجلسی جمع کردند
و گفتند که حقیقت اینستکه ماچیزے دیدیم که شما نمے بینید پس اگر
ازمن قطع تعلق میخواهید بسیار خوب است مرا خود پروائے این
تعلق هانمانده ازین سخن شان بعض مریدان اهل دل بگریستند
و اخلاصے پیدا کردند که پیش زان نیز نمے داشتند و مرا وقت
ملاقات گفتند که عجب کاریست که مرا افتاده که من قصد مصمم
کرده بودم که اگر مرامے گذارند من ایشانرا گذارم لیکن امر
برعکس آں پدید آمده و قسم خوردند که اکنون بآن خدمتها پیش
مے آیند که قبل زین ازان نشانے نبود این بزرگ مرحوم چون
بعد از مراجعت حج وفات کردند اعزه و وابستگان خود را بار بار
همین نصیحت نمودند که بدین عاجز تعلق هائے ارادت داشته
باشیدو وقت عزیمت حج مرانوشتند که مرا حسرتهاست که من

زمان شمارا بسیار کمتر یافتم و عمرے گرد این و آن برباد رفت و فرزندان و همه مردان و زنان که اعزه شان بودند بوصیت شان عمل کردند و خود را درسلک بیعت این عاجز کشیدند چنانچه از روزگارے در از فرزندان آن بزرگ سکونت لدهیانه را ترک کرده اند و مع عیال خود نزد من در قادیان می مانند۔

و شیخے دیگر پیر صاحب العلم است که برائے من خواب دیدند و درباره من از آنحضرت صلی اللّٰه علیه و سلم در مجلسے عظیم شهادت دادند و سوئے من آن مکتوبے نوشتند که در ضمیمه انجام آتھم از نظر آن مکرم گذشته باشد۔

اما هنوز جماعت این عاجز بدان تعداد نه رسیده که برمن از خدائے من عدد آن مکشوف گردیده بود میدانم که تا اکنون جماعت من از هشت هزار دو سه کم یا زیاده خواهد بود۔

اے مخدوم و مکرم این سلسله سلسلۂ خدا است و بنائے است از دست قادرے که همیشه کارهائے عجائب می نماید او از کاروبار خود پرسیده نمی شود که چرا چنین کردی۔ مالک است هرچه خواهد مے کند از خوف او آسمان و زمین می جنبند و از هیبت او ملائک می لرزند و مرا او در الهام خود آدم نام نهاده و گفت اَرَدْتُ اَنْ اَسْتَخْلِفَ فَخَلَقْتُ اٰدم چرا که میدانست که من نیز مورد اعتراض اتجعل فیها من یفسد فیها خواهم گردید پس هر که مرا می پذیرد فرشته است نه انسان و هر که سرمے پیچد ابلیس است نه آدمی این قول خدا گفته نه من۔ فطوبٰی للّذین احبّونی وما عادونی و صافونی وما اذونی و قبلونی ومَا ردّونی اُولٓئك علیهم صلوات الله و اُولٓئك هم المهتدون۔ و آنچه آن مخدوم نقل مضمون جلسۂ مذاهب طلب کرده

بودند پس سبب توقف این شد که من منتظر بودم که جزوے از مضمون مطبوع نزدم رسد تا بخدمت بفریستم چنانچه امروز یک حصۂ ازاں رسید که بخدمت روانه میکنم وهم چنیں آینده نیز بطوریکه وقتاً فوقتاً می رسد انشاءاللّٰه تعالیٰ بخدمت روانه خواهم کرد و قبولیت این مضمون ازیں ظاهر است که اخبار هائے سرکاری که بهر خبرے سروکارے ندارند و صرف آں اخبار را نویسند که عظمتے داشته باشند تعریف آں مضمون بنحوے کرده اند که تا حد اعجاز رسانیده اند چنانچه سول ملٹری می نویسد که چون این مضمون خوانده شد بر همه مردم عالم محویت طاری بود و بالاتفاق نوشتند که بر همه مضامین همیں غالب آمد بلکه نوشتند که دیگر مضامینے به نسبت آں چیزے نه بودند پس این فضل خدا است که پیش ازین واقعہ از الهام و کلام خود مرا اطلاعے نیز داد و من نیز پیش از وقت آن اعلام الٰهی را بذریعه اشتهار مشتهر کردم پس عظمت این واقعه نورٌ علیٰ نور شد فالحمد لِلّٰه علیٰ ذالك۔

و آنچه آں مکرم در باره شکوه و شکایت علماء ارقام فرموده بودند دریں باب چه گوئیم و چه نویسیم مقدمه من و ایشان بر آسمان است پس اگر من کاذبم و در علم حضرت باری عز اسمهٔ مفتری۔ و دعویٰ من کذبے و خیانتے و دجلے است۔ دریں صورت از خدا دشمن ترے در حق من کسے نیست و جلد تر مرا از بیخ خواهد بر کند و جماعت مرا متفرق خواهد ساخت زیر آنکه او مفتری را هرگز بحالت امن نمی گزارد لیکن اگر من از و و از طرف او هستم و بحکم او آمدم و هیچ خیانتے در کار و بار خود ندارم پس شک نیست که او ز انسان تائید

من خواهد کرد کہ از قدیم در تائید صادقان سنت اور فتہ است و از لعنت این مردم نمی ترسم لعنت آن ست کہ از آسمان ببارد و چون از آسمان لعنت نیست پس لعنت خلق امریست سہل کہ ہیچ راستبازے ازان محفوظ نماندہ لیکن برائے آن مخدوم بحضرت عزت دعا میکنم کہ محض از سعادت فطرت خود ذبّ مخالفان این عاجز کردہ اند پس اے عزیز خدا باتو باشد و عاقبت تو محمود باد جزاك الله خير الجزاء و اَحْسَنَ اِلَيْكَ فی الدُّنیا وَ العُقْبٰی و کان معك اینما کنت وادخلك الله فی عبادہ المَحْبُوبِین۔ آمین۔

अनुवादः-

उत्तर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

सेवा में हज़रत मखदूम व मुकर्रम अश्शैख अल्जलील अश्शरीफ़ अस्सईद हुब्बी फिल्लाह ग़ुलाम फ़रीद साहिब अल्लाह आपके साथ हो और आपसे राज़ी हो और आप उससे राजी हों

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातुहू

तत्पश्चात आपके पत्र का आना मेरे लिए अत्यंत प्रसन्नता का कारण बना और इस पवित्र आयत के अनुसार कि-

اِنِّی لَاَجِدُ رِیْحَ یُوْسُفَ لَوْلَا اَنْ تُفَنِّدُوْنَ (यूसुफ़- 95)

हज़ारों उलमा और सुलहा के समान मैंने ख्वाजा साहिब के पवित्र शब्दों से मारिफत की गंध सूंघी है। ख़ुदा तआला का शुक्र है कि यह धरती अब भी आप जैसे सच्चे मर्दों से ख़ाली नहीं है जो कि सच्ची बात के इज़हार के लिए किसी आलोचक की आलोचना से नहीं डरते। ऐसे लोग ख़ुदा तआला की ओर से विवेक एवं आध्यात्मिक प्रकाश रखते हैं। अत: इनकी पवित्र फितरत उनको ख़ुदा की ओर खींच लाती है और सत्य की उन्नति के लिए रूहुल क़ुदुस (फ़रिश्ता) उनकी सहायता करता है।

فالحمد لله ثم الحمد لله

(अर्थात समस्त प्रशंसाएं अल्लाह तआला के लिए हैं)

कि हम ने उन समस्त मामलों का पात्र ख़्वाजा मख़दूम को पाया, हे सम्मान योग्य भाई! वर्तमान युग में समय के मशाइख★ का ध्यान इस विनीत की ओर बहुत कम है और हर ओर से फ़ित्नों का प्रकटन।

इससे पूर्व हुब्बी फिल्लाह हाजी मुन्शी अहमद जान साहिब लुधियानवी ने जो कि पुस्तक 'तिब्बे-रूहानी' के लेखक भी हैं, अत्यंत प्रेम एवं श्रद्धा पूर्वक इस विनीत की आस्था का इज़हार किया तो कुछ अयोग्य मुरीदों ने उन्हें कहा कि आपकी प्रतिष्ठा और प्रसिद्धि कहाँ चली गई? जब उनको इस बात की सूचना मिली तो उन्होंने अपने अनुयायियों को एक स्थान पर एकत्र किया और स्पष्ट रूप से कहा कि मैंने वह कुछ देखा है जो तुम नहीं देख रहे हो। अत: यदि तुम मुझसे सम्बन्ध समाप्त करना चाहते हो तो ठीक है अब मुझे स्वयं भी इन संबंधों की कोई परवाह नहीं है। यह सुन कर उनके कुछ मुसलमान मुरीद रोने लगे और वह श्रद्धा उनके अन्दर पैदा हुई जो पहले नहीं थी और मुझे मुलाक़ात के समय बताया कि विचित्र संयोग है कि मैंने पक्का इरादा किया था कि अगर वे सब मुझे छोड़ेंगे तो मैं भी उनको छोड़ दूंगा लेकिन मामला उल्टा हो गया और उन्होंने क़सम खाई कि अब हम पहले से अधिक सेवा करेंगे। उस बुज़ुर्ग मरहूम ने जब हज से लौटने के बाद मृत्यु पाई तो अपने संबंधियों को बार-बार यही उपदेश किया कि इस विनीत से इरादत (आस्था) का संबंध स्थापित करो। और हज पर जाने से पहले मुझे लिखा कि अफ़सोस है कि मैंने आपके साथ रहने का कम अवसर पाया है और मेरी आयु इधर-उधर के मामलों के कारण व्यर्थ हो गई और उनकी संतान ने और परिवार वालों ने जो उनके निकट के लोग थे उनकी वसीयत पर अमल किया और इस विनीत की बैअत में सम्मिलित हुए। अत: एक लम्बे समय से उनके संबंधियों ने लुधियाना को छोड़ दिया और अपने परिवार सहित क़ादियान में रहने लगे।

और एक ज्ञानी बुज़ुर्ग ने मेरे लिए स्वप्न देखा और मेरे बारे में आंहज़रत

★ **मशाइख-** इस्लामी उलमा और सूफी लोग- अनुवादक

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक सभा में गवाही पाई और मेरी ओर वह पत्र लिखा जो कि 'अन्जाम आथम के परिशिष्ट' में आदरणीय ख्वाजा साहिब की नज़र से गुज़रा होगा।

लेकिन अभी मेरी जमाअत की संख्या जिसको मेरे ख़ुदा ने मुझ पर स्पष्ट किया था, और मैं जनता हूँ कि अब तक मेरी जमाअत की संख्या लगभग आठ हज़ार होगी।

हे मख्दूम व मुकर्रम! यह सिलसिला ख़ुदा का सिलसिला है और शक्तिमान ख़ुदा ने इसकी बुनियाद रखी है जो सदा विचित्र काम प्रकट करता है, वह अपने कारोबार के बारे में नहीं पूछा जाता कि क्यों ऐसा किया, वह मालिक है जो चाहता है सो करता है। उसके भय से धरती और आकाश कांपते हैं और उसके रौब से फ़रिश्ते भी काँप उठते हैं और उसने इल्हाम में मेरा नाम आदम रखा है और फ़रमाया- **اَرَدْتُّ اَنْ اَسْتَخْلِفَ فَخَلَقْتُ اٰدَمَ** क्योंकि वह जानता था कि आदम के समान मैं भी **اَتَجْعَلُ فِيْهَا مَنْ يُّفْسِدُ فِيْهَا** ऐतराज़ का निशाना बनाया जाऊंगा। अत: जो कोई मुझे स्वीकार करता है वह फ़रिश्ता है और जो कोई मुझसे मुंह फेरता है वह इब्लीस है मनुष्य नहीं, यह ख़ुदा का कथन है मेरा नहीं। **فطوبیٰ للّذین احبّونی و ما عادونی و صافونی و ما اذونی و قبلونی و مَا ردّونی اُولٓئک علیھم صلوات اللّٰہ و اُولٓئک ھم المھتدون** और ख्वाजा साहिब ने जलसा मज़ाहिब (धार्मिक महोत्सव) के लेख की प्रति मांगी थी, परन्तु देरी इस कारण हुई कि मैं प्रतीक्षा कर रहा था कि प्रकाशित लेख का एक भाग मुझ तक पहुँच जाए ताकि मैं आपकी सेवा में भेज दूँ। अत: आज इस लेख का एक भाग भेज रहा हूँ और यदि अल्लाह ने चाहा तो भविष्य में भी समय-समय पर इसके दूसरे भाग भेजता रहूँगा। इस लेख की लोकप्रियता इस प्रकार ज़ाहिर होती है कि सरकारी अखबार में से नमूना के तौर पर केवल उस अख़बार का वर्णन करता हूँ जिसका एक प्रतिष्ठित मर्तबा है उसने इस लेख की प्रशंसा यहाँ तक की है कि मानो चमत्कार की सीमा तक पहुंचा दिया है। अत: सिविल मिलट्री लिखता है कि जब यह लेख पढ़ा गया तो समस्त लोगों पर तल्लीनता छाई हुई थी और सब ने सहमति पूर्वक लिखा कि समस्त लेखों पर यही विजयी रहा बल्कि यहाँ तक लिखा कि

दूसरे लेख इसके मुकाबले पर कुछ भी नहीं।

अत: यह ख़ुदा का फज़ल है कि इस घटना से पूर्व ही अपने इल्हाम और कलाम से मुझे ख़बर दी थी और इस विनीत ने भी समय पूर्व इस ख़ुदाई इल्हाम को विज्ञापन के द्वारा प्रकाशित किया, इस प्रकार इस घटना की महानता 'नूरुन अला नूर' सिद्ध हुई। इस पर अल्लाह की कोटि-कोटि प्रशंसा।

और आदरणीय खवाजा साहिब ने उलमा की शिकायत और शिक्वा के बारे में लिखा था। इस बारे में क्या कहूँ और क्या लिखूं मेरा और उन लोगों का मुक़द्दमा ख़ुदा के पास है। यदि मैं झूठा हूँ और ख़ुदा की नज़र में मुफ्तरी (अर्थात मनगढ़त झूठ कहने वाला) और मेरा दावा झूठ, ख़यानत और धोखा है तो ऐसी अवस्था में ख़ुदा से बढ़ कर मेरा कोई शत्रु नहीं और वह शीघ्र मुझे जड़ से उखाड़ देगा और मेरी जमाअत को वीरान कर देगा क्योंकि वह एक मुफ्तरी को अमन की हालत में नहीं रखता लेकिन यदि मैं उसकी ओर से हूँ और उसके आदेश के अनुसार आया हूँ और अपने काम में कोई ख़यानत नहीं करता तो कोई संदेह नहीं कि वह अवश्य मेरी सहायता करेगा क्योंकि सच्चों की सहायता करना हमेशा से अल्लाह की सुन्नत है और मैं उनकी लानत तथा बुरा-भला कहने से नहीं डरता। लानत वह है जो ख़ुदा से बरसती है और जब ख़ुदा की लानत नहीं है तो सृष्टि की लानत से क्या डर? क्योंकि कोई भी सत्यनिष्ठ इससे सुरक्षित नहीं रहा। लेकिन हज़रत मख़दूम के लिए दुआ करता हूँ कि उन्होंने केवल अपनी नेक फितरत के आधार पर इस विनीत के सामने विरोधियों की निंदा की है। अत: हे प्रिय! ख़ुदा आपके साथ हो और आपका परिणाम प्रशंसनीय हो।

جزاك الله خير الجزاء و اَحۡسَنَ اِلَيۡكَ فى الدُّنيا وَ العُقۡبٰى
و كان معك اينما كنت و ادخلك الله فى عبَاده المَحۡبُوبِين۔ آمين۔

मस्नवी

اے فرید وقت در صدق و صفا
باتو باد آن رو کہ نام او خدا

अनुवाद :- हे श्रद्धा और निष्ठा में इस समय के अनुपम इन्सान तेरे साथ वह अस्तित्व हो जिसका नाम ख़ुदा है।

بر تو بارد رحمت یار ازل
در تو تابد نور دلدار ازل

अनुवाद :- तुझ पर उस अनादि यार की रहमतों की वर्षा हो और तुझ में उस अनादि प्रियतम का प्रकाश चमकता रहे।

از تو جان من خوش ست اے خوش خصال
دیدمت مردے دریں قحط الرجال

अनुवाद :- हे नेक स्वभाव इन्सान तुझ से मेरी जान राज़ी है इस लोगों के अकाल में तुझ को ही एक मर्द पाया है।

در حقیقت مردم معنی کم اند
گو ھمہ از روئے صورت مردم اند

अनुवाद :- वास्तव में सच्चे इन्सान बहुत कम होते हैं यद्यपि देखने में सब आदमी ही दिखाई देते हैं।

اے مرا روئے محبت سوئے تو
بوئے انس آمد مرا از کوئے تو

अनुवाद :- हे वह कि मेरे प्रेम का मुख तेरी ओर है। मुझे तेरे कूचे से प्रेम की सुगंध आती है।

کس ازیں مردم بما روئے نہ کرد
ایں نصیبت بود اے فرخندہ مرد

अनुवाद :- इन लोगों में से किसी ने भी हमारी ओर मुंह नहीं किया है सौभाग्यशाली इन्सान यह बात तेरे भाग्य में ही थी।

هر زمان بالعنتے یادم کنند
خستہ دل از جور و بیدادم کنند

अनुवाद :- ये लोग तो हर समय मुझे लानत से याद करते हैं और अन्याय युक्त व्यवहार से मुझे दुख देते रहते हैं।

کس بچشم یار صدیقے نہ شد
تا بچشم غیر زندیقے نہ

अनुवाद :- यार की नज़र में कोई व्यक्ति सच्चा नहीं ठहर सकता जब तक वह ग़ैरों की नज़र में नास्तिक नहीं।

کافرم گفتند و دجال و لعین
بہر قتلم ہر لئیمے در کمین

अनुवाद :- उन्होंने मुझे काफ़िर, दज्जाल और लानती कहा और हर कमीना मेरे क़त्ल के लिए घात में बैठ गया।

بنگر این بازی کنان را چون جہند
از حسد بر جان خود بازی کنند

अनुवाद :- इन बाज़ीगरों को देख कि किस प्रकार उछलते हैं ये ईर्ष्या के कारण अपनी जान से खेलते हैं।

مومنے را کافرے دادن قرار
کار جان بازیست نزد ہوشیار

अनुवाद :- किसी मोमिन को काफ़िर ठहराना समझदार आदमी के नज़दीक बड़े ख़तरे की बात है।

زانکہ تکفیرے کہ از ناحق بود
واپس آید بر سر اہلش فتد

अनुवाद :- क्योंकि जो तक्फ़ीर (काफ़िर ठहराना) अकारण की जाती है वह काफ़िर ठहराने वाले के सर पर हीं वापस पड़ती है।

سفلۂ کو غرق در کفر نہان
ہرزہ نالد بہر کفر دیگران

अनुवाद :- वह मूर्ख जो गुप्त कुफ्र में डूबा है वह दूसरों के कुफ्र पर अकारण व्यर्थ शोर मचाता है।

گر خبر زان کفر باطن داشتے
خویشتن را بدترے انگاشتے

अनुवाद :- यदि उसे अपने आन्तरिक कुफ्र की ख़बर होती तो अपने आप को ही बहुत बुरा समझता।

تا مرا از قوم خود ببریده اند
بهر تکفیرم چها کوشیده اند

अनुवाद :- जब से लोगों ने मुझे अपनी क़ौम से काट दिया है तब से उन्होंने मुझे काफ़िर बनाने में कितनी-कितनी कोशिशें की हैं।

افتراها پیش هر کس برده اند
و از خیانتها سخن پرورده اند

अनुवाद :- हर व्यक्ति के सामने झूठ बांधे और बेईमानी के साथ ख़ूब बातें बनाईं।

تا مگر لغزد کسے زاں افترا
ساده لوحے کافر انگارد مرا

अनुवाद :- ताकि कोई तो उस झूठ गढ़ने के कारण फिसल जाए और भोला आदमी मुझे काफ़िर समझने लगे।

در رہ ما فتنه ها انگیختند
با نصاری رائے خود آمیختند

अनुवाद :- उन्होंने हमारे मार्ग में फ़ित्ने ख़ड़े किए और ईसाइयों के साथ मेल-जोल किया।

کافرم خواندند از جهل و عناد
این چنین کورے بدنیا کس مباد

अनुवाद :- मूर्खता और वैर के कारण मुझे काफ़िर कहा। काश कि दुनिया में इतना ऊंचा कोई न हो।

بخل ونادانی تعصب ہافزود
کین بجوشید ودو چشم شان ربود

अनुवाद :- कंजूसी और मूर्खता ने पक्षपात को बढ़ाया और शत्रुता भड़क कर उनकी दोनों आंखें निकाल ले गयी।

مامسلمانیم از فضل خدا
مصطفی مارا امام ومقتدا

अनुवाद :- हम ख़ुदा की कृपा से मुसलमान हैं। मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे इमाम और पेशवा हैं।

اندرین دین آمدہ از مادریم
ہم برین از دار دنیا بگذریم

अनुवाद :- हम मां के पेट से इसी धर्म में पैदा हुए और इसी धर्म पर दुनिया से गुज़र जाएंगे।

بادۂ عرفان ما از جام اوست
آن کتاب حق کہ قرآن نام اوست

अनुवाद :- ख़ुदा की वह किताब जिसका नाम क़ुर्आन है हमारी मारिफ़त की शराब उसी जाम से है।

آں رسولے کش محمد ہست نام
دامن پاکش بدست ما مدام

अनुवाद :- वह रसूल जिसका नाम मुहम्मद है उसका पवित्र दामन हर समय हमारे साथ में है।

مہر او باشیر شد اندر بدن
جان شد وباجان بدر خواہد شدن

अनुवाद :- उस का प्रेम मां के दूध के साथ हमारे शरीर में दाख़िल हुआ वह जान बन गया और जान के साथ ही बाहर निकलेगा।

ہست او خیر الرسل خیر الانام
ہر نبوت را بروشد اختتام

अनुवाद :- वही ख़ैरुर्रसुल और ख़ैरुल अनाम है और हर प्रकार की नुबुव्वत उस पर पूर्ण हो गई।

ما ازو نوشیم ہر آبے کہ ہست
زو شدہ سیراب سیرابے کہ ہست

अनुवाद :- जो भी पानी है हम उसी से लेकर पाते हैं जो भी तृप्त है वह उसी से तृप्त हुआ है।

آنچہ مارا وحی و ایمائے بود
آن نہ از خود از ہمان جائے بود

अनुवाद :- जो वह्यी और इल्हाम हम पर उतरता है वह हमारी ओर से नहीं वहीं से आता है।

ما ازو یابیم ہر نور و کمال
وصل دلدار ازل بے او محال

अनुवाद :- हम हर प्रकाश और हर ख़ूबी उसी से प्राप्त करते हैं अनादि प्रियतम का मिलन उसके बिना असंभव है।

اقتدائے قول او در جان ماست
ہر چہ زد ثابت شود ایمان ماست

अनुवाद :- उसके हर आदेश का अनुकरण हमारी प्रकृति में है उसका जो भी आदेश है उस पर हमारा पूर्ण ईमान है।

از ملائک و از خبرہائے معاد
ہر چہ گفت آن مرسل ربّ العباد

अनुवाद : फ़रिश्तों के बारे में तथा आख़िरत की हालतों के संबंध में जो कुछ उस बन्दों के रब्ब ने फ़रमाया

آں ہمہ از حضرت احدیت است
منکر آن مستحق است

अनुवाद :- वह सब एक ख़ुदा की ओर से है और इसका इन्कारी लानत का अधिकारी है।

معجزات او همه حق اند و راست
منکر آن مورد لعن خداست

अनुवाद :- उसके चमत्कार सब सच्चे और सही हैं उनका इन्कारी ख़ुदा की लानत के उतरने का स्थान है।

معجزات انبیاءِ سابقین
آنچه در قرآن بیانش بالیقین

अनुवाद :- पहले सब नबियों के चमत्कार जिन का वर्णन स्पष्ट और साफ़ तौर पर क़ुर्आन में है।

بر همه از جان و دل ایمان ماست
هر که انکارے کند از اشقیاست

अनुवाद :- उन सब पर दिल और जान से हमारा ईमान है जो इन्कार करता है वह आभागों में से है।

یک قدم دوری ازان روشن کتاب
نزد ما کفر است و خسران و تباب

अनुवाद :- उस नूरानी किताब से एक क़दम भी दूर रहना हमारे नज़दीक क़ुफ्र, क्षति और तबाही है।

لیک دونان را بمغزش راه نیست
هر دلے از سر آن آگاه نیست

अनुवाद :- परन्तु नीचे लोगों को क़ुर्आन की वास्तविकता की ख़बर नहीं हर एक दिल उसके रहस्यों से परिचित नहीं है।

تا نه باشد طالبے پاک اندرون
تا نه جوشد عشق یار بیچگون

अनुवाद :- जब तक सत्याभिलाषी आन्तरिक तौर पर पवित्र नहीं होता और जब तक उस अद्वितीय यार का प्रेम उसके हृदय में जोश नहीं मारता।

راز قرآن را کجا فهمد کسے
بهر نورے نور می باید بسے

अनुवाद :- तब तक कोई क़ुर्आनी रहस्यों को क्योंकर समझ सकता है। प्रकाश को समझने के लिए बहुत सा आन्तरिक प्रकाश होना चाहिए।

این نہ من قرآن ہمین فرمودہ ست
اندرو شرط تطہّر بودہ است

अनुवाद : यह मेरी बात नहीं अपितु क़ुर्आन ने भी यह फ़रमाया है कि क़ुर्आन को समझने के लिए पवित्र होना शर्त है।

گر بقرآن ہر کسے را راہ بود
پس چرا شرط تطہّر را فزود

अनुवाद :- यदि हर व्यक्ति क़ुर्आन को (स्वयं ही) समझ सकता तो ख़ुदा ने पवित्रता की शर्त क्यों अतिरिक्त लगाई?

نور را داند کسے کو نور شد
واز حجاب سرکشی ہا دور شد

अनुवाद :- प्रकाश को वही व्यक्ति समझता है जो स्वयं प्रकाश हो गया हो और उदण्डता के पर्दों से दूर हो गया हो।

این ہمہ کوران کہ تکفیرم کنند
بے گمان از نور قرآن غافل اند

अनुवाद :- ये सब अंधे जो मेरी तक्फ़ीर कर रहे हैं। निस्सन्देह क़ुर्आन के प्रकाश से अनभिज्ञ हैं।

بے خبر از رازہائے این کلام
ہرزہ گویان ناقصان و ناتمام

अनुवाद : और उस कलाम के रहस्यों से अपरिचित हैं, बकवास करने वाले अपूर्ण और कच्चे हैं।

در کف شان استخوانے بیش نیست
در سر شان عقل دور اندیش نیست

अनुवाद :- उनके हाथ में हड्डी से बढ़कर कुछ नहीं और उनके सर में दूरदर्शिता वाली बुद्धि नहीं है।

مردہ اند و فہم شان مردار ہم
بے نصیب از عشق و از دلدار ہم

अनुवाद :- वे स्वयं मुर्दा हैं और उनकी समझ भी मुर्दार है वे प्रेम और प्रियतम दोनों से वंचित हैं।

الغرض فرقان مدار دین ماست
او انیس خاطر غمگین ماست

अनुवाद :- अतः क़ुर्आन हमारे धर्म की बुनियाद है वह हमारे दुखी हृदय को सांत्वना देने वाला है।

نُورِ فرقان می کشد سوئے خدا
می توان دیدن ازو روئے خدا

अनुवाद :- क़ुर्आन का प्रकाश ख़ुदा की ओर खींचता है उस से ख़ुदा का चेहरा देख सकते हैं।

ما چہ سان بندیم زان دلبر نظر
ہمچو روئے او کجا روئے دِگر

अनुवाद :- हम उस आकाश से अपनी आंखें क्योंकर बन्द कर सकते हैं उसके चेहरे जैसा सुन्दर और चेहरा कहां है ?

روئے من از نُورِ روئے او بتافت
یافت از فیضش دل من ہر چہ یافت

अनुवाद :- मेरा मुंह उसके प्रकाश के कारण चमक उठा। मेरे हृदय ने जो कुछ भी पाया उसी के फ़ैज़ (दानशीलता) से पाया।

چون دو چشمم کس نداند آن جمال
جان من قربان آن شمس الکمال

अनुवाद :- मेरी आंखे उसके सौन्दर्य को जितना जानती हैं कोई नहीं जानता, मेरी जान ख़ूबियों के इस सूर्य पर क़ुर्बान है।

ہم چنین عشقم بروئے مصطفی
دل پَرد چُون مرغ سوئے مصطفی

अनुवाद :- ऐसा ही प्रेम मुझे मुस्तफ़ा के अस्तित्व से है। मेरा हृदय एक पक्षी के समान मुस्तफ़ा की ओर उड़ कर जाता है।

تامرا دادند از حسنش خبر
شد دلم از عشق او زیر و زبر

अनुवाद :- जब से मुझे उसके सौन्दर्य की ख़बर दी गई है मेरा हृदय उसके प्रेम में बेचैन रहता है।

منکہ می بینم رخ آن دلبرے
جان فشانم گر دهد دل دیگرے

अनुवाद :- मैं उस प्रियतम का चेहरा देख रहा हूं यदि कोई उसे दिल दे तो मैं उसके मुकाबले पर जान न्योछावर कर दूं।

ساقی من هست آن جان پرورے
هر زمان مستم کند از ساغرے

अनुवाद :- वही रूह पोषक व्यक्ति तो मेरा पिलाने वाला है जो हमेशा शराब के जाम से मुझे मस्त रखता है।

محو روئے او شد ست ایں روئے من
بوئے او آید زِ بام و کوئے من

अनुवाद :- यह मेरा चेहरा उसके चेहरे में लीन और गुम हो गया है और मेरे मकान तथा कूचे से उसी की सुगंध आ रही है।

بس کہ من در عشق او هستم نهان
من همانم من همانم من همان

अनुवाद :- मैं यथाशक्ति उसके प्रेम में गुम हूं। मैं वहीं हूं, मैं वहीं हूं, मैं वहीं हूं।

جان من از جان او یابد غذا
از گریبانم عیان شد آن ذکا

अनुवाद :- मेरी रूह उसकी रूह से भोजन प्राप्त करती है और मेरे गरेबान से वही सूर्य निकल आया है।

احمد اندر جان احمد شد پدید
اسم من گردید آن اسم وحید

अनुवाद :- अहमद की जान के अन्दर अहमद प्रकट हो गया इसीलिए मेरा वही नाम हो गया जो उस अद्वितीय इन्सान का नाम है।

فارغ افتادم بدو از عزّ و جاه
دل زِ کف و از فرق افتاده کلاه

अनुवाद :- उसके प्रेम में मैं सम्मान और प्रतिष्ठा से निस्पृह हो गया दिल हाथ से जाता रहा और सर से टोपी गिर पड़ी।

برمن این بهتان که من زان آستان
تافتم سر این چه کذبِ فاسقان

अनुवाद :- मुझ पर यह इफ़्तिरा कि मैं उस आश्रम से विमुख हूं, पापी लोगों का यह कितना बड़ा झूठ है।

سر بتابد زان مہ من چون منے
حق بر گمان دُشمنے

अनुवाद :- क्या मुझ जैसा व्यक्ति अपने चन्द्रमा से मुंह फेर सकता है ? दुश्मन के इस विचार पर ख़ुदा की लानत हो।

آن منم کاندر رہِ آن سرورے
درمیانِ خاک وخون بینی سرے

अनुवाद :- मैं तो वह हूं कि उस सरदार के मार्ग में तो मेरा सर ख़ाक और ख़ून में लिथड़ा हुआ देखेगा।

تیغ گر بارد بکوئے آن نگار
آن منم کاوّل کند جان را نثار

अनुवाद :- यदि प्रियतम की गली में तलवार चले तो मैं वह पहला व्यक्ति हूंगा जो अपनी जान क़ुर्बान करेगा।

گر همین کفر است نزدِ کین ورے
خوش نصیبے آنکه چون من کافرے

अनुवाद :- यदि शत्रु के नज़दीक यही कुफ्र है तो वह बड़ा सौभाग्यशाली है जो मेरी तरह का क़ाफ़िर है।

کافرم گفتند و دجال و لعین
من ندانم ایں چہ ایمان ست و دین

अनुवाद :- उन लोगों ने मुझे क़ाफ़िर और लानती कहा। मैं नहीं जानता कि यह कौन सा धर्म और ईमान है।

ایں طبیعت ہائے شان چون سنگ ہاست
در برِ شان گر دلے بودے کجاست

अनुवाद :- उनकी यह तबीयतें पत्थर के समान कठोर हैं उनके पहलू में यदि दिल है तो दिखाओ वह कहां है ?

کار اینان ہر زمانے افتر است
یار اینان ہر دمے حرص و ہوا ست

अनुवाद :- उन लोगों का काम हर समय इफ़्तिरा करना है और लोभ एवं इच्छा हर पल उनकी साथी है।

دل پُر از خبث است و باطن پُر زِشر
صحتِ نیّت از ایشاں دور تر

अनुवाद :- उनके दिल कुटिलताओं से भरे हुए हैं और उनके अन्तः करण बुराइयों से। नेक नीयत उनसे बहुत दूर है।

صحت نیت چو باشد در دلے
بر گلِ صدق او فتد چون بُلبلے

अनुवाद :- जब हृदय में नेक नीयत होती है तो वह सच्चाई के फूल पर बुलबुल की तरह गिरता है।

بر شرارتہا نمی بندد میان
ترسد از دانائے اسرار نہان

अनुवाद :- और शरारतों पर कटिबद्ध नहीं होता वह गुप्त भेदों के जानने वाले से डरता है।

لیکن ایں بے باکی و ترک حیا
افترا بر افترا بر افترا

अनुवाद : परन्तु यह गुस्ताख़ी और निर्लज्जता और इफ़्तिरा पर इफ़्तिरा।

ایں نہ کارِ مومنان و اتقیاست
این نہ خوئے بندگانِ باصفاست

अनुवाद :- यह ईमानदारों और संयमियों का काम नहीं है और न पवित्र हृदय रखने वाले बुज़ुर्गों की आदत है।

هر کہ او هر دم پرستارِ هوا
من چسان دانم کہ ترسد از خدا

अनुवाद :- वह जो हर समय अपनी इच्छाओं का दास है मैं कैसे जान लूं कि वह ख़ुदा से डरता है।

خویشتن را نیک اندیشیدہ اند
هائے این مردم چہ بد فهمیدہ اند

अनुवाद :- उन्होंने स्वयं को नेक समझ रखा है। अफ़सोस कि उन लोगों ने कैसे समझा है।

اتباع نفس اعراض از خدا
بس همین باشد نشان اشقیا

अनुवाद :- नफ़्स का अनुकरण और ख़ुदा से विमुखता बस यही अभागों की निशानी है।

هر کہ زیں سان خبث در جانش بود
کافرم گر بوئے ایمانش بود

अनुवाद :- जिसके हृदय में इस प्रकार का गन्दगी है यदि उसमें ईमान की गंध भी हो तो फिर मैं काफ़िर हूं।

منّت برین مردم بخواندم آن کتاب
کان منزه او فتاد از ارتیاب

अनुवादः- मैंने इन लोगों के समाने वह किताब पढ़ी जो सन्देह और शंका से पवित्र है (अर्थात् क़ुर्आन)।

ہم خبرہا پیش کردم زاں رسول
کو صدوق از فضل حق پاک از فضول

अनुवाद :-और उस रसूल की हदीसें भी प्रस्तुत कीं जो ख़ुदा की कृपा से ईमानदार है और व्यर्थ बोलने से पवित्र है।

لیکن اینان را بحق روئے نبود
پیش گرگے گریۂ میشے چہ سُود

अनुवाद :- परन्तु उनका इरादा ही सच स्वीकार करने का न था । भेड़िए के आगे भेड़ का रोना बेकार है।

کافرم گفتند و روہا تافتند
آں یقین گویا دلم بشگافتند

अनुवाद :- उन्होंने मुझे क़ाफ़िर कहा और मुख फेर लिया और विश्वास कर लिया कि जैसे उन्होंने मेरा दिल चीर का देख लिया है।

اندریناں خوب گفت آں شاہ دیں
کافراں دل بروں چوں مومنیں

अनुवाद :- इन्हीं के बारे में उस धर्म के बादशाह ने क्या ख़ूब फ़रमाया है कि ये लोग दिल के काफ़िर हैं और बाहर से मोमिन।

ہر زماں قرآں مگر در سینہ ہا
حُبّ دُنیا ہست و کبر و کینہ ہا

अनुवाद :- उनकी जीभ पर क़ुर्आन है परन्तु उनके सीनों में संसार का प्रेम अहंकार और शत्रुताएं हैं।

دانش دیں نیز لاف است و گذاف
پشت بنمودند وقت ہر مصاف

अनुवाद :- धर्म की समझ का दावा भी केवल डींगें हैं क्योंकि प्रत्येक युद्ध के समय इन्होंने पीठ दिखाई है।

جاھلانے غافل از تازی زبان
ھم ز قرآن ھم ز اسرار نہان

अनुवाद :- ये वे मूर्ख हैं जो अरबी भाषा से अपरिचित हैं और क़ुर्आन तथा उसके बारीक रहस्यों से भी।

کبرِ شان چون تا کمال خود رسید
غیرتِ حق پردہ ھائے شان درید

अनुवाद :- जब उनका अहंकार अपनी चरम सीमा को पहुंच गया तो ख़ुदा के स्वाभिमान ने उनके पर्दे फाड़ दिए।

دشمنان دین چون شمرِ نابکار
دین چو زین العابدین بیمار و زار

अनुवाद :- नीच शमर की तरह ये लोग धर्म के शत्रु हैं और ज़ैनुल आबिदीन के धर्म की तरह बीमार और कमज़ोर है।

تن ھمی لرزد دل و جان نیز ھم
چون خیانتھائے ایشان بنگرم

अनुवाद :- मेरा शरीर कांप जाता है और जान - व - दिल लर्ज़ जाते हैं जब मैं उनकी बेईमानियां देखता हूं।

مکرھا بسیار کردند و کنند
تا نظام کار ما برھم زنند

अनुवाद :- उन्होंने बहुत छल किए और अब भी कर रहे हैं ताकि हमारे कार्य की व्यवस्था को अस्त-व्यस्त कर दें।

لیکن آن امرے کہ ھست از آسمان
چون زوال آید برد از حاسدان

अनुवाद :- परन्तु वह बात जो आकाश की ओर से है उस पर ईर्ष्यालुओं की ईर्ष्या से पतन कैसे आ सकता है।

من چہ چیزم جنگ شان با آن خدا است
کز دو دستش این ریاض و این بنا است

अनुवाद :- मैं क्या चीज़ हूं उनकी लड़ाई तो उस ख़ुदा के साथ है जिसके दोनों हाथों से ये बाग़ और यह महल तैयार हुआ है।

هر کہ آویزد بکار و بار حق
او ستادہ از پئے پیکار حق

अनुवाद :- जो व्यक्ति खुदाई कारोबार में हस्तक्षेप करता है वह वास्तव में ख़ुदा से युद्ध करने खड़ा होता है।

فانی ایم و تیرِ ما تیرِ حق است
صیدِ ما در اصل نخچیر حق است

अनुवाद :- हम तो नश्वर लोग हैं और हमारा तीर ख़ुदा का तीर है और हमारा शिकार वास्तव में ख़ुदा का शिकार है।

صادقے دارد پناہ آن یگان
دست حق در آستینِ او نہان

अनुवाद :- सच्चा तो उस अनुपम की शरण में होता है और ख़ुदा का हाथ उसकी आस्तीन में छुपा होता है।

ہر کہ با دست خدا پیچد زِ کین
بیخ خود کندد چو شیطان لعین

अनुवाद :- जो व्यक्ति शत्रुता के कारण ख़ुदा के साथ लड़ता है वही धिक्कृत शैतान की तरह अपनी ही जड़ उखाड़ता है।

اے بسا نفسے کہ ھمچو بلعم است
کار او از دست موسیٰ برھم است

अनुवाद :- बहुत से लोग बल्अम की तरह हैं जिन का काम झूठ के हाथों ध्वस्त हो जाता है।

آمدم بر وقت چون ابر بہار
با من آمد صد نشان لُطفِ یار

अनुवाद :- मैं बहार के बादल की तरह समय पर आया हूं और मेरे साथ ख़ुदा की मेहरबानियों के सैकड़ों निशान हैं।

آسمان از بہر من بارد نشان
ہم زمین الوقت گوید ہر زمان

अनुवाद :- आकाश मेरे लिए निशान बरसाता है और ज़मीन भी हर पल यही करती है कि समय यही है।

این دو شاھد بہرِمن استادہ اند
باز در من ناقصان افتادہ اند

अनुवाद :- मेरी सहायता में यह दो गवाह खड़े हैं फिर भी यह निडर होकर मेरे पीछे पड़े हुए हैं।

ھائے این مردم عجب کور و کر اند
صد نشان بینند غافل بگذرند

अनुवाद :- हाय अफ़सोस, ये लोग विचित्र प्रकार के अंधे और बहरे हैं सैकड़ों निशान देखते हैं फिर भी लापरवाह गुज़र जाते हैं।

این چنین اینان چرا بالا پرند
یا مگر زان ذات بے چون منکر اند

अनुवाद :- ये इतने ऊंचे क्यों उड़ते हैं (अर्थात् इतने घमंडी क्यों हैं) शायद उस अद्वित्तीय अस्तित्व के इन्कारी हैं।

او چو بر کس مہربانی می کند
از زمینی آسمانی می کند

अनुवाद :- वह ख़ुदा तो जब किसी पर मेहरबानी करता है तो उसे पार्थिव से आकाशीय बना देता है।

عزتش بخشد می ز فضل و لطف و جود
مہر و مہ را پیشش آرد در سجود

अनुवाद :- अपनी कृपा और अनुकंपा से उसे सम्मान प्रदान करती है, सूर्य और चन्द्रमा को उसके सामने सज्दे में गिराता है।

من نہ از خود ادعائے کردہ ام
امر حق شد اقتدائے کردہ ام

अनुवाद :- मैंने अपने पास से यह दावा नहीं किया अपितु ख़ुदा के आदेश का अनुकरण किया है।

کارِ حق است ایں نہ از مکرِ بشر
دشمنِ این دشمن آں دادگر

अनुवाद :- यह ख़ुदा का काम है न कि मनुष्य का कि उसका शत्रु उस न्यायवान ख़ुदा का शत्रु है।

آں خدا کایں عاجزے راچیدہ ست
رحمتش در کوئے ما باریدہ است

अनुवाद :- वह ख़ुदा जिसने इस ख़ाकसार को चुना है। उसकी रहमत हमारी गली में बरसती है।

مردم وجانان پس ازمردن رسید
گم شدم آخر رُخے آمد پدید

अनुवाद :- जब मैं मर गया तो मरने के बाद मेरा प्रियतम आ गया । जब मैं फ़ना हो गया तो उसका चेहरा मुझ पर प्रकट हो गया।

میل عشق دلبرے پُرزور بود
غالب آمد رختِ ما را در ربود

अनुवाद :- यार के प्रेम की लहर ज़ोरों पर थी वह विजयी हो गई। और हमारा सब सामान बहा कर ले गई।

من نہ دارم مایۂ کردارھا
عشق جوشید و ازو شد کارھا

अनुवाद :- मेरे पास कर्मों का भण्डार नहीं अपितु प्रेम जोश में आया और उस से ये सब कार्य हो गए।

بھر من شد نیستی طور خدا
چون خودی رفت آمد آن نورِ خدا

अनुवाद :- मेरे लिए नेस्ती ही ख़ुदा का तूर बन गई। जब ख़ुदी (अहंकार) जाती रही तो ख़ुदा का प्रकाश आ गया।

روبدو کردم کہ روآن روئے اوست
ہر دل فرخندہ مائل سوئے اوست

अनुवाद :- मैंने उसी की ओर अपना मुख फेर लिया क्योंकि देखने योग्य वही चेहरा है और हर मुबारक दिल उसी की ओर झुका हुआ है।

دردو عالم مثل او روئے کجاست
جز سر کوئش دگر کوئے کجاست

अनुवाद :- दोनों लोकों में उसकी तरह का कोई चेहरा कहां है? और उसके कूचे के अतिरिक्त अन्य कोई कूचा कहां है?

آن کسان کز کوچۂ او غافل اند
از سگان کوچہ ھا ھم کمتر اند

अनुवाद :- वे लोग जो उस के कूचे से बेपरवाह हैं वे गलियों के कुत्तों से अधिक अपमानित हैं।

خلق و عالم جملہ در شور و شر اند
عاشقانش در جھان دیگر اند

अनुवाद : सृष्टि और संसार सब शोर और बुराई में ग्रस्त हैं परन्तु उस के प्रेमी और ही संसार में हैं।

آن جھان چون ماند بر کس ناپدید
از جھان آن کور و بدبختی چہ دید

अनुवाद :- वह संसार जिस व्यक्ति से छुपा रहा उस अभागे ने संसार में आकर देखा ही क्या?

راہِ حق بر صادقان آسان تر است
ہر کہ جوید دامنش آید بدست

अनुवाद :- सच्चों पर ख़ुदा का मर्म पाना आसान है जो ख़ुदा को ढूंढता है तो ख़ुदा का दामन उस के हाथ में आ जाता है।

ہر کہ جوید وصلش از صدق و صفا
رہ دھندش سوئے آن ربّ السّما

अनुवाद :- जो भी सच्चाई और शुद्धता के साथ उस का मिलन चाहता है उस के लिए आकाशों से ख़ुदा ख़ुद मिलन का मार्ग खोल देते हैं।

صادقان را می شناسد چشم یار
کید و مکر اینجا نمی آید بکار

अनुवाद :- यार की दृष्टि सच्चों को पहचान लेती है। छल और चालाकी यहां काम नहीं आती।

صدق می باید برائے وصل دوست
ہر کہ بے صدقش بجوید حمق اوست

अनुवाद :- दोस्त के मिलने के लिए सच की आवश्यकता होती है। जो बिना सच के उसे ढूंढे वह मूर्ख है।

صدق ورزی در جناب کبریا
آخرش می یابد از یمن وفا

अनुवाद :- ख़ुदा के सामने सच को ग्रहण करने वाला अन्ततः उसे अपनी वफ़ा की बरकत से पा लेता है।

صد درِ مسدود بکشاید بصدق
یار رفتہ باز مے آید بصدق

अनुवाद :- सैकड़ों बन्द दरवाज़े सच के कारण खुल जाते हैं। ख़ुदा सच के कारण वापस आ जाता है।

صدق در زان را ھمین باشد نشان
کز پئے جاناں بکف دارند جان

अनुवाद :- सच्चों की यही निशानी है कि प्रियतम के लिए उन की जान हथेली पर होती है।

دوختہ در صورت دلبر نظر
و از ثناء و سَبِّ مردم بے خبر

अनुवाद :- यार के रूप पर उस की टकटकी लगी होती है और लोगों की प्रशंसा तथा निन्दा से अपरिचित होते हैं।

کارِ عقبیٰ با عمل ھا بستہ اند
رستہ آن دلھا کہ بھرش خستہ اند

अनुवाद :- उन के समस्त कर्म आख़िरत के लिए होते हैं। वे दिन मुक्ति प्राप्त हैं जो ख़ुदा के लिए ज़ख़्मी और टूटे हुए हैं।

از سخن ھا کے شود این کاروبار
صدق مے باید کہ تا آید نگار

अनुवाद :- बातें बनाने से काम नहीं चलता। सफलता के लिए वफ़ादारी चाहिए।

علم را عالم بتے دارد براہ
بت پرستی ھا کند شام و پگاہ

अनुवाद :- विद्वानों (आलिमों) ने अपने ज्ञान को एक मूर्ति बनाया हुआ है और वे सुब्ह-शाम मूर्ति पूजा में व्यस्त हैं।

گر بعلم خشک کار دین بُدے
ھر لئیمے راز دار دین بُدے

अनुवाद :- यदि ख़ुश्क ज्ञान पर ही धर्म का ज्ञान होता तो प्रत्येक अयोग्य मनुष्य धर्म का महरम-ए-राज़ होता।

یار ما دارد بباطن ھا نظر
ھان مشو نازان تو با فخرِ دِگر

अनुवाद :- हमारा यार अन्तः करण पर दृष्टि रखता है तू अपनी किसी अन्य खूबी पर गर्व न कर।

ھست آن عالی جنابے بس بلند
بھر وصلش شورھا باید فگند

अनुवाद :- वह दरबार बहुत ऊंचा महा प्रतिष्ठा वाला है उस से मिलने के लिए बहुत गिड़गिड़ाना चाहिए।

زندگی درمردن عجز و بکاست
ھر کہ اُفتاد ست او آخر بخاست

अनुवाद :- जीवन- मरने, विनम्रता और रोने-गिड़गिड़ाने में है जो गिर पड़ा अन्नतः (जीवित होकर) उठेगा।

تانہ کار درد کس تاجان رسد
کے فغانش تا درجانان رسد

अनुवाद :- जब तक दर्द का मामला जान लेने तक न पहुंचे, तब तक उस की फरियाद और आह प्यार के दरवाज़ा तक नहीं पहुंच सकती।

ہر کہ ترک خود کند یابد خدا
چیست وصل از نفس خود گشتن جدا

अनुवाद :- जो अंहकार का त्याग करता है वह ख़ुदा को पा लेता है मिलन क्या चीज़ है अपने नफ़्स से पृथक हो जाना।

لیک ترک نفس کے آسان بود
مردن و از خود شدن یکسان بود

अनुवाद :- परन्तु नफ्सों को मारना आसान कार्य नहीं। मरना और ख़ुदा को छोड़ना बराबर काम है।

تانہ آن بادے وزد بر جان ما
کو ربا ید ذرّۂ امکانِ ما

अनुवाद :- जब तक हमारी जान पर वह हवा न चले जो हमारी हस्ती के कण तक को उड़ा कर ले जाए।

کے درین گرد و غبارے ساختہ
مے توان دید آن رخ آراستہ

अनुवाद :- तब तक उस कृत्रिम धूल मिट्टी में वह चेहरा किस प्रकार देखा जा सकता है।

تانہ قربان خدائے خود شویم
تانہ محو آشنائے خود شویم

अनुवाद :- जब तक हम अपने ख़ुदा पर कुर्बान न हो जाएं और जब तक अपने दोस्त के अन्दर लीन न हो जाएं।

تانہ باشیم از وجود خود برون
تانہ گردد پُر زِ مہرش اندرون

अनुवाद :- जब तक हम अपने अस्तित्व से पृथक न हो जाएं और जब तक सीना उस के प्रेम से भर न जाए।

تانہ برما مرگ آید صد ھزار
کے حیاتے تازہ بینیم از نگار

अनुवाद :- जब तक हम पर लाखों मौतें न आ जाएं तब तक हमें उस प्रियतम की ओर से नया जीवन कब मिल सकता है?

تانہ ریزد ھر پر و بالے کہ ھست
مرغ این رہ را پریدن مشکل است

अनुवाद :- जब तक अपने बाल व पर न झाड़ डाले तब तक उस मार्ग के पक्षी के लिए उड़ना कठिन है।

بدنصیبے آنکہ وقتش شد بباد
یار آزردہ دل اغیار شاد

अनुवाद :- दुर्भाग्यशाली है वह व्यक्ति जिस का समय बर्बाद हो गया, यार नाराज़ हो गया और दुश्मनों का दिल प्रसन्न हुआ।

از خردمندان مرا انکار نیست
لیکن این رہ راہ وصلِ یار نیست

अनुवाद :- मुझे बुद्धिमानों की बुद्धिमत्ता से इन्कार नहीं है परन्तु यह यार के मिलन का मार्ग नहीं है।

تانہ باشد عشق و سوداء و جنون
جلوہ نہ نماید نگار بے چگون

अनुवाद :- जब तक प्रेम, पागलपन, उन्माद न हो तब तक वह अद्धित्तीय प्रियतम अपना जलवा नहीं दिखाता।

چون نہان است آن عزیزے محترم
ھر کسے را ھے گزیند لاجرم

अनुवाद :- चूंकि वह सम्माननीय प्रियतम गुप्त है तो हर व्यक्ति कोई न कोई मार्ग (उस से मिलन के लिए) ग्रहण करता है।

آن رھے کو عاقلان بگزیدہ اند
از تکلف روئے حق پوشیدہ اند

अनुवाद :- पर बुद्धिमानों ने जो मार्ग ग्रहण किया है तो उन्होंने तकल्लुफ के साथ ख़ुदा के चेहरे को और भी छुपा दिया है।

پردہ ھا بر پردہ ھا افراختہ
مطلبے نزدیک دور انداختہ

अनुवाद :- पहले पर्दे पर और पर्दा डाल दिया उद्देश्य निकट था परन्तु उसे और दूर कर दिया।

ما کہ با دیدار او رو تافتیم
از رہ عشق و فنایش یافتیم

अनुवाद :- हम लोग जिन्होंने उस के दर्शन से अपना चेहरा प्रकाशमान किया है, हम ने तो उस इश्क और फ़ना के मार्ग से पाया है।

ترکِ خود کردیم بھرِ آن خدا
از فنائے ما پدید آمد بقا

अनुवाद :- उस ख़ुदा के लिए जब हम ने अपनी ख़ुशी त्याग दी तो हमारी फ़ना के परिणाम स्वरूप अनश्वरता प्रकट हो गई।

اندرین رہ دردِ سر بسیار نیست
جان بخواھد دادنش دشوار نیست

अनुवाद :- इस मार्ग में अधिक कष्ट नहीं उठाना पड़ता। यह केवल जान मांगता है और इस का देना कठिन नहीं।

گر نہ او خواندے مرا از فضل و جود
صد فضولی کردمے بیسود بود

अनुवाद :- यदि वह स्वयं अपनी कृपा और दया से मुझे न बुलाता तो चाहे मैं कितने ही प्रयास करता सब बे फायदा थे।

ازنگاهے این گدارا شاہ کرد
قصہ هائے راہِ ما کوتاہ کرد

अनुवाद :- उस ने एक नज़र से इस फकीर को बादशाह बना दिया और लम्बे मार्ग को छोटा कर दिया।

راہِ خود برمن کشود آن دلستان
دانمش زانسان کہ گل را باغبان

अनुवाद :- उस प्रियतम ने स्वयं मेरे लिए अपना मार्ग खोला। मैं यह बात इस प्रकार जानता हूं जैसे माली फूल को।

ھر کہ در عہدم زِمن ماند جدا
می کُند بر نفسِ خود جور و جفا

अनुवाद :- जो मेरे युग में मुझे से अलग रहता है तो वह स्वयं अपनी जान पर अत्याचार करता है।

پُر زِنُور دلستان شد سینہ ام
شد ز دستے صیقلِ آئینہ ام

अनुवाद :- प्रियतम के प्रकाश से मेरा सीना भर गया। मेरे दर्पण को उसी के हाथ ने चाक किया।

پیکرم شد پیکرِ یارِ ازل
کارِ مَن شُد کارِ دِلدارِ ازل

अनुवाद :- मेरा अस्तित्व उस अनादि यार का अस्तित्व बन गया। और मेरा काम उस अनादि दोस्त का कार्य बन गया।

بسکہ جانم شد نہان در یارِ من
بوئے یار آمد ازین گلزارِ من

अनुवाद :- चूंकि मेरी जान मेरे यार के अन्दर छुप गई इसलिए यार की सुगन्ध मेरे उद्यान से आने लगी।

نور حق داریم زیرِ چادرے
از گریبانم بر آمد دلبرے

अनुवाद :- हमारी चादर के अन्दर ख़ुदा का प्रकाश है वह यार मेरे बाग़ में से निकला।

احمدِ آخر زمان نامِ من است
آخرین جامے همین جامِ مَن است

अनुवाद :- अहमद अन्तिम युग का अहमद मेरा नाम है और मेरे लिए जाम ही (दुनिया के लिए) अन्तिम जाम है।

طالب راهِ خدا را مژده باد
کش خدا بنمود این وقتِ مُراد

अनुवाद :- ख़ुदा के मार्ग के अभिलाषी को ख़ुशख़बरी हो कि उसे ख़ुदा ने सफलता का युग दिखाया।

هر که را یارے نهان شد از نظر
از خبر دارے همین پُرسد خبر

अनुवाद :- जिस किसी का दोस्त उस की नज़र से ग़ायब हो जाता है। तो वह जानकार से उस की ख़बर पूछता है।

هر که جویانِ نگارے می بود
کے بیک جایش قرارے می بود

अनुवाद :- और जो किसी प्रियतम का अभिलाषी होता है उसे एक ही जगह पर कब चैन आता है।

مے دود هر سو همے دیوانه وار
تا مگر آید نظر آن روئے یار

अनुवाद :- वह हर ओर पाग़लों की तरह दौड़ता है ताकि शायद यार का चेहरा कहीं दिखाई दे जाए।

هر که عشق دلبرے در جان اوست
دل زِ دستش او فتد از هجرِ دوست

अनुवाद :-जिस की जान में प्रियतम का इश्क समा गया है तो दोस्त के वियोग में उस का दिल निकल निकल जाता है।

عاشقان را صبر و آرامے کجا
توبہ از روئے دل آرامے کجا

अनुवाद :- आशिकों के लिए सब्र और आराम कहां और प्रियतम के चेहरे से विमुखता कहां ?

هر کہ را عشقِ رخِ یارے بود
روز و شب با آن رخش کارے بود

अनुवाद :- जैसे दोस्त के मुंह से प्रेम होता है उसे तो दिन रात उस के चेहरे का ही ख़याल रहता है।

فرقتش گر اتفاقے اوفتد
در تن و جانش فراقے اوفتد

अनुवाद :- यदि संयोग से उस से वियोग हो जाए। तो उस के प्राण और शरीर में वियोग हो जाता है।

یک زمانے زندگی بے روئے یار
مے کند بر وے پریشان روزگار

अनुवाद :- यार के बिना उस के जीवन का एक पल भी उस पर जीवन को तंग कर देता है।

باز چون بیند جمال و روئے او
مے دود چوں بے حواسے سوئے او

अनुवाद :- फिर जब वह उस का सौन्दर्य और उस का चेहरा देखता है तो बेहिसों की तरह उस की ओर दौड़ता है।

مے زند در دامنش دست از جنون
کز فراقت شد دلم اے یار خون

अनुवाद :- और यह कह कर दीवानों की तरह उस के दामन को पकड़ लेता है कि हे दोस्त मेरा दिल तेरी जुदाई में ख़ून हो गया।

ایں چنیں صدق از بود اندر دلے
گل بجوید جائے چون بُلبُلے

अनुवाद :- यदि ऐसा सच किसी के हृदय में हो तो वह बुलबुल की तरह फूल को अपना ठिकाना बना लेता है।

گر تُو اُفتی بادو صد دردو نفیر
کس همی خیزد که گردد دستگیر

अनुवाद :- यदि तू दो सौ चीख़ों और आहों के साथ गिर पड़े तो अवश्य कोई सहायता के लिए खड़ा हो जाता है।

تافتن رو از خورِ تابان که من
خود بر آرم روشنی از خویشتن

अनुवाद :- (यह सोच कर) प्रकाशमान सूर्य से मुंह फेर लेना कि मैं अपने अन्दर से स्वयं ही प्रकाश पैदा कर लूंगा।

این همین آثار ناکامی بود
بیخ شقوت نخوت و خامی بود

अनुवाद :- यही तो असफलता के लक्षण हुआ करते हैं। दुर्भाग्य की जड़ अहंकार और अनुभवहीनता है।

عَالمے را کور کردست این خیال
سرنگون افگند در چاهِ ضلال

अनुवाद :- इस विचार ने एक संसार को अंधा कर रखा है और उसे गुमराही के कुएं में सर के बल डाल रखा है।

سوئے آبے تشنه را باید شتافت
هر که جست از صدقِ دل آخر بیافت

अनुवाद :- प्यासे को पानी की ओर दौड़ना चाहिए जिस ने सच्चे हृदय से खोज की उस ने अन्त में अभीष्ट को पा लिया।

آں خردمندے که جوید کوئے یار
آبرو ریزد زِ بهر روئے یار

अनुवाद :- वह आदमी बुद्धिमान है जो यार की गली को ढूंढता है और यार के चेहरे के लिए अपना सम्मान डुबोता है।

خاک گردد تا ھوا بر بایدش

گم شود تا کس رھے بنمایدش

अनुवाद :- वह धूल बन जाता है कि हवा उसे उड़ा ले और फ़ना हो जाता है ताकि कोई उसे मार्ग दिखाए।

بے عنایات خدا کار است خام

پختہ داند این سخن را والسلام

अनुवाद :- ख़ुदा की मेहरबानी के बिना कार्य अधूरा रहता है बुद्धिमान ही इस बात को जानता है।

این ھمہ کہ از خامہ این عاجز بیرون آمد از حال است نہ از قال و از جوشیدن است نہ از تکلفات کوشیدن اکنون آن بہ کہ تخفیف تصدیع کنم آنچہ در دلِ ماست خدا در دلِ شما الھام کند و دل را بدل راہ دھد از مکرمی اخویم مولوی حکیم نور الدین و صاحبزادہ محمد سراج الحق جمالی السلام علیکم مولوی صاحب بذکر خیر آن مکرم اکثر رطبُ اللّسان می مانند عجب کہ اوشان در اندک صحبتے دلی محبت و اخلاص بآن مکرم چند بار این خارق امر ازان مخدوم ذکر کردہ اند کہ مرا ایک درود شریف برائے خواندن ارشاد فرمودند کہ ازین زیارت حضرت نبوی صلی اللہ علیہ وسلم خواھد شد چنانچہ ھمان شب مشرف بہ زیارت شدم۔ والسلام۔ الراقم خاکسار غلام احمد از قادیان۔

अनुवाद:- यह सब जो इस विनीत ने अपने क़लम से लिखा यह वास्तविकता है केवल बातें नहीं और दिल से है न कि बनावटी तथा दिखावा। अब यह बेहतर है कि

मैं अपनी बातों का सारांश प्रस्तुत करूँ जो कुछ मेरे दिल में है। ख़ुदा आपको वह सब इल्हाम के द्वारा बताए और दिल को दिल से जोड़ दे अर्थात दिल को दिल से मिलाए। आदरणीय भाई मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब और मुहम्मद सिराजुल हक़ जमाली की ओर से अस्सलामु अलैकुम।

मौलवी साहिब आपकी प्रशंसा करते रहते हैं। आश्चर्य है कि वह बहुत कम मुलाकातों में ही आप से दिली मुहब्बत और निष्ठा होने के कारण कई बार इस विलक्षण बात का वर्णन कर चुके हैं कि एक बार मुझे दरूद शरीफ़ पढ़ने के लिए कहा कि इससे हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत (दर्शन) नसीब होगी अतः उसी रात मुझे ज़ियारत का सौभाग्य मिल गया।

वस्सलाम

लेखक

विनीत ग़ुलाम अहमद क़ादियान

ख्वाजा साहिब का तीसरा पत्र

بخدمت جناب معانی آگاہ معارف پناہ حقائق نگاہ شریعت انتباہ المستظہر باللّٰہ المعرض ممّا سواہ المؤیّد من اللّٰہ الصمد جناب مرزا غلام احمد صاحب مکارم لاتعدّ سَلَّمَہُ اللّٰہ الاَحد۔ السلام علیکم ورحمۃ اللّٰہ وبرکاتہ۔ جوش اشتیاق ہمچون مکارم اخلاق آن سلالہ انفس وآفاق ازحد بیرون ست ومحبت بآں مجاہد فی سبیل اللّٰہ روز افزوں۔ منت جوادبی ضنت کہ اوقات ایں فقیر را بعنایت بیغایت۔ برمجاری عافیت ظاہر وباطن جاری فرمود۔ و تائید آن مرضیۃ الشمائل محمودۃ الخصائل ازجناب عزت خطابش مسئول ومقصود۔ سلک لآلی آبدار محبت ووداد

وعقد جواھر تابدار صداقت و اتحاد اعنی نامہء اخلاص
ختامہ مملو بمواد خلوص و صفا و محشو بذخائر خلت و ا
صطفا و رود کرم آمود نمودہ مسرور نا محصور فرمود فقیر
از الفاظ اُلفت آمیز و معانی انبساط خیز و معارف حیرت
انگیز آن غواص بحار معالم ذخیرۂ احتظاظ قلب فراھم
نمود۔ و ورود مضمون جلسۃ المذاھب مرسلہ آنصاحب
کہ باوجود آذوقہ حقائق گرانبھا جدت ادارا مشتمل بود۔
دل از مستمعان در ربود۔ ھموارہ باین مجاھدات رفیع
الغایات بعنایات غیبیہ و تفضلات لاریبہ مؤید و مکرم باشند و
فقیر را مستخبر حالات مسرت سمات دانستہ بارسال فضائل
رسائل و ارقام کرائم رقائم مبتھج میفرمودہ باشند۔ ۱۴/ شوال
المکرم ۱۳۱۴ ھجریہ قدسیہ۔ الراقم فقیر غلام فرید الچشتی
النظامی۔ سجادہ نشین از چاچڑاں شریف

अनुवादः-

ख्वाजा साहिब का तीसरा पत्र

सेवा में जनाब ज्ञान से परिपूर्ण एवं विवेक के समुद्र, वास्तविक ज्ञान के दृष्टारः, शरीयत से परिचित **المستظھر باللہ المعرض ممّا سواہ المؤیّد من اللہ الصمد** जनाब मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब अनंत विशेषताओं और सत्वगुण के मालिक! अल्लाह आपको सलामत रखे।

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातुहू

आप से मेरी मुहब्बत का जोश बहुत अधिक है, और मेरी मुहब्बत आप, अल्लाह के मार्ग में जिहाद करने वाले, से दिन प्रति दिन बढ़ती जाती है। आपकी उदारता और प्रेम है कि इस फ़क़ीर के समय को आप ने अथाह उपकार के साथ

बाह्य एवं आंतरिक सलामती से परिपूर्ण कर दिया। आप जैसे उच्च शिष्टाचार एवं प्रशंसनीय विशेषताओं से युक्त (अस्तित्व) की सहायता के लिए अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ। खिले हुए मोतियों की सलक, मुहब्बत और प्यार से चमकते हुए जवाहरात, सच्चाई एवं प्रेमभाव का संग्रह आप का निष्ठा से भरा हुआ पत्र मिला जिस पर निष्ठा और प्रेम की मुहर लगी हुई थी और जो निष्ठा एवं प्रेम के ख़ज़ानों से भरा हुआ और दया एवं कृपा की नहर से सजाया हुआ था जिससे यह फ़क़ीर बहुत प्रसन्न हुआ। मुहब्बत से भरे हुए शब्द, ख़ुशी और आनंद से भरपूर अर्थ और आश्चर्य चकित करने वाले मआरिफ (अध्यात्म ज्ञान) जो इस गोताखोर (अर्थात आप) ने संसार के समुद्रों से निकाले हैं। उनके द्वारा आप ने इस फ़क़ीर को आनंदित होने के लिए एक संग्रह उपलब्ध करा दिया है।

धर्म महोत्सव का लेख जो आप ने प्रेषित किया है अत्यंत बहुमूल्य और नवीन अनुसंधानों से सुसज्जित है और उसने सुनने वालों के दिलों को अपने वश में कर लिया। अल्लाह करे कि सदा इस प्रकार के मुजाहिदात (संघर्षों) में जो अत्यंत उच्च उद्देश्यों के लिए हैं और जिन में परोक्ष की सहायताएं और विश्वसनीय ईनाम सम्मिलित हैं, अल्लाह तआला की सहायता एवं समर्थन आपके साथ हो और आप सर्वदा सम्मानित रहें। इस फ़क़ीर को अपने शुभ-समाचार का इच्छुक जानते हुए अपनी श्रेष्ठ पुस्तकों एवं लेखों को भेज कर प्रसन्न करते रहें।

4 शवाल 1314 हिज्री क़ुदसिया

लेखक- फ़क़ीर ग़ुलाम फ़रीद अच्चिश्ती अन्निज़ामी

सज्जादा नशीन, चांचड़ा शरीफ़

लेखक ईसाई साहिबों का हार्दिक शुभचिंतक - मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

एक हज़ार रुपए का इनामी विज्ञापन

मैं इस समय एक सुदृढ़ वादे के साथ यह विज्ञापन प्रकाशित करता हूं कि यदि ईसाइयों में से कोई महानुभाव यसू के निशानों को जो उस की ख़ुदाई के तर्क समझे जाते हैं, मेरे निशानों और विलक्षण चमत्कारों से दलील की शक्ति और संख्या की प्रचुरता में बढ़े हुए सिद्ध कर सकें तो मैं उन को एक हज़ार★ रुपया ईनाम के तौर पर दूंगा। मैं सच-सच और क़सम खा कर कहता हूं कि इस में वादा ख़िलाफी नहीं होगी। मैं ऐसे मध्यस्थ के पास रुपया जमा करा सकता हूं जिस पर दोनों पक्षों की सन्तुष्टि हो, इस निर्णय के लिए अन्य लोग मुंसिफ (न्यायकर्ता) ठहराए जाएंगे।

निवेदन शीघ्र आने चाहिएं।

28 जनवरी, 1897 ई०

★नोट: यदि निवेदन करने वाले एक से अधिक हों तो रुपया आपस में बांट सकते हैं। इसी से